Leave of absence to Shri Syed Abdul Hallik

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have to inform Members that I have received the following letter from Shri Syed Abdul Malik:

"I have the honour to inform you that I left for London on a cultural tour on the 19th April, 1981... So I shall not be able to be present in the Parliament up to the 8th May, 1981.

May I request you to please grant me leave of absence in the House from 20th April, 1981 up to 8th May, 1981."

Is it the pleasure of the House that permission be granted to Shri Syed Addul Malik for remaining absent from all the meetings of the House during the current Session?

(2Vo *hon. Member dissented)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Permission to remain absent is granted.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

The communal incidents in and around Bihar Sharif (Bihar) resulting to the death of several persons and injuries to many others.

श्री सत्यपाल मलिक : (उत्तर प्रदेश) मान्यवर, जिस सिलसिले में कालिंग अटेंशन हम ले रहे हैं, इतना भयानक दंगा हिन्दुस्तान में हुआ है ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : : हमने कालिंग अटेंशन ले लिया है आप भाषण नहीं दे सकते हैं, अब कालिंग अटेंशन होने दीजिये ..(**व्यवधान**)

श्री सत्यपाल मलिक : मान्यवर, प्रधान मंत्री जी को यहां मौजूद होना चाहिए ।

श्री उपसभापति : गृह मंत्री जी यहां मौजूद हैं, आप बैठ जाइये ...(**व्यवधान**)

श्री हुक्म देव नारायण यादव (बिहार) : प्रधान मंत्री जी को रहना चाहिए ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Home Minister is concerned with it and Home Minister is there to reply.

श्री सत्यपाल मलिक : प्रधान मंत्री जी का दौरा कैंसिल कराइये ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : अब आप बैठ जाइये ।

You have raised an irrelevant point. Home Minister is there to reply.

श्री सत्यपाल मलिक : प्रधान मंत्री जी का दौरा कैंशिल कराइये ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : जो मंत्री संबंधित हैं वे बैठे हुए हैं ...(**व्यवधान**)

श्री हुक्म देव नारायण यादव : यह इनके काबू का नहीं है ।

श्री उपसभापति : आप बैठ जाइये ।

श्री हुक्म देव नारायण यादव : उनका दौरा कैन्शिल कराइये ...(**व्यवधान**) वे जगन्नाथ मिश्र की बात मानेंगे?

श्री उपसभापति : आप जाइये जगन्नाथ मिश्र जी से बात करिये ...(**व्यवधान**)

Mr. J ha, please.

gSHRI SHIVA CHANDRA JHA (Bihar): Mr. Deputy Chairman, I Ibeg to call the attention of the Minister of (Home Affairs to the communal incidents in and around Bihar Sharif (Bihar) resulting in the death of geveral persons and injuries to many others and the steps taken by Government in this regard.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (GIAN! ZAIL SINGH): Sir,

[Shri Shiva Chandra Jha]

it is with a heavy heart and deep anguish that I rise to make **a** statement about the deplorable incident of communal violence which have taken place in and around Bihar Sharif in Bihar State during the last few days.

According to the information received from the State Government, the communal trouble started around 4.30 P.M. on 30th April, 1981. A drunken brawl between youngmen belonging to the two communities escalated into a serious clcsh in which bombs, crackers and fire-arms were used. Similar incidents of communal violence were reported from, other areas of the town and some adjoining villages. Local Administration took prompt action and rushed police force to control these incidents. Indefinite curfew was imposed at 5.00 A.M. on the 1st May, 1981. The situation in Bihar Sharif town was not allowed to deteriorate but incidents were reported from some rural areas on the 2nd and 3rd May, 1981. According to the reports received from the State Government, 47 precious lives have been lost and 68 persons have been injured in these clashes. 320 persons have so far been arrested. The State Government have decided to impose collective fines in riot affected areas. On our part, the Central Government has provided assistance in the form of Contingents of Border Security Force and Central Reserve Police Force to assist the State Government in controlling the situation. Two helicopters have been placed at the disposal of the State Government in order to facilitate surveillance of riot affected areas. The Prime Minister air-dashed to Bihar Sharif and visited the injured persons in the hopistal and the evacuees in a camp to console them in their distress. She also reviewed the measures taken by the State Government with the Governor, Chief Minister, State Ministers and officials. She impressed upon them the need to take firm action to put down the trouble with utmost expedition and restore confidence amongst the minority community. She also met peoples' representatives and prominent leaders of the two communities and urged them to create conditions conducive to restoration of peace and harmony. The Prime Minister has donated Rs. 5 lakhs from the Prime Minister's Relief Fund for the affected families in addition to relief and succour provided by the State Govern-ment.

The situation is being speedily brought under control by the law and order machinery. I would appeal to all the members of the House to lend their cooperation to the Government in creating favourable conditions for an early restoration of normalcy. I offer nay heartfelt sympathy to those who have suffered in these riots.

श्री शिव चन्द्र झा : उपसभापति जी, पहले मेरी दरख्वास्त है कि आप रनिंग कमेंट्री न करें। जितनी देर आपको समय देंगे, उतना हमको बोलने दें। डिस्टर्बेंस ज्यादा होता है आपकी कमेंट्री से।

श्री उपसभापति : इस पर बोलने वाले बहुत हैं। कृपा करके संक्षेप में कहिए।

श्री शिव चन्द्र झा : कालिंग अटेंशन की परम्परा भी रही है ना। बोलने वाले हैं, तो आप सब को बुला सकते हैं।

आपको जो चीज सैंक्शन करनी होती है, तो सब को बुला लेते हैं... (व्यवधान)

श्री उपसभापति : एक बात मैं आपको बता दूं कि क्योंकि बोलने वाले माननीय सदस्य बहुत से हैं, इसलिए आज लंच नहीं होगा और कालिंग अटेंशन कंटिन्यूड रहेगा।

श्री शिव चंद्र झा : उपसभापति जी, पहली बात तो यह है कि मंत्री महोदय का जो वक्तव्य है, वह बिल्कुल असंतोषजनक है। कैसे? थोड़ी देर के लिए यह जो बताते हैं कि

प्रधान मंत्री जी वहां गई हैं, उन्होंने इसका जिक्र नहीं किया, कहते तो हैं कि 30 तारीख को चार बजे हुआ । प्रधान मंत्री जी किस तारीख को गई हैं, इसका उन्होंने जिक्र नहीं किया और इसके पहले बिहार का मुख्य मंत्री क्या करता था । वह गया कि नहीं गया ? यह इन्होंने नहीं बताया ।

श्री रामानन्द यादव (बिहार) : वे पुलिस भेज रहे थे, सी०आर०पी० को भेजा ।

डा० भाई महावीर (मध्य प्रदेश) : क्या यह साथ साथ जवाब देंगे ?

श्री शिव चन्द्र झा : इनके वक्तव्य में ही है कि जो झगड़ा शुरु हुआ है, वह नशा पीने की दुकान से लेकर हुआ । लेकिन इन्होंने यह नहीं बताया है कि उसके पीछे कोई डिस्प्यूट था कि नहीं था ?

बातें अब बाद में आ रही हैं । यह इन्होंने नहीं बताया । तीसरी बात जो असंतोषजनक है कि बिहारशरीफ में हुआ, लेकिन गांव में कैसे फैला ? यह आप काम क्या करते थे ? वहां पर मालो जस्ते थे कि डांस करते थे, यह क्यों फैला ? मान लीजिए थोड़ी देर के लिए कि बिहारशरीफ में हुआ, तो वहीं पर कांफाइंड रहता, वहीं पर कण्ट्रोल रहता, यह देहातों में क्यों फैला, इसको अफसरों ने क्यों नहीं रोका ?

चौथी जो अस्पष्ट बात है इस वक्तव्य से—जो बातें आ रही हैं, आर्म्स और गंस और यह सब तो बाम्बत निकल रहे हैं, जो बातें हैं, इसका इन्होंने थोड़ा जिक्र किया है, लेकिन क्या इसके पीछे कुछ पूर्व नियोजित, प्लैंड कोई साजिश, कोई एंटी-सोशल एलीमेंट नहीं है जोकि—मैं कहूंगा एन्टाइर सोशल सामाज विरोधी ही नहीं, बल्कि किण्टो जय चंद और मीर जाफर हैं, जो समाज में दंगा करवा करके जो हमारी एकता है, उसको तोड़ना चाहते हैं । आपने साम्प्रदायिक दंगे को रोकने का काम किया है कि नहीं, मैं नहीं जानता । लेकिन मैंने किया है । 1946–47 का जमाना था । पं० जवाहरलाल पटना आए हुए थे, उनका कुर्ता फाड़ दिया गया था बिलेस सीनेट हाल में । जयप्रकाश नारायण ने एक दस्ता बनाया हम लोगों का मुंगेर गये बड़ैया में गये, जमालपुर गये और फौजी व पागलपन दोनों कम्यूनिटी का ऐसा पागलपन था जिसका वर्णन करना मुश्किल है । तो यह फौजी, इस पागलपन को दूर करने के लिए आपके अफसर और आप क्या करते रहे, इसका भी उन्होंने जिक्र नहीं किया । और सबसे बड़ी बात जो अस्पष्ट है प्रधान मंत्री के वक्तव्य में—खराब काम नहीं किया । यह मैं मानता हूं, खराब काम नहीं किया । जाकर के गुफ्तगू की । लेकिन वह काम बहुत जल्दी कर सकती थीं जिस में उन को कुछ खर्चा नहीं होता । जो वक्तव्य दिया उसकी जरूरत नहीं थी । जगन्नाथ मिश्र को बुला कर कहतीं —यू गेट आऊट You step down as you have failed to control the situation. जगन्नाथ मिश्र की सरकार को तुरंत बर्खास्त कर देतीं । उस में कुछ खर्चा नहीं होता । ये जिम्मेदार हैं, उपसभापति महोदय . . . (**व्यवधान**) . . .

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : (बिहार) जमशेदपुर की घटना के वक्त क्यों नहीं हटाया था ?

श्री शिव चन्द्र झा : आप बैठिए, बैठिए मिश्र जी । जरा आरम्भ कीजिए, हवा लगाइए तो यह मुख्य काम है । सरकार वहां की निकम्मी है, उसको अविलम्ब बर्खास्त करना चाहिए । लेकिन वहां जाकर आशीर्वाद दे दिया, पीठ ठोंकी कि जो कुछ करना है करो । बिहार से वापस आकर अपना टिकट ले लिया जेनेवा को, वह जेनेवा का शानदार लेक विजिट करने के लिए चली गई जो कि नहीं करना चाहिए था । तो ये बातें अस्पष्ट हैं . . . (**व्यवधान**) . . . हम लोगों का दिल भर आता है । आपने अपनी बहादुरी जवांमर्दी दिखाई, वहां तो प्लेन सेबोटाज में आपने आफिसर को बर्खास्त कर दिया । लेकिन यहां कितने मजिस्ट्रेट को बर्खास्त किया ?

श्री रामानन्द यादव : पांच छ : ।

श्री शिव चन्द्र झा : पुलिस अफसर क्या कर रहे थे ? तमाशा कर रहे थे ?

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : 10 पुलिस अफसर, 5 मजिस्ट्रेट को बर्खास्त किया गया ... (**व्यवधान**)

SHRI HAREKRUSHNA MALLICK (Orissa): Sir, let the Home Minister alone reply.

श्री मनुभाई पटेल (गुजरात) : क्या ये सभी होम मिनिस्टर बन जाते हैं ? कितने होम मिनिस्टर्स हैं---एक-दो-तीन ?

श्री उपसभापति : बैठिए, आप शांत रहिए ।

श्री शिव चन्द्र झा : उपसभापति महोदय, बहुत दुख की और दर्दनाक बात है । इस के दो पहलू हैं, एक लांग रन और एक शार्ट रन । लांग रन में सांप्रदायिक भावना को तर्क करने की, दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है । मानस को बदलने की जरूरत है । कहलाने के लिए वह सेकूलर हैं और चाहती हैं मातादेवी, वैष्णो देवी, तिरुपति और कहां कहां देख आएं । इस से सांइंटीफिक दृष्टिकोण नहीं आता है । यह जो वैल्यू है चिंतन की इस में परिवर्तन की जरूरत है, जो कि लंबे समय की बात है ।

श्री उपसभापति : यह लंबी बात छोड़िए । लंबी बात मत कीजिए ।

श्री शिव चन्द्र झा : तो यह जहर हमारे दिमाग में हवा भर कर, ट्रेनिंग देकर, शिक्षा देकर, लांग टर्म में जाकर दूर करना है । अभी तो सिर्फ शासन में परिवर्तन की जरूरत है ।

श्री उपसभापति : दूसरा जो शार्ट टर्म है उसको तुरन्त कह कर बात समाप्त कीजिए ।

श्री शिव चन्द्र झा : उपसभापति महोदय, स्पष्ट है कि बिहार सरकार का निकम्मापन वह कहा जाएगा । जब हमारा सवाल आता है । आप छटपटा रहे हैं ।

श्री उपसभापति : समय बहुत ले रहे हैं ।

श्री शिव चन्द्र झा : आप बैठे रहिए मैं खत्म कर रहा हूं ।

श्री उपसभापति : बैठे तो हैं । आप खड़े हैं इसलिए आपको बैठने को सलाह दूंगा ।

श्री शिव चन्द्र झा : तो अखबार में यह बात आई है । ...

श्री उपसभापति : प्रश्न पूछिए, अखबार की बात छोड़ दीजिए ।

श्री शिव चन्द्र झा : देखिए यह दिल्ली का अखबार है, लिखा है :

'It is surprising that the authorities could not have been aware that the situation had developed owing to a dispute concerning a graveyard."

झगड़ा ट्रिगर आफ कैसे हुआ ? विवाद पहले से चला आ रहा था । उसके बाद डिमांस्ट्रेशन के बारे में लिखा है ---

"The Bihar administration is the worst in our country. The administration is weak and lax even in the best of times."

सब अखबार ऐसा कह रहे हैं । अब मेरा सवाल है कि क्या यह बात सही नहीं कि जो दो नौजवानों में नशा को लेकर दूकान पर जो बातें हुई उस के पीछे जमीन को लेकर ग्रेवयार्ड को लेकर बात थी या नहीं ? इस का पता आप ने लगाया कि उसने ही ट्रिगर-अप किया है ? अब दूसरा सवाल है कि जब वह गड़बड़ बिहारशरीफ में हुई तो वह दूर न जाय, गांवों में न फैले उसके लिए अथोरिटीज ने, पुलिस वालों ने क्यों नहीं सतर्कता दिखायी और कौन से कदम उठाये ? आप ने हायर-अप्स से क्यों नहीं पूछा कि गांवों में यह कैसे फैला, तुम क्या कर रहे थे ? आप खुद अपने स्टेटमेंट में कहते हैं कि 30 तारीख को 4 बजे हुआ, तो 3

तारीख को मुख्य मंत्री क्यों नहीं स्पाट पर गया? जब 4 तारीख को प्रधान मंत्री जाती हैं तो 'यस मेडम' 'नो मैडम' करते हुए उनके साथ जाते हैं। तीन दिन तक वह क्यों नहीं गये । जगन्नाथ मिश्र क्या करते रहे ?

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : आप कान खोल कर सुनिये । उन्होंने सारी व्यवस्था की । उन्होंने नहीं किया तो यह कि (व्यवधान) पकड़ा नहीं । (व्यवधान) साफ दिमाग से साफ इरादे से बोलो।

R. SARUP SINGH (Haryana): I will request to all that such questions...' *(Interruptions)*

SHRI SADASHIV BAGAITKAR (Maharashtra): Thii la a serious issue There should be some limit. *(Interruptions)* What is thig nonsense? (*Interruptions)*

SHRI P. RAMAMURTI (Tamil Nadu): Sir, Members of the Opposition might get angry sometimes. But today we are discussing something very tragic in the history of the country. I would request the members of the ruling party not to act in this way. This is not the way. Let them hear. The iHome Minister is there to answer. If some charges are made against the Chief Minister, the Home Minister will take charge of it. To create disturbances is not correct. Unfortunately, this is not the occasion. This is not correct because the people will think that we are using the Parliament for hurling abuses against each other and are not high-lighting something which is very serious. Therefore, I would appeal to all of them to.. *(Interruptions)*

SHRIMATI USHA MALHOTRA (Himachal Pradesh): I just made a request.. *(interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You know it very well that it is all very easy to make appeal*. I appreciate your appeal; yo*» also follow it. But others will make an appeal which they will not follow themselves. So I would request all of you. *(Interruptions)* There will be no difficulty if you restrict yourselves to ask questions. *(Interruptions).*

हर आदमी शिक्षा देने के लिए चतुर है । उसे अपने ऊपर लागू करना बेहतर होगा ।

D

DR. SARUP SINGH; My request to you all is: Please keep this discussion above politics, otherwise you cannot solve the problem of commu-nalism in this country. No politics: I appeal to all of you.

श्री उपसभापति : अब आप सवाल समाप्त करिये कृपा कर के ।

श्री शिव चन्द्र झा : क्या आप ने इसके लिये जुडिशियल इंक्वायरी मुकर्रर की है? यदि नहीं की है तो क्यों नहीं की है? इसके लिये तुरन्त जुडिशियल इंक्वायरी मुकर्रर की जानी चाहिए और मेरा आपसे आग्रह है कि जुडिशियल इंक्वायरी तो वह मुकर्रर करायें लेकिन आप स्वयं पार्लियामेंट मेम्बर्स की एक कमेटी बना कर तुरन्त इसकी इंक्वायरी के लिये भेज दें। संसद के सदस्यों की आप एक कमेटी बनावें और भेजें इस की जांच के लिये कि क्यों इस तरह की लहर वहां गांवों में फैल गयी ।

पांचवा सवाल है मेरा कि कितने मैजिस्ट्रेटस को और पुलिस अफसरों को आप ने सस्पेन्ड किया।

श्री उपसभापति : यह तो आप पूछ चुके हैं। दोहराइये मत।

श्री शिव चन्द्र झा : यदि उनको आप ने सस्पेन्ड नहीं किया तो क्यों नहीं किया ?

[श्री शिव चन्द्र झा]

और छठा सवाल है कि वहां रेलवे वैगन में एक्सप्लोसिव्ज पकड़े गये हैं और सारे अखबारों में यह बात आ गयी है। वह झाझा से दानापुर आये। व्हाट इज दिस। क्या इस सब के पीछे कोई साजिश चल रही है? क्या यह प्रि-प्लान्ड था? क्या आप ने इस का पता लगाया कि उस रेलवे वैगन में जो एक्सप्लोसिव्ज थे वह कहां से और किस ने भेजे और कहां जा रहे थे? आप इस का जवाब दें।

वहां मरने वालों की संख्या सरकार ने बतायी है कि 200 है। लेकिन वहां दो सौ से ज्यादा लोग मरे हैं और 500 से ज्यादा घायल हुए हैं। और क्या यह बात सही नहीं है कि 200 से ज्यादा लोग वहां मरे हैं और पुलिस की गोली से कितने मरे हैं? इस बात को आप ने नहीं बताया। शूट ऐट साइट का जो आर्डर दिया गया था उस के कारण कितने लोग मरे हैं?

इसके बाद प्यूनिटिव टैक्स की बात उन्होंने कही कि वह वहां लगा दिया गया है। यह एक गंभीर बात है। अंग्रेजी जमाने में 1942 की मुझे याद है....

श्री उपसभापति : यह तो रोकने के लिये किया गया है।

श्री शिव चन्द्र झा : 1942 में यह प्युनिटिव टैक्स लगाया गया था। वह सारी याद ताजा है। यह भी एक हथियार है। लेकिन इस में बड़े बड़े मगरमच्छ नहीं पकड़े जाते हैं और जो गांव में छोटे लोग रहते हैं वे ही पकड़े जाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि क्यों लगाया, लेकिन मैं यह कहता हूं कि यह हथियार बूमेरैंग करता है। वह लोग गांवों में जायेंगे और जबरदस्ती पैसा वसूलेंगे और इस से रिसेंटमेंट बढ़ेगा। इस लिये मैं कहना चाहता हूं कि आप इस अख्तियार को जरा सोच समझ कर इस्तेमाल करें। आप उन को गिरफ्तार करिये, जेल में बंद करिये। यह सब बातें ठीक हैं।

तो अब मेरा आखिरी सवाल है कि यह एक्सप्लोसिव वातावरण वहां बना क्या इसके के पीछे कोई प्रि-प्लान्ड साजिश थी? इसके पीछे कौन इलीमेंट हैं इस इस का पता लगा कर आप को सदन को बताना चाहिए। यह लोग ही मीरजाफर और जयचंद हैं और इतिहासकार इन को कभी माफ नहीं करेगा। इतिहासकार इन को हमेशा कंडम करेगा। इन शब्दों के साथ मैं चाहूंगा कि आप मुख्य मंत्री बिहार को बरखास्त करें।

ज्ञानी जैल सिंह : श्रीमन् उपसभापति जी आनरेबिल मेम्बर के जज्बात और उन की फिक्र और चिन्ता के साथ मैं अपनी सहमति प्रकट करता हूं और यह सवाल एक ऐसा सवाल है कि जो ऊंची कौमों के लिये बहुत खतरनाक सूरत अख्तियार कर सकता है। मैं खुद भी इस बात पर परेशान हूं। हमने सब मुख्य मंत्रियों को और यूनियन टेरेटरीज को यह कहा था मुरादाबाद के इंसिडेंट के बाद सी आई डी को इतना मजबूत करें कि कहीं भी कोई बात या किसी बात की भनक मिले तो उसके लिये इंतजाम किया जा सके उसके लिये प्रिवेंटिव मेजर्स लेना निहायत जरूरी है। मैं बड़े दुख के साथ कहता हूं कि यह दुर्घटना बहुत बुरी है और मेम्बरों के संटीमेंट की मैं कद्र करता हूं। मगर मैं यह भी प्रार्थना करूंगा जैसा राममूर्ति जी ने कहा उनका कहना भी ठीक है जो मेम्बर, ज्यादती करें एक दूसरे पर इल्जाम लगाये तो इसके लिये बहुत मौके हैं जब एक दूसरे को कंडम कर सकते हैं। सरकार के खिलाफ

कुछ कहना है तो उनको कहने का हक है मैं सुनने के लिये तैयार हूं। अगर कोई सुझाव देते हैं तो सुझाव के मुताबिक हम काम कर सकते हैं।

दिल के फफोले जल उठे सीने की आग से

इस घर को आग लग गई घर के चिराग से

ऐसी दुर्घटना जहां हमारे भाई एक दूसरे भाई का गला काटने के लिये तैयार हो जाएं तो ताज्जुब की बात है। आनरेबल मेम्बर, मेरे से पूछते हैं कि दो तारीख से लेकर चार तारीख तक क्या करते रहे। मुझे जो इत्तला मिली वह यह है कि वह इसी फिक्र में भागते रहे। अफसरों की मीटिंग बुलाई। कुछ अफसरों को सस्पेंड किया। यह मैं गिनती एक्जेक्ट इसलिये नहीं दे सकता क्योंकि बिहार की सरकार ने एक्जेक्ट गिनती हमें नहीं दी है। जब मेरे पास एक्जेक्ट गिनती आ जाएगी तो मैं उसको देखूंगा। आनरेबल मेम्बर, ने यह भी कहा है कि छोटे-छोटे आदमियों को सजा मिलती है और बड़े बड़े मगरमच्छों को बचा दिया जाता है। इसके लिये भी मैंने अपनी राय उनको दे दी है कि छोटे लोगों को गिरफ्त बड़े लोगों को पकड़ें, जिनका नेगलीजेंस है जिनकी सुस्ती की वजह से है या किसी शरारत की वजह से है जो ऐसा करेंगे क्योंकि वहां बाई-इलेक्शन हो रहा था और बातें भी हो रही होंगी, मगर मैं इसके लिये हाउस को यकीन दिलाना चाहता हूं कि हम किसी का लिहाज नहीं करेंगे और जो असलियत निकलेगी वह सब आपको बता दी जाएगी। आनरेबल मेम्बर, का यह भी ख्याल है कि वहां पर जुडिशियल इंक्वायरी होनी चाहिये। मैं जुडिशियल इंक्वायरी के हक में हूं और मैं उनको राय भी दूंगा। लेकिन मैंने यह भी सोचा है कि ऐसे वाकयात की जुडिशियरी इंक्वायरी होने से कहीं कोई ऐसी बात तो नहीं हो जाएगी कि जो कलप्रिटस हैं वे अपने ढंग से बात करके कहीं बच न जाएं। एक बात तो मैंने उनको कही है कि स्पेशल कोर्ट बने और स्पीडली इन बातों को देखा जाए। मगर हाउस अगर चाहे तो मैं इस बात के लिये तैयार हूं और मैं बिहार की हुकूमत को कहूंगा कि जुडिशियल इंक्वायरी करे और जुडिशियल इंक्वायरी भी हाई कोर्ट के किसी जज या रिटायर जज के मातहत की जाए।

श्री शिव चन्द्र झा: हां, यह कराया जाए।

ज्ञानी जैल सिंह: एक बात मैं जरा साफ कर दूं ताकि गलतफहमी न हो जाए। कल जो मैंने लोकसभा में कहा था कि उस में 42 मरने वालों की संख्या है तो आज जो इत्तला मुझे मिली है वह 45 है।

श्री शिव चन्द्र झा: अखबारों में 49 आया है।

श्री उपसभापति: अखबार को छोड़िए इनकी बात को सुनिये।

ज्ञानी जैल सिंह: 49 की जो बात है उसके लिये मैंने कोशिश की। मैंने कहा कि 49 की अगर बात है तो हम को जल्दी बता दिया जाए। उन्होंने कहा हमारी नजर में पुरानी लाशें आई हैं। वह 45 हैं।

श्री उपसभापति: आपने 47 कहा है।

ज्ञानी जैल सिंह: सुबह उन्होंने कहा था 45 और जब मैं हाउस में आ रहा

[ज्ञानी जैल सिंह]

था तो उस वक्त करेक्शन की । दो आदमियों की लाशें उन्होंने और बताई, इस तरह से 47 हो गई । मैं मान सकता हूं हो सकता है और भी लाशें निकलें लेकिन मैं आनरेबल मेम्बर से कहूंगा कि वह जो कहते हैं कि 200 से ज्यादा है यह बात गलत है । इसमें 5–10 का हेरफेर हो सकता है । मैंने यह भी कहा था कि पकड़ने वालों की गिनती 255 है लेकिन अब वह गिनती 320 हो गई है । यह भी हाउस को बताना था और जो यह पूछा गया है कि सरकार ने क्या-क्या कदम उठाये हैं यह बात भी दुरुस्त है, जरूर पूछनी चाहिए । हाउस की जानकारी के लिए मैं कहूंगा कि स्थिति को काबू करने के लिए केन्द्रीय सरकार ने और हम लोगों ने मुनासिब सहायता पहुंचाई है । बी०एस०एफ० और सी०आर०पी० की टुकड़ीयों को प्रान्तीय सरकार के मांगने पर बिहार शरीफ के लिए भेज दिया गया है । दूसरी बात यह है कि प्रदेश सरकार ने दंगाग्रस्त इलाकों में क्लेक्टिव जुर्माने लगाने का फैसला किया है ।

श्री उपसभापति: वह तो आपने पढ़ दिया है ।

ज्ञानी जैल सिंह: कितना लगाने का फैसला किया है, यह नहीं बताया है... (व्यवधान) । आप मेरी बात तो सुन लीजिये । इसमें 25 हजार से लेकर एक लाख तक की रकम गांव की स्थिति के मुताबिक रखी गई है । दूसरी बातें मैंने अपने स्टेटमेंट में बता दी हैं । दंगाग्रस्त इलाकों में पुलिस की सर्च जारी हैं और एक मकान से पांच क्विंटल एक्स-प्लोसिव मैटिरियल मिला है और 15 बम निकले हैं और हमने प्रदेश सरकार को यह हिदायत कर दी है कि इस मामले में बहुत तेजी से काम किया जाय । आपको मालूम है कि प्रधान मंत्री जी वहां गई । यह बात मैंने अपने स्टेटमेंट में मेंशन कर दी है । आनरेबल मेम्बर ने यह भी पूछा कि क्या पुलिस की गोली से किसी की मौत हुई । पुलिस की गोली से कोई मौत नहीं हुई । यह भी बताया गया कि हमको अपनी पुलिस के और दूसरे सरकारी कर्मचारियों के कार्य करने के ढंग को बदलना चाहिए । चूंकि ऐसे दंगों को रोकने के लिए बहुत अच्छी ट्रेनिंग होनी चाहिए, समझदारी होनी चाहिए, उसके लिए हम उपाय कर रहे हैं । मैं इस बात से इत्फाक करता हूं कि जो पुराना ढंग है उसको बदलना होगा । जहां तक आफिसर्स का ताल्लुक हैं, अभी तक मेरे पास जो इत्तिला है, पांच आफिसर्स और अन्य कुछ लोग हो सकते हैं, कुछ पक्कीकच्ची खबर मिली है कि उसमें एक दो बड़े अफसरों का हाथ मालूम होता है । लेकिन इस बारे में पूरी तरह से जाने बगैर, यकीन हुए बगैर, उनके खिलाफ वहां की सरकार ने बताया है कि हम एक्शन नहीं लेंगे । हम इसकी जानकारी कर रहे हैं । यह भी आनरेबल मेम्बर ने सुझाव दिया है कि इस मामले पर आल पार्टीज को सोचना चाहिए । मैं इस बारे में उनसे इत्फाक करता हूं । हम दुबारा उसको सोचेंगे । पहले भी हमने इसको सोचा था । यह मामला किसी एक पार्टी का नहीं है और न ही हम किसी पार्टी के खिलाफ कोई इल्जाम लगाते हैं । मिसक्रिएन्ट्स जो लोग होते हैं वे हर पार्टी में मिल सकते है । मैं आशा रखता हूं कि इस मामले में हिन्दुस्तान की तमाम छोटी और बड़ी पार्टियां अपनी-अपनी ताकत के मुताबिक सरकार को को-आपरेशन देकर ऐसे वाकयात को रोकने के

लिए और इसका समाधान करने के लिए अपना सहयोग देंगे ।

श्री उपसभापति : श्री भोला प्रसाद।

श्री शिव चन्द्र झा : श्रीमन्, मैंने पूछा था कि आपने जो सी० आर० पी० बिहार में भेजी है क्या इसका मतलब यह नहीं है कि बिहार की मशीनरी जर्जर हो गई है, इनकेपेबल हो गई है? इसका जवाब इन्होंने नहीं दिया है ।

श्री उपसभापति : अब आपकी तरफ से बहुत सवाल हो चुके हैं । उन्होंने आपके प्रश्नों का जवाब दे दिया है ।

श्री शिव चन्द्र झा : इन्होंने मेरे प्रश्नों का जवाब नहीं दिया है... (**व्यवधान**) ।

श्री उपसभापति : अभी सारे मामले की जांच हो रही है। आप बैठ जाइये । किसी और को भी आप बोलने देंगे या नहीं? ...(**व्यवधान**) । अब आप बैठ जाइये । श्री भोला प्रसाद ।

श्री भोला प्रसाद (बिहार) : उपसभापति जी, माननीय मंत्री जी ने बताया है कि बिहार-शरीफ में दंगों की घटनाओं के बारे में और उनको रोकने के लिए क्या-क्या कार्यवाही की जा रही है । मैं जानना चाहता हूं कि जब मुख्य मंत्री जी प्रधान मंत्री के साथ 4 मई को बिहार-शरीफ गए, उसके बाद ही मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारियों को मुअत्तल किया गया इस बिना पर कि उन्होंने दंगे रोकने के प्रति लापरवाही बरती। हम यह जानना चाहते हैं कि लापरवाही बरती गई इसकी रिपोर्ट मुख्य मंत्री और बिहार सरकार के पास कब आई और यह कार्यवाही किस तारीख को की गई ? यह सवाल मैं इसलिये कर रहा हूं क्योंकि ऐसा लगता है कि अगर लापरवाही नहीं बरती गई होती , जैसा कि खुद सरकार के इस कदम से भी मालूम होता है कि वहां पर लापरवाही बरती गई, जिसकी वजह से दंगे बढ़े और दंगे और भी फैले । तो यह लापरवाही बरती गई तो उसको रोकने के लिये राज्य सरकार की ओर से क्या तत्परता दिखाई गई जिससे कि आगे ऐसी लापरवाही न बरती जाय । एक ताड़ी की दुकान पर दो नशेबाजों में गाली-गलौच और मारपीट हुई और उसके बाद ये दंगे तुरन्त फैल गये । इससे लगता है कि दंगा कराने वाले तत्व इसके लिए पहले से ही तैयार थे सब कुछ के लिये और वे इसके लिए कोई बहाना चाहते थे। इसलिय दुकान पर दो आदमियों के बीच जो झगड़ा हुआ उसको लेकर उन्होंने दंगे फैलाने शुरू कर दिये । जब स्थानीय पुलिस के अधिकारियों को इस बारे में पता चला, तो ये दंगे फैले नहीं, यह घटना दंगे का रूप न ले इसके लिये उस वक्त क्या कार्यवाही की गई ? क्या उस वक्त फौरन स्थानीय पुलिस अधिकारियों की ओर से, मजिस्ट्रेट की ओर से कदम उठाये गये ? अगर उठाये गये होते तो फिर इस तरह से जो दंगे फैले तेजी से वे नहीं फैलते । क्या एक भी फायरिंग आसमान में की गई ताकि जो घटना हुई है इसकी वजह से दंगे भड़के नहीं। अगर नहीं की गई तो फिर क्या कार्यवाही की गई? इस बात से ऐसा लगता है कि कुछ अधिकारियों को मुअत्तिल किया गया है ठीक है लेकिन सरकार की ओर से जो लापरवाही बरती गई है, क्योंकि बिहार-शरीफ ऐसे मामले में बहुत नाजुक है । वहां पर इस बारे में पहले से भी रिपोर्ट मिल चुकी थी कि एक वैगन एक्सप्लोसिव का सामान वहां पर बाहर से भेजा गया था । कहां से भेजा गया, मालूम नहीं । लेकिन उपसभापति जी, बिहार-शरीफ के बारे में यह समाचार मिला था कि वहां पर जो कब्रगाह है उस कब्रगाह में एक मूर्ति अलग से रख दी गई जिसकी वजह से वहां पर तनाव की स्थिति पैदा हो गयी है । तो ये सब बात

श्री भोला प्रसाद]

पहले से मालूम थी और सरकार को भी मालूम थी । जब ये बातें पहले से मालूम हो गयी थीं कि कब्रगाह में ऐसी घटना हो गयी है और एक वैगन एक्सप्लोसिव बाहर से भेजा गया है तो क्या सरकार इस इंतजारी में बैठी रही कि जब आगे और आगे भड़केगी तब हम कार्यवाही करेंगे ? क्या सरकार ने अपने आफिसरों को हिदायत दी थी और आफिसर बैठे रहे और यह सोचते रहे कि आग जब भड़क जायेगी तब कुछ करेंगे । उपसभापति महोदय, तो सिर्फ यह कह देने से कि कार्यवाही की गई इससे संतोष नहीं होता है और सही मायने में सरकार ने अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई है । कहा जा रहा है कि एक हाई अफिसर भी इस के लिय जिम्मेदार हैं, दोषी है लेकिन अभी इस बारे में तहकीकात की जा रही है । मैं चाहता हूं कि इसकी तहकीकात की जानी चाहिए कि ऊंचे दर्जे के सरकारी आफिसर किस हद तक इसके लिये जिम्मेवार हैं । अगर वे चाहते हैं कि सही मायनों में कि एक के बाद दूसरे हिस्से में यह आग न भड़के जो साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, जो तनाव पैदा होता है, वह न हो तो इसके लिये उन्हें आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए थी । मैं चाहता हूं कि जो भी व्यक्ति इस के लिये जिम्मेदार है चाहे वह रूलिंग पार्टी का हो और चाहे जो भी हो उसके खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिए और इस के बारे में दृढ़ता के साथ कदम उठाये जाने चाहिए । मैं यह भी जानना चाहता हूं कि कुछ अखबारों में यह भी समाचार आया है कि दंगे फैलाने वालों में कुछ आर० एस० एस० के स्थानीय कार्यकर्ता भी पाए गये, मैं यह जानना चाहता हूं कि यह बात कहां तक सच है ? क्योंकि अखबारों में यह बात आई है । अगर यह बात सही है तो इस के बारे में ऐतिहात के तौर पर सरकार क्या कदम उठाने जा रही है ? उसी तरह से अभी भी जो भी लोग मरे हैं वे ज्यादातर अल्पसंख्यक समुदाय के हैं । इसी तरह से जो घायल हुए हैं वे भी अल्पसंख्यक समुदाय के लोग हैं । अस्पताल में एक मुस्लिम लेडी जिसको स्टेब किया गया उसने खुद मजिस्ट्रेट के सामने कहा कि मेरे 6 दिन के बच्चे को कत्ल कर दिया गया । अस्पताल में उसने मजिस्ट्रेट के सामने यह गवाही दी । डाइंग डिक्लेरेशन में कहा गया कि 6 दिन के पहले के पैदा हुए बच्चे को कत्ल किया गया . . . (**व्यवधान**)

श्री रामानन्द यादव : आपकी बस्ती में, गांव में हुआ है । आपको मालूम . . . (**व्यवधान**)

شری عبدالرحمن شیخ (اُتر پردیش): ڈپٹی چیئرمین صاحب، یادو جی ہر بات کا جواب دیتے ہیں کیا ان کو ہوم ڈیپارٹمینٹ کا چارج دیا گیا ہے -

†**श्री अब्दुल रहमान शेख** (उत्तर प्रदेश): डिप्टी चेयरमैन साहब, यादव जी हर बात का जवाब देते हैं क्या उनको होम डिपार्टमैन्ट का चार्ज दिया गया है । . . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : आप सब का नाम है, आप को भी मौका मिलेगा ।

श्री रामानन्द यादव : मैं इसको इंकार नहीं करता मैं तो स्थान बता रहा था . . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : आपको मौका मिलेगा तो सफाई कर दीजियेगा . . . (**व्यवधान**)

شری سید احمد ہاشمی (اُتر پردیش): رولنگ پارٹی اور اپوزیشن پارٹی دونوں کے لئے یہ شرمناک بات ہے -

†tl] D'evainagri translation.

†[**श्री सैयद अहमद हाशमी** (उत्तर प्रदेश) : रूलिंग पार्टी और अपोजीशन पार्टी और दोनों के लिये यह शर्मनाक बात है ।]

श्री भोला प्रसाद : और मजिस्ट्रेट के सामने उस लेडी ने जो डाइंग डिक्लेयरेशन किया उसने उसमें एक नाम भी बताया है उसने कहा है कि जिस वक्त उसके बच्चे का कत्ल किया गया तो उसने विनती की। एक आदमी जो कोई राजकिशोर था, उसको उसने पहचाना, वह वहां पर मौजूद था । उसकी मौजूदगी में उसने कहा कि मेरे बच्चे को मत मारो । तो जो नाम आया है, राजकिशोर का नाम आया है, उसका आपको पता लगाना चाहिए कि क्या वह आर०एस०एस० का आदमी था, आर०एस०एस० का प्रमुख कार्यकर्ता था ....(व्यवधान) क्योंकि अखबार में इस तरह की बातें आ रही हैं । दूसरा यह कि 'जनशक्ति' का एक संवाददाता जोकि लाशों और घायलों के फोटो ले रहा था अस्पताल में से उसको निकाल दिया गया। वह इसलिए कि दंगों के खिलाफ 'जनशक्ति' ने शुरू से ही ज्यों ही यह बात मालूम हुई बड़ी तत्परता से कदम उठाया । सही बात को जानने के लिए उसको वहां से हटा दिया गया और उसे अस्पताल में फोटो नहीं लेने दिया गया । अंत में मैं जानना चाहता हूं कि जैसे कि अखबारों में आया है अब यह नालंदा में सीमित नहीं है नालंदा का बिहार-शरीफ तो एक ब्लाक है लेकिन जो आस पास के जो लोग हैं, उसको दूसरे गांव में फैला रहे हैं । तो ये दंगे बढ़ें नहीं, राज्य में फैलें नहीं इसके लिए क्या एहतियाती कार्यवाही की जा रही है । एक तो पुलिस की ओर से और किस तरह से ऐसे तमाम लोग जो दंगे को रोकने, शांति और सद्भावना कायम रखने में, कौमी मिल्लत बनाने में सही मायने में काम कर सकते हैं उन लोगों को लेकर वहां भी और आस पास के क्षेत्रों में देखें कि किस तरह से वहां कार्यवाही की जरूरत है जिससे कि यह आगे नहीं हों । इसके लिए सरकार की ओर से क्या कार्यवाही की जा रही है? साथ ही जो सामूहिक जुर्माने की बात कही गयी है तो वह सामूहिक जुर्माना किन पर लगाया जायेगा । क्या उन गांवों में सामूहिक जुर्माना लगाया जायेगा जिनमें दंगे होते हैं निर्दोष लोग मारे जाते हैं वहां पर । लेकिन सामूहिक जुर्माना क्या सभी निरपराध, निर्दोष लोगों पर, जिनका इससे मतलब नहीं है या जो इनको रोकने वाले संगठन में हैं, उन पर भी लगाया जायेगा, या जो समझेंगे कि जो इसके लिए जवाबदेह हैं उन पर लगाया जायेगा? तो यह किस पर लगाया जायेगा, जो जिम्मेवार समझे जायेंगे उन पर या सब पर जो कि इसके खिलाफ भी होंगे? यह बात सरकार को साफ करनी चाहिए ।

ज्ञानी जैल सिंह : सत्कार योग्य उप-सभापति जी, एक बात का मैं झा साहब को जवाब नहीं दे सका, गलती से रह गया, उनका जो कहना था कि यहां जो वैगन आये अम्यूनीशन लेकर या एक्स-प्लोसिव मेटीरियल लेकर जा रहे थे, उसके लिए मैं साफ करना चाहता हूं कि वे इन दंगों के साथ संबंधित नहीं थे, वे वैगन आर्मी के थे और फारवर्ड एरियाज के लिए ले जाये जा रहे थे । इन हमारे आनरेबुल मेम्बर ने जो सवाल किये हैं...

SHRI SADASHIV BAGAITKAR: That wagon was there at the Bihar Sharif station for six months. It was booked for some other station, but somehow that army wagon, as you say, was at the Bihar Sharif station for over six months.

1 PM

t[ ] Devnagari translation.

ज्ञानी जैल सिंह : इनके प्रति और जानकारी करा लूंगा और अब तक जो जानकारी मिली है वह यही है और मैंने आनरेबुल मेम्बर की इस राय को नोट कर लिया है और हम जानकारी करा लेंगे । एक उन्होंने कहा है कि क्या फायरिंग से कोई लोग मारे गये या नहीं । वह मैंने पहले ही बता दिया था कि फायरिंग तो हुई मगर मरा कोई नहीं, वह हवाई फायरिंग थी, डर और खौफ पैदा करने के लिए थी और क्राउड भी नहीं थी, जगह जगह आग लगाने की खबरें थीं और बमों के धमाके हुए थे । इसलिए उन्होंने किया था । गोली से कोई मरा नहीं है और यह कि जो जिम्मेवार साबित होंगे उनके खिलाफ कार्यवाही की जाय, मैं सहमत हूं । जरूर कार्यवाही करेंगे । यह एक जो लेडी के केस में बताया गया कि राजकिशोर जिसका नाम था... (व्यवधान) यह जो अब तक हमको इत्तिला मिली है वह यही है कि यह आर० एस० एस० का था ।

एक माननीय सदस्य : किस गांव में घटना घटी थी ।

ज्ञानी जैल सिंह : यह नालंदा का गांव है, गांव का नाम मुझे याद नहीं है... (व्यवधान)

श्री उपसभापति : वह साफ नहीं हुआ, आप जरा दोहरा दीजिए.. (व्यवधान) कृपया शांत रहिए, शांत रहने से सुनाई देगा ।

ज्ञानी जैल सिंह : जो कुछ मैंने कहा, जो मुझे वहां से जानकारी दी गयी वह मैंने हाऊस के सामने रख दी और जिस जानकारी में बिल्कुल जिंदगी नहीं नजर आती है, बिल्कुल ही बे-बुनियाद है तो भी मैंने आपको बताने की कोशिश की, लेकिन फिर भी जहां मेरा यकीन नहीं बनता है, शक भी नहीं पड़ता, उसको मैं आपके सामने नहीं रखता और आपके सामने जो भी बात रखनी चाहिए वह ठीक ठीक रखनी चाहिए और फिर गलती हो जाये तो कल मेरे सामने जो दोस्त बैठे हैं वे जिस वक्त प्रोसीडिंग पढ़ेंगे तो सोचेंगे कि कहां पकड़ सकते हैं गृह मंत्री को कि नहीं । हमारा लिहाज तो करते हैं लेकिन यहां तक लिहाज नहीं करते कि गलती कर दो फिर भी हमको माफ कर दें । तो इस लिए मेरी जिम्मेदारी है कि मैं सोच कर बात करूं और हुक्मरानों को हमेशा अपनी जबान और अपनी कलम पर काबू रखना चाहिए ।

आपने यह कहा कि यह जो आग फैल रही है गांव में भी चली गई है, उसके लिए आपने ता किया है ? तो बिहार सरकार ने हर गांव की पंचायत की कोआपरेशन लेकर वहां उनकी जिम्मेवारी उनको सौंपी है और वालंटियर्ज तैयार किये हैं जो इस बात की रखवाली करें कि कहीं और दंगा गांव में न फैले और हर गांव में कोशिश की गई है क्योंकि पुलिस तो नहीं होती सब जगह, मगर हरेक पुलिसमैन को जो गांव में जाएगा, एक या दो या तीन उसके पास वायरलैस सेट होगा ताकि वह फटाफट जब भी उसको खबर मिले तो वह सेण्टर को इत्तिला दे सके और दो हैलिकोप्टर भी उनके सुपुर्द किये हैं ताकि वे घूम घूम कर देखते रहें कि कहीं कोई आग लगाने की, लड़ाई-झगड़े की वारदात हो तो तुरन्त वहां सम्हालने के लिए मुकम्मिल कार्यवाही की जाए ।

जुर्माना वे कहते हैं कि उनको भी लगेगा जो इन दंगों को रोकने वाले हैं, या सब को लगेगा, या देखने के बाद लगेगा । लेकिन जहां तक मैं कह सकता हूं जब यह जुर्माने की बातें होती हैं, कलैक्टिव फाइन की, तो उस वक्त सारे गांव पर पड़ता है और गांव वालों

की काफी जिम्मेवारी होती है कि वे दंगा, फिसाद न होने दें ।

इसी तरह से जहां-जहां भी कोई बैठा हुआ है, उनकी जिम्मेवारी का उन को अहसास कराने लिए यह रास्ता हमेशा हम करते आए हैं और यही रास्ता बिहार की सरकार ने अख्तियार किया है और कुछ वाक्यात बयान किये हैं, मेम्बर साहबान ने । यह वाक्यात सही भी हो सकते हैं, इनकी इनफर्मेशन गलत भी हो सकती है । उनका जवाब देने की मैं जरूरत नहीं समझता । लेकिन इन्होंने जो सुझाव दिये हैं, उनको हम गौर से देखेंगे ।

شری عبد الرحمن شیخ : جناب ڈپٹی چیرمین صاحب ، ایسے اہم مسئلہ پر جو کالنگ اٹینشن ہاوس کے سامنے ہے جس کا جواب آنریبل ہوم منسٹر کی طرف سے دیا گیا ہے اس جواب کے بارے میں میں اتنا ہی کہوں گا کہ جو وہاں کے واقعات ہیں اور جو فیکٹس ہیں کیجولٹی اور زخمی ہونے والوں کی ان کی بہت زیادہ تعداد ہے جو دوسرے ذراع سے ہمیں اطلاعات مل رہے ہیں - اس پر میں بعد میں آؤں گا -

میں بنیادی طور پر ایک بات کی طرف ہوم منسٹر اور ہاؤس کی توجہ دلانا چاہتا ہوں آیا کہ فسادات ہوتے کیوں ہیں ، کرتے کون ہیں اور اس کے بعد انجام کیا ہوتا ہے - پہلے تو انگریز کو الزام دیا جاتا تھا - بعد میں انگریز گئے ہوئے اتنا عرصہ ہوا - اس کے بعد بھی فسادات نہیں رکتے اور اکثر اوقات زیادہ تر فسادات ایک دکے واقعات سے ہوسکتے ہیں - کچھ کیسز میں جو پورے منصوبہ سے فسادات ہوئے ہیں ، ان کو چھوڑ کر کے یہ فسادات معمولی واقعات سے ہوسکتے ہیں - اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ اس ملک کے اندر بڑی خوش قسمتی کی بات یہ ہے کہ عام طور پر لوگ فرقہ وارانہ طور پر جذبات سے متاثر نہیں ہوتے - مجھے یقین ہے کہ ۸۲ فیصدی غیر مسلم آبادی یعنی ہندو آبادی جو ہے اس میں دس فیصدی بھی فرقہ پرست لوگ نہیں ہیں اور اقلیت میں بھی چند ایک شرارتی مسکریلنٹ ہیں - لیکن بائی اینڈ لارج مجموعی طور پر اقلیت کے لوگ بھی پر امن طریقہ سے رہنا چاہتے ہیں -

اس کے باوجود بھی یہ مٹھی بھر لوگ جو فساد کرتے ہیں ، جائیداد لوٹتے ہیں ، قتل کرتے ہیں اور عزت لوٹتے ہیں - وہ اس ملک کے لئے کالنگ بن جاتے ہیں اور ایسی صورت میں میں یہ سمجھوں کہ مٹھی بھر لوگوں کو قابو کرنے میں گورنمنٹ کے اندر سکت نہیں ہے ، اہلیت نہیں ہے - کیا گورنمنٹ ان کو قابو کرنے کے قابل نہیں ؟ اور اگر وہ ہے پھر یہ قابو نہیں ہوتے - تو کیا میں گورنمنٹ کی نیت پر شک کرنے میں حق بجانب ہوں کہ گورنمنٹ ان چیزوں کو ختم

[شری عبد الرحمن شیخ]

کرنا نہیں چاہتی - روز تھوڑی سی جو تعداد ہے وہ یہ سب ہنگامے کرے اور ہم تماشائی بنے رہیں - لگاتار اس کے بعد کیا ہوتا ہے کہ ہم یہاں پر گورنمنٹ کے بیان سن لیتے ہیں ؟ اپنی بھڑاس نکال دیتے ہیں - بڑا عالمانہ بیان دیا ہے ہوم منسٹر صاحب نے - میں عزت کرتا ہوں ؟ پرانے فریڈم فائٹر - بڑے پرانے لیڈروں میں سے ہیں - لیکن ان کی تقریر میں آج تک جو کہا گیا وہ کبھی اس پر عمل نہیں ہوا - ماضی میں جو فسادات ہوئے ان کا حشر کیا ہوا - لوگ جو لڑتے ہیں ان کو روکنے میں ایڈمنسٹریٹو مشینری کا رول کیا رہتا ہے وہ دیکھنا ہے - پولیس فورس کا رول اس ملک کے اندر سب سے زیادہ خطرناک ہے اور یہ پولیس فورس اتنی بے قابو ہوتی جا رہی ہے - مجھے ایسا لگتا ہے کہ یا تو اس ملک کی پولیٹیکل اتھارٹی کمزور ہوتی چلی جا رہی ہے اور اگر اس طریقہ سے ہماری ان فورسز کو بے قابو ہونے دیا گیا تو کل اس ملک کا نقشہ کیا ہوگا ؟ پہلے ہی یہ ملک بدنام ہوا ہے - ہم یہاں رولنگ پارٹی کے لوگوں کی لیڈر شپ سے سنتے ہیں کہ اس ملک کی نیک نامی دنیا میں بڑھی ہے - لیکن باہر کے لوگ باہر کی دنیا کے اندر لوگ کہتے ہیں کہ بہت ان سویلائزڈ ملک ہے ان کلچرڈ ملک ہے - جرائم پیشہ لوگوں اور ڈاکوؤں کا ملک ہمارا ملک سمجھا جاتا ہے - جس طرح کے واقعات یہاں ہوتے ہیں - یہاں ہم سب کے لئے شرم کا مقام ہے اس لئے اس میں پولیس کا جو اہم رول ہے اس پر بحث کرنا ضروری ہے دو سو کے قریب میری اطلاع ہے کہ کیزولٹی ہوئیں لیکن پولیس فائرنگ سے ایک بھی نہیں مرا - شوٹ ایٹ سائٹ کا حکم تھا اس کے باوجود بھی وہاں کوئی گولی سے نہیں مرتا اور جو مرتے ہیں ایک طرفہ لڑائی سے لوگ مرتے ہیں - کیا ہم سمجھیں کہ پولیس کی کانی وینس ملی بھگت سے یہ ہو رہا ہے - وہ پولیس جس نے کبھی تو سینکڑوں لوگوں کو اندھا کر دیا کہیں آدی واسی لوگوں کی عزت لوٹی - یہ پولیس ملک کے لئے ایک بدنامی کا ٹیکا ہے - کیا ہوم منسٹر اس اہم مسئلہ کی طرف دھیان دیں گے - جب تک ہم لا اینڈ آرڈر مشینری کو ٹھیک ڈھنگ سے قابو میں نہیں رکھیں گے اس کے ذہن کے اندر سیکولرازم اور اس ملک کی ایکتا اور یکجہتی کا تصور نہیں بیٹھائیں گے تب تک اس پولیس فورس کا کس طریقہ سے سہارا لے سکتے ہیں - آج تک جتنے واقعات ہوئے کمیشن بنے انہوں نے اپنے فیصلے دیئے - اپنی رپورٹیں دے دیں اور ان کو دیکھیں

چاہتی رہیں - ان میں مجرم کو کیا سزائیں دی گئیں ہیں اس کے کیا اعداد و شمار ہیں - بڑے مجھے افسوس کے ساتھ کہنا ہے میں پارٹی زن اسپرٹ میں بات کہنا نہیں چاہتا لیکن جنتا سرکار کے وقت علی گڑھ میں کمیونل رائٹ ہوئے تو جنتا پارٹی میں ہم لوگ ہوتے ہوئے ہم نے اپنی گورنمنٹ کو پوری طرح سے کوسا - ہم نے ہوم منسٹر اور چیف منسٹر کو معاف نہیں کیا اور ہم نے کہا ہم باقی لوگوں کے ساتھ سہمت ہیں اور اگر کانگریس کے لوگ بھی سچ کہتے ہیں تو ہم ان سے سہمت ہیں - علی گڑھ کے فساد پر ایک جوڈیشل کمیشن بنا - جب نئی سرکار آئی تو اس نے کمیشن کو کیوں واپس لیا - آخر کمیشن کو توڑنے کا کیا مقصد تھا - اسی طریقہ سے اور بھی واقعات ہوئے ہیں جس سے فسادیوں کے حوصلہ پست ہونے کی بجائے بڑھتے ہی جا رہے ہیں اور اگر اس بار ہم نے فوری توجہ نہیں دی تو اس ملک میں کیا گل کھلیں گے اس بارے میں کوئی کچھ نہیں کہہ سکتا - مجھے اس بارے میں کہنا ہے کہ آخر جو افسر قصوروار پائے گئے ان کو کیا سزائیں دی گئیں - آج تک کے فرقہ وارانہ فسادات ہیں

ہم اس کو فرقہ پرستی کہیں گے - ہم ملک کو بدنامی سے بچانے کے لئے سمجھاؤ دیں گے - ایک دوسرے پر الزام لگانے کے بجائے حقیقت پسندگی سے کام کریں اس غرض سے گورنمنٹ کو ڈبل اسٹینڈرڈ نہیں اپنانا چاہئے - اگر نارائن پور میں مہیلاؤں پر زبردستی ہوتی ہے - وہ ہوئی یا نہیں لیکن وہ مہیلائیں بعد میں نہیں مل رہی تھیں - جن کو اندرا گاندھی کے سامنے پیش کیا گیا - وہ سچ تھا یا جھوٹ تھا - اگر ہماری پرائم منسٹر صاحبہ وہاں گئی تو کسی کو کیا اعتراض ہو سکتا ہے - انہوں نے ان کی باتوں کو سنا اور اس کو لے کر بڑی بھاری داستان کھڑی گئی - اس کو لے کر بنارسی داس کیبنیٹ کو برخواست کر دیا گیا - برا ہو بھلا ہوا - لیکن اس کے بعد جتنے واقعات یو - پی - اور بہار میں ہوئے اور جو مراد آباد میں واقعہ ہوا یہاں کی پولیس نے قتل عام کیا - اس کے بعد الہ باد کے اندر ، علی گڑھ کے اندر اور دوسرے مقامات پر جو واقعات ہوئے جس میں سول ایڈمنسٹریشن نے ایک فریق بن کر کام کیا اس کے لئے کیا وشوناتھ پرتاپ سنگھ کو مستعفی ہونے کے لئے یا ڈسمس کرنے کے لئے گورنمنٹ نے کبھی نہیں سوچا - آج بہار میں جس طرح سے قتل عام ہو رہا ہے یا جو واقعات بھاگلپور ضلع میں ہوئے یا دوسرے واقعات ہوئے ، آدمی واسیوں کے ساتھ جو کچھ ہوا - کیا ان سارے معاملات پر مشرا وزارت کو ڈسمس

[شری عبد الرحمن شیخ]

نہیں کیا جا سکتا تھا ایک بار آپ نے کسی چیف منسٹر کے لئے جو نکما ثابت ہوا ہے ۔ لا اینڈ آرڈر میں لوگوں کی جان اور مال کی حفاظت کرنے میں نا کامیاب ہوا ہے اس کو آپ نے ڈسمس کیا ؟ تو یہ معیار سب کے لئے ہونا چاہئے چاہے کسی کی کوئی پارٹی ہو یا مذہب ہو - لیکن جب ہم ڈبل اسٹینڈرڈ رکھتے ہیں تو اس کے نتائج بہت خراب ہوتے ہیں اور جو لوگ مارے جاتے ہیں ان کو کوئی نہیں پوچھتا سارا معاملہ ہضم ہو جاتا ہے - اس لئے جب تک اس بنیادی کارنوں کو نہیں ڈھونڈیں گے ۔ اس کا علاج نہیں ڈھونڈیں گے اور ہم نے پولیس فورس بھیج دیا تو اس سے اچھا ہونے والا نہیں ہے - حالت کہاں قابو میں ہے - کل رات پونے نو بجے کی خبر میں کہا گیا کہ اب حالت ٹینس ہے لیکن قابو سے باہر نہیں ہے اور بعد میں کہا گیا کہ تین لاشیں ملیں ہیں - حالت قابو میں ہے اور کہا جا رہا ہے لاشیں مل رہی ہیں - اس لئے میرا آپ سے یہ کہنا ہے کہ اگر ہم ایمانداری سے ان چیزوں کو ختم کرنا چاہتے ہیں تو اپنے پچھلے وعدوں کو ہم یاد کریں - آپ نے اسی ہاؤس میں اعلان کیا تھا کہ ایک ایلیٹی رائٹ فورس بنے - اس ایلیٹی رائٹ فورس میں ہینڈولڈ کاسٹ ، شیڈولڈ ٹرائب اور مائنوریٹیز کی واضح طور پر نمائندگی ہوگی ریزرویشن نہیں ہوگا تو بھی ان کا ریپریزینٹیشن معقول طور پر ہوگا ۔ کیا بنا اس ایلیٹی رائٹ فورس کا - کتنا عرصہ لگے گا کتنے لوگ اور قتل ہوں گے جب وہ ایلیٹی رائٹ فورس بنے گی ؟ آج اس ملک کے اندر صرف مائنوریٹی کا سوال ہی نہیں ہے آپ اخبار اٹھا کر دیکھئے کہاں کیا ہو رہا ہے - ابھی ایٹہ ضلع کے اندر ۲۲ ہریجنوں کو ڈاکوؤں نے ختم کر دیا - میں سمجھتا ہوں کہ صرف مائنوریٹیز ہی وکٹمائز نہیں ہو رہی ہیں — وہ تو ہیں ہی تیس سال میں جو ان کا حشر ہوا وہ سامنے ہے - باقی ویکر سیکشن کا حال بہتر نہیں ہے - یہ ذمہ داری ہوم ڈیپارٹمینٹ کی ہے ۔ ہوم منسٹر کی ہے کہ ویکر سیکشنس میں اعتماد بحال کریں ان کی سیکورٹی ہو وہ با عزت شہری کی طرح زندگی بسر کر سکیں - اس لئے میں آپ سے گزارش کروں گا کہ اس قسم کے واقعات کو سیاست سے بالاتر رکھ کر دیکھیں - اسی طرح فورس کے بارے میں ایک آدھ بات اور کہنی ہے - یہ فورس جو کبھی فسادات کو روکنے کا ایک انسٹرومینٹ ہوا کرتی تھی آج فساد بڑھانے کے لئے اندھا کرنے کے لئے ۔ ہریجنوں پر اتیاچار کرنے کے لئے ۔ ایلیٹی ڈکوئیٹی کے نام سے ڈاکوؤں اور کچھ شریف

آدمیوں کو گولی سے اڑانے کے لئے استعمال ہو رہی ہے - اس پولیس کی جب تک اسکریننگ نہیں ہوگی - اس میں کیا فرقہ پرست ایلیمینٹ ہیں کیا اس کے اندر سبوتیرس ہیں - اور ایگزیکٹیو اتھارٹی کا ذہن صاف نہیں کریں گے - ایسے لوگوں کو سروسز میں ترجیح نہیں دیں گے؟ سروسز کے اندر جو سیکولر خیالات کے لوگ ہوں تو اس ملک کا یہی حال ہوتا رہے گا - میں آپ سے کچھ سوال پوچھنا چاہوں گا - میں زیادہ لمبا نہیں کروں گا - اسپیسیفک کوئشچن میرے ہوں گے - یہ گاندھی کا دیش ہے - اس دیش کے اندر ہر مذہب اور ہر فرقہ کے لوگوں کو معقول طریقہ سے با عزت زندگی بسر کرنے کا حق ہے - لیکن میں اپنے ساتھیوں سے اتفاق کرتا ہوں کہ آج اس ملک میں ہریجن بیس بیس قتل ہو رہے ہیں - مسلمان سو سو قتل ہو رہے ہیں - جہاں یہ حالت ہے کیا یہ درست نہیں تھا کہ پردھان منتری جی اپنے دورے کو منسوخ کرتیں - کیا ورلڈ ہیلتھ اسمبلی کو ایڈریس کرنا ضروری تھا جس کو ایک بار راج نرائن ایڈریس کر آئے تھے - آپ کے ہیلتھ منسٹر راج نرائن جی کے جگہ پر نہیں جا سکتے تھے - اگر کسی دوسرے ملک میں اتنا بڑا بھیانک واقعہ ہوتا تو سربراہ ملک اپنے دورے کو

کینسل کر کے واپس آ جاتا - لیکن اس ملک کا سربراہ ایک مدد بھاشن دے کر دوسرے ملکوں کی سیر کو چلا جاتا ہے "مداخلت" ورلڈ ہیلتھ آرگنائزیشن کی اسمبلی کو ایڈریس کرنے سے یہاں کے کمیونل رائٹس کو اہمیت دینی بہت ضروری تھی - یہ بات میں احساس کروانا چاہتا ہوں "مداخلت" میں پہلا سوال یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ آپ اس کو پولیٹیکلائز مت کیجئے - جب چرن سنگھ ہوم منسٹر تھے تو ہم نے اس وقت بھی ایسے واقعات کی مخالفت کی تھی - وہ ہمارے لیڈر آج بھی ہیں - اس وقت آپ کی بینچوز کے کچھ لوگوں نے ملک و ملت بچاو تحریک چلائی تھی اُن کو کلنگ کہا میں ان سے کہنا چاہتا ہوں کہ آج آپ کی غیرت کو کیا ہوا - آج ملک بچانے کا نعرہ کیوں نہیں لگا رہے ہیں - ہم کو پارٹیزنس اسپرٹ سے اوپر اٹھنا چاہئے - میں سوال پوچھنا چاہتا ہوں کہ اینٹی رائٹ فورس کا جو آپ نے وعدہ کیا ہے وہ کتنے سالوں میں بن جائے گی - دس سال لینگے یا کتنے تلون کا انتظار ہو گا ؟ کوئی ٹائم باونڈ پروگرام ہے - آپ نے جوڈیشیل کمیشن بنایا ہے الہ آباد میں جوڈیشیل کمیشن بنانے کے بعد وہاں کے ایگزیکیٹو مجسٹریٹ اور پولیس سپرنٹنڈینٹ وہیں پر موجود ہیں - وہاں کی واہمے کو حراس کرنے کے لگے کیا یہ

[شری عبد الرحمن شیخ]

ضروری نہیں تھا کہ کمیشن بٹھانے سے پہلے ان ذمہ دار افسروں کو معطل کرکے جوڈیشیل انکوائری کرائی جاتی - ان کو وہاں موجود رکھتے ہوئے جوڈیشیل انکوائری کرانا کوئی فیس سیونگ نہیں ہے - اس کا جواب آنا چاہئے - ایک اہم سوال میں پوچھنا چاہتا ہوں اس ملک کے اخبارات اور اس ملک کا گورنمنٹ کنٹرول ماس میڈیا ریڈیو اس معاملے میں سب سے زیادہ بلنڈرنگ کر رہے ہیں - پچھلے بار فسادات کے بارے میں اخباروں نے خبریں دیں اور مانئیہ ہوم منسٹر صاحب نے اس ہاؤس میں کہا کہ اس میں غیر ملکی ہاتھ ہونے کا شبہ ہے - غیر ملکی ہاتھ کہہ کر آپ کس کو بدنام کرنا چاہتے ہیں - ہر کامن مین والا مسلم سوچتا ہے کہ یہ اقلیت والے جو ہیں ان کی دوسرے ملک سے سانٹھ گانٹھ ہو سکتی ہے - اکثریت کا تو سوال نہیں ہے - اس طرح کیا آپ اقلیت کے خلاف اور جوش نہیں بڑھاتے - غیر ملکی ہاتھ ہے تو اس کو آپ کو ایکسپوز کرنا چاہئے تھا - کون ملک ہے جو ہمارے معاملے میں انٹرفیر کرتا ہے اس لئے جو غیر ملکی ہونے کا شوشہ - پاکستان سے ہتھیار آرہے ہیں اس کا شوشہ - یا امرتسر سے ریوالور آرہے ہیں اس کا شوشہ ہے اس کو آپ کو اب ختم کرنا چاہئے - امرتسر سے ریوالور ملنے کی بات کو اخبارات نے بہت زیادہ اٹھایا تھا لیکن بعد میں ثابت ہوا کہ وہ لوگ اسمگلر تھا جو روزانہ اس طرح کی ٹریڈ کرتے تھے - اس کے بعد لکھنؤ میں پٹاخے ملے جن کو اخبارات نے بتایا کہ وہاں پانچ ہزار بم پکڑے گئے - اسی طرح سے بجنور اور امروہہ کے بارے میں اعلان کیا گیا کہ وہاں کرفیو ہے لیکن جب میں وہاں گیا تو پتہ چلا کہ وہاں کرفیو تھا ہی نہیں - تو کیا جو آپ کا ماس میڈیا ہے - ریڈیو ہے اس کو آپ ایسی حرکتوں سے روکینگے اور جو اس میں ایسے غیر ذمہ دار لوگ ہیں ان کے خلاف آپ نے کون سی قانونی کارروائی کی ہے یہ میں جاننا چاہتا ہوں - کیوں کہ ایسی خبروں کی وجہ سے ہی کئی بار دنگے فساد بڑھ جاتے ہیں - آخری بات میں کہنا چاہتا ہوں کہ لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کے لئے جتنے بھی فورسیز ہیں اس میں آپ اسکریننگ کرکے اقلیتوں اور ویکر سیکشنس کو ریپریزینٹیشن دینے کی بات کب پوری کر رہے ہیں اور آپ کا جو ایک اینٹی رائٹ فورس کا جو وعدہ ہے اس کو آپ کو فوری طور پر پورا کرنا چاہئے اور آپ موجودہ فساد کے بارے میں جوڈیشل انکوائری کرائیں اور جو لوگ اس کے ذمہ دار پائے جائیں ان کو آپ قرار واقعی سزا دیں -

خواہ وہ کسی بھی پارٹی سے تعلق رکھتے ہوں یا ایڈمنسٹریشن میں ہوں - بھی میرے چند سوالات ہیں - جن کا میں آپ سے جواب چاہتا ہوں -

†[**श्री अब्दुल रहमान शेख** : जनाब डिप्टी चेयरमैन साहब--ऐसे अहम मसले पर जो कालिंग अटेन्शन हाउस के सामने है जिसका जवाब ओनरेबल होम मिनिस्टर की तरफ से दिया गया है । उस जवाब के बारे में मैं इतना ही कहूंगा कि जो वहां के वाकयात हैं और जो फिगरस (figures) हैं कैजुएलिटी और जख्मी होने वालों की उनकी बहुत ज्यादा तादाद है जो दूसरे जराय से हमें इत्तलाआत मिल रही है उस पर मैं बाद में आऊंगा ।

मैं बुनियादी तौर पर एक बात की तरफ होम मिनिस्टर और हाउस की तवज्जोह दिलाना चाहता हूं आया कि फसादात होते क्यों हैं, करते कौन हैं और इसके बाद अंजाम क्या होता है । पहले तो अंग्रेज को इलजाम दिया जाता था । बाद में अंग्रेज गये हुए इतना अर्सा हुआ उसके बाद भी फसादात नहीं रुकते और अक्सर औकात ज्यादातर फसादात इक्के दुक्के वाकियात से भड़कते हैं कुछ केसिज में जो पूरे मंसूबे से फसादात हुए हैं उनको छोड़कर ये फसादात मामूली वाकयात से बढ़ते हैं । अब सवाल पैदा होता है कि इस मुतक के अंदर बड़ी खुशकिस्मती की बात है कि आम तौर पर लोग फिरकेवाराना तौर पर जजबात से मुतासिर नहीं होते । मुझे यकीन है कि 82 फीसदी गैरमुसलिम आबादी यानी हिन्द आबादी जो है उसमें दस फीसदी भी फिरकेपरस्त लोग नहीं हैं और अकलियत में भी चंद एक शरारती मिसक्रियंट हैं लेकिन बाई एंड लार्ज मजमूई तौर पर अकलियत के लोग भी पुरअम्न तरीके से रहना चाहते हैं ।

इसके बावजूद भी ये मुट्ठी भर लोग जो फसादात करते हैं, जायदाद लूटते हैं और कत्ल करते हैं और इज्जत लूटते हैं वे इस मुतक के लिए कलंक बन जाते हैं और ऐसी सूरत में यह समझूं कि मुट्ठी भर लोगों को काबू करने में गवर्नमेंट के अंदर सक्त नहीं है । अहलियत नहीं है क्या गवर्नमेंट उनको काबू करने के काबिल नहीं है ? और अगर है तो यह काबू नहीं होते । तो क्या मैं गवर्नमेंट की नीयत पर शक करने में एक वजानिब हूं कि गवर्नमेंट इन चीजों को खत्म करना नहीं चाहती वरना थोड़ी सी जो तादाद है वो यह सब हंगामे करें और हम लगातार तमाशाई बने रहें, उसके बाद क्या होता है कि हम यहां पर गवर्नमेंट के बयान सुन लेते हैं । अपनी भड़ास निकाल लेते हैं। बड़ा आलिमाना भाषण दिया है होम मिनिस्टर साहब ने । मैं इज्जत करता हूं पुराने फ्रीडम फाइटर बड़े पुराने लीडरों में से हैं लेकिन उनकी तकरीर में आज तक जो कहा गया कभी उस पर अमल नहीं हुआ । माजी में जो फसादात हुए उनका हश्र क्या हुआ ? लोग जो लड़ते हैं उनको रोकने में एडमिनिस्ट्रेटिव मशीनरी का रोल क्या होता है वह देखना है । पुलिस फोर्स का रोल इस मुल्क के अंदर सबसे ज्यादा खतरनाक है और वो पुलिस फोर्स इतनी बेकाबू होती जा रही है । मुझे ऐसा लगता है या तो इस मुल्क की पोलिटिकल अथोरिटी कमजोर होती जा रही है और अगर इस तरीके से हमारी इन फोरसिस को बेकाबू होने दिया गया तो कल इस

t[ ] Devnagari translation.

[श्री अब्दुल रहमान शेख]

मुल्क का नक्शा क्या होगा ? पहले पहले भी यह मुल्क बदनाम हुआ है । हम यहां रूलिंग पार्टी के लोगों को लीडरशिप को सुनते हैं कि इस मुल्क की नेकनामी दुनिया में है लेकिन बाहर के लोग बाहर की दुनिया के अंदर के लोग कहते हैं कि बहुत इनसिविलाइज्ड (incivilised) मुल्क है, अनकलचरड मुल्क है जराएम पेशा लोगों का और डाकुओं का मुल्क हमारा मुल्क समझा जाता है । जिस तरह के वाकयात यहां होते हैं हम सब के लिए शर्म का मकाम है । इसलिए इसमें पुलिस का जो अहम रोल है उस पर बहस करना जरूरी है । दो सौ के करीब मेरी इतला है कि कैजुलिटी हुई लेकिन पुलिस फाइरिंग से एक भी नहीं मरा । शूट एट साइट का हुक्म था इसके बावजूद भी वहां कोई गोली से नहीं मरता और जो मरते हैं इकतरफा लड़ाई से लोग मरते हैं । क्या हम समझें कि पुलिस को कन्इवैंस मिली-भगत से यह हो रहा है । यह पुलिस जिसने कहीं तो सैंकड़ों लोगों को अंधा कर दिया, कहीं आदिवासी लोगों की इज्जत लूटी, वह पुलिस मुल्क के लिए एक बदनामी का टीका है । क्या होम मिनिस्टर इस अहम मसले की तरफ ध्यान देंगे, जब तक हम ला एंड आर्डर मशीनरी को ठीक ढंग से काबू में नहीं रखेंगे उसके जहन के अंदर सैक्युलरइज्म और इस मुल्क की एकता और यकजहती का तसव्वुर नहीं बिठायेंगे तब तक इस पुलिस फोर्स का किस तरीके से सहारा ले सकते हैं । आज तक जितने वाकयात हुए, कमीशन बने उन्होंने अपनी फाइडिंग्स दे दी फैसले दिये, अपनी रिपोर्ट दे दीं और उनकी दीमकें चाटती रहीं । उनमें मुजरिम को क्या सजाएं दी गई हैं इसके क्या ऐदादो शुमार हैं । बल्कि मुझे अफसोस के साथ कहना है मैं पार्टीजन स्प्रिट में बात कहना नहीं चाहता लेकिन जनता सरकार के वक्त अलीगढ़ में कम्युनल राइट हुए तो जनता पार्टी में हम लोग होते हुए हमने अपनी गवर्नमेंट को पूरी तरह से कोसा । हमने होम मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर को माफ नहीं किया और हमने कहा कि हम बाकी लोगों के साथ सहमत हैं अगर कांग्रेस के लोग भी सच कहते हैं तो हम उनसे सहमत हैं । अलीगढ़ के फसाद पर एक ज्यूडिशियल कमीशन बना जब नई सरकार आई तो उसने कमीशन क्यों वापस लिया । आखिर कमीशन को विदड्रा करने तोड़ने का क्या मकसद था । इसी तरीके से और भी वाकयात हुए हैं जिनसे फसादियों के हौसले पस्त होने के बजाय बढ़ते जा रहे हैं और इस बार हमने फौरन तवज्जोह नहीं दी तो इस मुल्क में गुल खिलेगा इस बारे में कोई कुछ नहीं कर सकता । मुझे इस बारे में कहना है कि आखिर जो अफसर गिल्टी कसूरवार पाये गये उनको क्या सजायें दी गईं । आज तक के फिरके-वाराना फसाद में ।

हम इसको फिरका-परस्ती कहेंगे । हम मुल्क को बदनामी से बचाने के लिए सुझाव देंगे । एक दूसरे पर इल्जाम लगाने के बजाय हकीकत पसन्दगी से काम करें इस गर्ज से गवर्नमेंट को डबल स्टैन्डर्ड नहीं अपनाना चाहिये । अगर नारायणपुर में महिलाओं पर ज्यादती होती है । वे हुई या नहीं लेकिन वो महिलायें बाद में नहीं मिल रहीं थीं । जिनको इंदिरा गांधी के सामने पेश किया गया वह सच था या झूठ था । अगर हमारी प्राइम मिनिस्टर साहिबा वहां गईं तो किसी को क्या इतराज हो सकता है उन्होंने उनकी बातों को सुना और उसको लेकर बड़ी भारी दास्तान गढ़ी गई । उसको लेकर बनारसी दास

कैबिनट को बरखास्त कर दिया गया । बड़ा हो हल्ला हुआ । लेकिन इसके बाद जितने वाकयात यू०पी० (U.P.) और बिहार में और जो मुरादाबाद में वाकयात हुआ यहां की पुलिस ने कत्लेआम किया । उसके बाद इलाहाबाद के अंदर, अलीगढ़ के अन्दर और दूसरे मकामात पर जो वाकयात हुए जिसमें सिविल एडमिनिस्ट्रेशन ने इसमें एक फरीक बन कर काम किया इसके लिए क्या विश्वनाथ प्रताप सिंह को मुसतफी होने के लिए या डिसमिस करने के लिए गवर्नमेंट ने कभी नहीं सोचा । आज बिहार में जिस तरह से कत्लेआम हो रहा या जो वाकयात भागलपुर जिले में हुए या दूसरे वाकयात हुए आदिवासियों के साथ जो कुछ हुआ क्या इन सारे मामले पर मिश्रा विजारत को डिसमिस नहीं किया जा सकता था । एक बार आपने किसी चीफ मिनिस्टर के लिए जो निकम्मा साबित हुआ है ला एंड आर्डर में लोगों की जान और माल की हिफाजत करने में नाकामयाब हुआ है उसको आपने डिसमिस किया । तो यह मयार सब के लिए होना चाहिए चाहे किसी की कोई पार्टी हो या मजहब हो । लेकिन जब हम डबल स्टैन्डर्ड रखते हैं तो उसके नतायज बहुत खराब होते हैं और जो लोग मारे जाते हैं उनको कोई नहीं पूछता सारा मसला हशर हो जाता है इसलिए जब तक इन बुनियादी कारणों को नहीं ढूंढेंगे इसकी रेमेडी इलाज नहीं ढूंढेंगे और हमने पुलिस फोर्स भेज दिया तो उससे कुछ होने वाला नहीं है । हालत कहां काबू में हैं । कल रात पौने नौ बजे की खबर में कहा गया कि अब हालत टैन्स थे लेकिन काबू से बाहर नहीं हैं लेकिन बाद में कहा गया कि तीन लाशें मिली हैं । हालत काबू में है और कहा जा रहा है कि लाशें मिल रही हैं । इसलिए मेरा आपसे यह कहना है कि अगर हम ईमानदारी से इन चीजों को खत्म करना चाहते हैं तो अपनी पिछले वादों को याद करें । अपने इसी हाउस में एलान किया था कि एक एन्टी रायट फोर्स बने उस एन्टी रायट फोर्स में सिड्यूल्ड कास्ट, सिड्यूल्ड ट्राइब्स और माइनोरिटीज की वाजी तौर पर नुमाइंदगी होगी रिजर्वेशन नहीं होगा तो भी उनका रिप्रजन्टेशन माकूल तौर पर होगा । क्या बना इस एन्टी रायट फोर्स का । कितना अर्सा लगेगा, कितने लोग और कहां होंगे जब वह एन्टी रायट फोर्स बनेगी । आज इस मुल्क के अंदर सिर्फ माइनोरिटी का सवाल ही नहीं है, आप अखबार उठाकर देखिये कहां क्या हो रहा है । अभी एटा जिले के अंदर 22 हरिजनों को डाकुओं ने खत्म कर दिया । मैं समझता हूं कि सिर्फ माइनोरिटीज ही विक्टीमाइज नहीं हो रही हैं—वो तो हैं ही 30 साल में जो उनका हश्र हुआ वह सामने है । बाकी वीकर सैक्शन का हाल भी उनसे बेहतर नहीं है । ये जिम्मेदारी होम डिपार्टमेंट की है, होम मिनिस्टर की है वकिर सैक्शन में एतमाद बहाल करें, उनकी सिक्योरिटी हो, वो बाइज्जत शहरी की तरह जिंदगी बसर कर सकें । इसलिए मैं आपसे गुजारिश करूंगा कि इस किस्म के वाकयात को सियासत से बालातर रखकर देखें । इसी तरह फोर्सेस के बारे में एक बात और कहनी है । यह फोर्स जो कभी फसादात को रोकने का एक इन्स्ट्रूमैंट हुआ करती थी आज फसाद बढ़ाने के लिए, अंधा करने के लिए, हरिजनों पर अत्याचार करने के लिए, एन्टी डकायटी मुहिम के नाम से डाकुओं और कुछ शरीफ आदमियों को गोली से उड़ाने के लिए इस्तेमाल हो रही है । इस पुलिस की जब तक स्क्रीनिंग नहीं होगी इसमें क्या फिरक्का परस्त एलीमेंट हैं क्या उसके अंदर सबोटियस हैं और

[श्री अब्दल रहमान शेख]

एग्जीक्यूटिव एथोरिटी का जहन साफ नहीं करेंगे, ऐसे लोगों को सर्विसेज में तरजी नहीं देंगे, सर्विसेज के अंदर जो सैक्यूलर ख्यालात के लोग होंगे तो इस मुल्क का यही हाल होता रहेगा । मैं आपसे कुछ सवाल पूछना चाहूंगा मैं ज्यादा लम्बा नहीं करूंगा । स्पैसफिक क्वेश्चन मेरे होंगे । यह गांधी का देश है, इस देश के अंदर हर मजहब और हर फिरका के लोगों को माकूल तरीके से बाइज्जत जिंदगी बसर करने का हक है लेकिन मैं अपने साथियों से इत्तफाक करता हूं कि आज इस मुल्क में हरिजन बीस बीस कत्ल हो रहे हैं, मुसलमान सौ सौ कत्ल हो रहे हैं, जहां यह हालत है । क्या यह दुरुस्त नहीं था कि प्रधान मंत्री जी अपने दौरे को मनसूख करतीं । क्या वर्ड हैल्थ एसेम्बली को एडरस करना जरूरी था जिसको एक बार राजनारायण जी एडरस कर आये थे । आपके हैल्थ मिनिस्टर राजनारायण जी की जगह पर नहीं जा सकते थे । अगर किसी दूसरे मुल्क में इतना बड़ा भयानक वाकया होता तो सरबराह मुल्क अपने दौरे को कैन्सल करके वापस आ जाता लेकिन इस मुल्क का सरबराह एक अदग भाषण देकर दूसरे मुल्कों की सैर को चला जाता है (**अन्तर्बाधा**) वर्ड हैल्थ आरगेनाइजेशन की एसैम्बली को एडरस करने से यहां के कम्युनल रायट्स को अहमियत देनी बहुत जरूरी थी । यह बात मैं अहसास करवाना चाहता हूं (**अन्तर्बाधा**) मैं पहला सवाल यह पूछना चाहता हूं कि आप इसको पोलिटिकलाइज मत कहिये । जब चरण सिंह होम मिनिस्टर थे तो हमने उस वक्त भी ऐसे वाकयात की मुखालफत की थी । वो हमारे लीडर आज भी हैं उस वक्त आपकी बैंचिज के कुछ लोगों ने मुल्कोमिल्लत बचाव तहरीक चलाई थी उनको कंडम किया, मैं उनसे कहना चाहता हूं कि आज आपकी गैरत को क्या हुआ, आज मुल्कोमिल्लत बचाने का नारा क्यों नहीं लगा रहे हैं, हमको पार्टी स्प्रिटज्म से ऊपर उठना चाहिए । मैं सवाल पूछना चाहता हूं कि एन्टी रायट फोर्स का जो वायदा किया है वो कितने सालों में बन जायेगी, दस साल लेंगे या कितने सालों का इंतजार होगा, कोई टाइम बांड प्रोग्राम है । आपने जूडिसियल कमीशन बनाया है, इलाहाबाद में जूडिसियल कमीशन बनाने के बाद वहां से एक्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट और पुलिस सुपरिन्टेंडैंट वहीं पर मौजूद हैं । वहां की अकलीयत को ह्रास करने के लिए क्या यह जरूरी नहीं था कि कमीशन बनने से पहले इन जिम्मेदार अफसरों को मुअत्तल करके जुडीसियल इन्क्वायरी कराई जाती । उनको वहां मौजूद रखते हुए जुडीसियल इन्कवारी कराना क्या फेस सेविंग नहीं है । इसका जवाब आना चाहिये । एक अहम सवाल मैं पूछना चाहता हूं इस मुल्क के अखबारात और इस मुल्क का गवर्नमेंट कन्ट्रोल मास-मीडिया रेडियो इस मामले में सबसे ज्यादा बंगलिंग कर रहे हैं । पिछली बार फसादात के बारे में अखबारों ने खबरें दीं और माननीय होम मिनिस्टर साहब ने इस हाउस में कहा कि इसमें गैर मुल्की हाल होने का सुबा है । गैर मुल्की हाथ कहकर आप किसको बदनाम करना चाहते हैं । हर कौमनसैन्स वाला सदस्य पूछता है कि ये अकलियत वाले जो हैं उनकी दूसरे मुल्क से सांठगांठ हो सकती है । अकसरियत का तो सवाल नहीं है । इस तरह क्या आप गैर-मुल्की हाथ है तो उसको आप को एक्सपोज करना चाहिये था । कौन मुल्क है जो हमारे मामले में इंटरफियर करता है ? इसलिये जो गैर-मुल्की होने का सोसा, पाकिस्तान से हथियार आ रहे हैं इसका सोसा या अमृतसर से रिवाल्वर आ रहे हैं इसका सोसा है इसको आपको अब खत्म करना चाहिए । अमृतसर से रिवाल्वर की बात

को अखबारात में बहुत ज्यादा उठाया था लेकिन बाद में साबित हुआ कि वह लोग स्मगलर थे जो रोजाना इस तरह की ट्रेड करते थे । इसके बाद लखनऊ में पटाखे मिले जिनको अखबारात ने बताया कि वहां पांच हजार बम पकड़े गये । इसी तरह से बिजनौर और अमरोहा के बारे में एलान किया गया कि वहां कर्फ्यू है लेकिन जब मैं वहां गया तो पता चलता कि वहां कर्फ्यू था ही नहीं । तो क्या जो आपका मास मिडिया है रेडियो है उसको आप ऐसी हरकतों से रोकेंगे और जो इसमें ऐसे गैर-जिम्मेदार लोग हैं उनके खिलाफ आपने कौन सी कानूनी कार्यवाही की है । मैं यह जानना चाहता हूं । क्योंकि ऐसी खबरों की वजह से ही कई बार दंगे फसाद बढ़ जाते हैं । आखिरी बात मैं कहना चाहता हूं कि ला और आर्डर मैनटैन करने के लिए जितने भी फोरसिज हैं उसमें आप सकरीनिंग करके अफसरों और वीकर सैक्शन को रिप्रजन्टेशन देने की बात कब पूरी कर रहे हैं और आपका जो एक एन्टी रायट फोर्स का जो वायदा है उस को आपको फौरी तौर पर पूरा करना चाहिए और आप मौजूदा फसाद के बारे में जूडिशियल इन्कवारी करायें और जो लोग उसके जिम्मेदार पाये जायें उनको आप वाकई सजा दें । खाह वो किसी भी पार्टी से ताल्लुक रखते हों या एडमिनिस्ट्रेशन में हों । यही मेरे चंद सवालात हैं जिनका मैं आपसे जवाब चाहता हूं] ।

[شری اسعد مدنی (اتر پردیش) :

کیونکہ ملک و ملت اور بچاؤ تحریک کا ذکر آیا ہے اس لئے چیئرمین صاحب سے میں کہنا چاہتا ہوں کہ مجھے بھی موقع دیا جائے -]

†[**श्री असद मदनी** (उत्तर प्रदेश) : क्योंकि मुल्कोमिल्लत और बचाव तहरीक का जिक्र आया है इसलिए चेयरमैन साहब म कहना चाहता हूं कि मुझे भी मौका दिया जाये ।]

ज्ञानी जैल सिंह : मेरे बाद आप टाइम ले लीजिएगा । आनरेबिल मेम्बर ने कुछ सवाल किये हैं । मरने वालों की तादाद उन्होंने कहा है कि बहुत ज्यादा है । इसका जवाब मैं पहले दे चुका हूं कि मेरे पास जो सरकार से रिपोर्ट आयी है वह मैं ने यहां सुनायी । हो सकता है कि कुछ ज्यादा हो, लेकिन मैंने पहले भी कहा था कि जितना आप सोचते हैं और कहना चाहते हैं सैंकड़ों की तादाद है, वह नहीं है । खुदा की मेहरबानी से इस से ज्यादा नहीं होगी और अगर और दंगे फसाद न हों तो यह ज्यादा बढ़ेगी नहीं । आगे दंगे फसाद होने की आशा मैं समझता हूं कि नहीं है और इस के लिये इंतजाम बहुत ज्यादा करने की कोशिश की गयी है । यह मैं कह चुका हूं और यह सवाल कि क्या इन बातों को देख कर सरकार की नीयत पर शक नहीं कर सकते, चूंकि दंगे फसाद करने वाले बहुत कम हैं और यह दंगे फसाद सरकार जानबूझकर करवा रही है, मेरे ख्याल में यह बात आनरेबिल मेम्बर ने इस को पोलिटिकल रंग देने के लिये कही है या हम को बदनाम करने के लिये कही है । वह शायद सरकारी मामलों को अच्छी तरह से देखते नहीं । दुनिया में कोई भी ऐसी सरकार नहीं होगी जो खुद ब खुद दंगे फसाद करवा कर के अपने को बदनाम करायें । और आप कह रहे हैं कि ऐसा क्यों किया, ऐसा क्यों किया और इस लिये दंगे फसाद होते हैं । यह बात बिलकुल निराधार है । सरकार तो

•[ ] Devnagri translation

[ज्ञानी जैल सिंह]

चाहती है कि अमन और शान्ति रहे । लोगों की जिन्दगी में किसी दंगे फसाद की बात न हो । उन की जान माल की रखवाली करने की हम कोशिश करते हैं । उन्होंने कहा कि पुलिस फोर्स जो है वह बहुत बदनाम है । बहुत गलत काम करता है और वह एक बदनामी का टीका है । सारे पुलिस फोर्स को इस तरह से कहना अच्छी बात नहीं है और यह बात बिलकुल गलत और बेबुनियाद है । कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो बदनामी का कारण बनते हैं । कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं कि जो शरारती भी करते होंगे लेकिन ओवर आल जो इंडियन पुलिस है वह इस किस्म की नहीं है । फिर भी उस को और ट्रेनिंग और नया रास्ता हम दिखाने की कोशिश कर रहे हैं । मगर यह बात मैं बिलकुल नहीं मानता कि हिन्दुस्तान की पुलिस जो है वह बदनामी का टीका है । हिन्दुस्तान की पुलिस ने मुल्क की अमन और शान्ति के लिये जानें दी हैं । जंग हो या पीस हो उस में हमारे जितने फोर्स हैं जितने किस्म के हैं उस में बहुत आला दर्जे के लोग, बहुत सिंसियर और ईमानदार लोग और सेवा करने वाले लोग मौजूद हैं । वह तो माइक्रास्कोपिक माइनोरिटी के लोग हैं...

श्री अब्दुल रहमान शेख : तो अकलियतों को क्यों नहीं बचा पाते हैं ।

ज्ञानी जैल सिंह : मैं विनती करूंगा कि मैंने आपकी बात बड़ी शांति से सुनी आप भी शांति से सुनिये । (**व्यवधान**)

श्री अब्दुल रहमान शेख : आप ऐसा सर्टीफिकेट दे रहे हैं जैसे कुछ हो ही नहीं रहा है । जो कुछ हो रहा है ठीक ही रहा है ।

ज्ञानी जैल सिंह : आप अगर महसूस करते हैं कि मैं जो कह रहा हूं वह ठीक नहीं है, उससे आप इत्तफाक नहीं करते तो न करें । मैं आपको मजबूर नहीं कर सकता । यह हाउस है । इसकी आवाज सारी दुनिया में जाएगी । वह जज कर लेंगे कि हमने गलत किया या नहीं । आपका समय था आपने कह दिया । पार्लियामेंटरी सिस्टम का जो कायदा है उससे हमें अपनी बात कहनी है । आप चाहते हैं कि एक-एक का मैं जवाब दूं तो सुनने के लिये आपमें हिम्मत चाहिये ।

एक माननीय सदस्य : बिलकुल है

ज्ञानी जैल सिंह : बड़े अदब से कहना चाहता हूं जो उन्होंने यह कहा कि लोग समझते हैं कि यह डाकुओं का देश है, लूटने, मारने वालों का देश है । दंगा करने वालों का देश है तो मैं चाहता हूं कि खुद आनरेबल मेम्बर इस बात को कहना छोड़ दें । ऐसे शब्द दुनिया में जायेंगे तो अच्छी बात नहीं है । (**व्यवधान**) इस देश में डाकू भी हैं, पापी भी हैं और इस देश में अवतार भी हैं, ऋषि भी हैं, मुनि भी हैं ।

श्री भा० दे० खोदरागड़े (महाराष्ट्र) : जातिवाद भी है ।

ज्ञानी जैल सिंह : सांइसदां भी हैं, प्रबन्धक भी हैं । यह देश डाकुओं का नहीं है महापुरुषों का है । यह देश देशभक्तों का है । इंसानियत में विश्वास करने वालों का देश है । (**व्यवधान**) इस देश की महानता को आप को कम करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये । (**व्यवधान**)

श्री भा० दे० खोबरागड़े : विषमता की वजह से यह देश दो हजार साल गुलाम रहा (**व्यवधान**)

श्रीमती सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) : आप बहुत पुरानी बात कहते हैं । कोई नई बात आप नहीं कहते । (**व्यवधान**)

ज्ञानी जैल सिंह : आप कहें मेरी वजह से और मैं कहूं आपकी वजह से यह है तो इससे कोई फायदा नहीं होगा। सारे कौम का फायदा हो ऐसी बात करनी चाहिये । अगर मेरी बात आप मानते हैं तो आपको वह शब्द वापस ले लेने चाहियें ...(**व्यवधान**)

श्री भा० दे० खोबरागडे : वापस क्यों लूं ?

No. It is a fact of history.

MR. DEPUTY CHAIRMAN; Let him complete.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: He has asked me to take back my words...

MR. DEPUTY QHAIRMAN; No, no, I do not allow it. Please take your seat.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: I am only giving a historical fact that this country has been enslaved for 2,000 years because of the religious and social inequality.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You keep your history with you. *(Inter-ruptionsQ* Order, please. Let him reply.

श्रीमती हामिदा हबीबुल्लह (उत्तर प्रदेश) : इनको वापस लेने चाहियें... (**व्यवधान**)

श्री भा० दे० खोबरागडे : आपकी सरकार ऐसी है जिससे मुल्क बदनाम होता है (**व्यवधान**) ।

श्रीमती सरोज खापर्डे : जितनी हमारी सरकार की जिम्मेदारी है उतनी आपकी भी है। (**व्यवधान**)

श्री अब्दुल रहमान शेख : आपके शोर मचाने से हकीकत नहीं बदलती । (**व्यवधान**)

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, मैंने पहले भी प्रार्थना की थी कि यह मामला बहुत गम्भीरता और संजीदगी से सोचने वाला है । किसी के ऊपर कोई इल्जाम लगाने की बात नहीं है... (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : अगर आप चाहते हैं कि माननीय मंत्री जी सारी बात का जवाब दें तो आप बैठिये । नहीं तो इनका जवाब पूरा नहीं हो पायेगा । आप भाषण देंगे तो जवाब पूरा नहीं होगा । (**व्यवधान**)

श्रीमती सरोज खापर्डे : आर०एस०एस० के लोग, जनसंघ के लोग जब इस देश में, इस सदन में राष्ट्रीयता की बात करें... (**व्यवधान**)

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, श्रीमती सरोज खापर्डे बार बार आर०एस०एस० के बारे में बोल रही हैं... (**व्यवधान**)। सबसे अधिक कम्युनल तो आप हैं। आप अपने को देख कर बात करिये... (**व्यवधान**)।

ज्ञानी जैल सिंह : यहां हाउस का ला एण्ड आर्डर तो मेरे हाथ में नहीं है। यह तो माननीय उपसभापति जी के हाथ में है । मैंने बड़े सम्मानपूर्वक दूसरी तरफ के मेम्बरों से कहा था कि अगर कोई ऐसा मसला हो जो कि पोलिटिकल हो तो हम एक दूसरे को बुरा-भला कह सकते हैं। लेकिन बुरा-भला कहने के बाद असलियत पर आना निहायत जरूरी है। यह बड़ा

[ज्ञानी जैल सिंह]

संगीन मामला है, दुख का मामला है. . . (**व्यवधान**) । आप बैठिये, आप इतने बड़े आदमी हैं, आप अपनी इज्जत नहीं देख रहे हैं। मैं प्रार्थना कर रहा था कि आपके एक-एक पाइन्ट का जवाब दूं । अगर आप मेरी बात नहीं मानते हैं तो इसमें मुझे कोई गुस्सा नहीं है, नाराजगी नहीं है। लेकित मैं यह जरूर कहूंगा कि अगर देश में कोई थोड़ी-सी कमी भी हो तो हमारा यह फर्ज बनता है कि उस कमी को दूर करने का यत्न करें। लेकिन जो बातें दुनिया में जाने वाली हैं, जो बातें हिस्टरी में आ जाती हैं और आप आनरेबल मेम्बर्स जानते हैं कि इस राज्य सभा की कार्यवाही छपती है और वह हिस्टरी बन जाती है। बाद में अगर लोग इसको पढ़ेंगे कि यह बदमाशों और गुण्डों का देश है तो यह अच्छा नहीं होगा। इसलिए मैंने इस बात को जरा जोर देकर कहा कि आप इस देश को बदनाम मत करिये। मैंने अपनी बात कह दी, अब आपकी जो मर्जी है वह आप करें।

मैंने यह कहा कि जो कसूरवार हैं उनको हम रिपोर्ट के आधार पर सजा देंगे। जो साबित हो जायेंगे, क्लीयर कट साबित हो जाएंगे, उनको पहले ही सजा दे दी जाएगी। जो मामले डाउटफुल होंगे उनको रिपोर्ट आने के बाद सजा दी जायेगी। एक बात उन्होंने यह भी कही कि हमने पीस फोर्स का वायदा किया था। उन्होंने कहा कि मिनिस्टर ने स्टेटमेन्ट तो दे दिया, लेकिन उस पर अमल नहीं किया गया। पीस फोर्स हमारी सेन्ट्रल रिजर्व फोर्स का एक हिस्सा है, उसकी तीन बटालियनों की हमने रेक्रूटमेन्ट कर ली है। उसकी ट्रेनिंग जहां तक मुझे याद है, 10 महीने की कम से कम होगी और उसके बाद वह काम करेगी। यह भी कहा गया कि यू०पी० की सरकार को बलात्कार से डिसमिस किया गया। यह आनरेबल मेम्बर की गलतफहमी है। उस समय 9 हिन्दुस्तान की प्रदेश सरकारों को डिसमिस किया गया था, डिजोल्व किया गया या कहिये कि ऐसेम्बलियों को भंग किया गया। उसमें अकेला उत्तर प्रदेश ही नहीं था। उत्तर प्रदेश को ही उसमें शामिल करना असंगत होगा। उसके साथ इसका कोई ताल्लुक नहीं है। जो यह इल्जाम लगाया गया है कि हमारे डबल स्टेन्डर्ड मुखतलिफ सरकारों के प्रति हैं, यह बिल्कुल नहीं है। सब सरकारों को हम कोआपरेशन देते रहे हैं।

श्री भा० दे० खोबरागडे : बिल्कुल है ।

ज्ञानी जैल सिंह : पूरी तरह से हमने सहयोग दिया है। त्रिपुरा में बहुत बड़े वाकयात हुए हैं . . . (**व्यवधान**) । खोबरागडे जी आप बीच में बोलते जाते हैं तो ये लड़कियां भी बोलने लगती हैं . . . (**व्यवधान**) । आप तो बुजुर्ग आदमी हैं । आप बहुत दिनों से यहां पर सेवा करते आए हैं।

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी (महाराष्ट्र) : ज्ञानी जी, आप श्री खोबरागडे और श्रीमती सरोज खापर्डे में समझौता करा दें। . . . (**व्यवधान**) ।

श्रीमती सरोज खापर्डे : हमारे और श्री खोबरागडे के बीच में समझौता करने के लिए श्री कुलकर्णी जी के आने की जरूरत नहीं है। वे तो हमारे ही आदमी हैं . . . (**व्यवधान**) ।

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): May I suggest that Shrimati Saroj Khaparde should come to th« front bench? (Interruptions) We are finding she is very ably defending the Home Minister.

SHRIMATI "SAROJ KHAPARDE:: Whatever was said by the Opposition Members, only on that I rose and

took objection; otherwise, I would not have got up.

SHRI BHUPESH GUPTA; All I said was it is better you come to the front bench. (Interruptions)

SHRIMATI SAROJ KHAPARDE: Saroj Khaparde and Khobragade come from the same community. *{Iriterruptions)*

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Not only they come from the same community, they come from the same family.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I think the hon. Members do not seem to be interested in listening to the Home Minister's reply. Mr. Khobragade, why are you taking the time of the House. It seems Members are not interested in the Minister's reply....

SOME HON. MEMBERS: We are interested.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nobody seems to be interested. Every time somebody or other is standing up. Now, he is standing up. Let the Minister complete his answer.

ज्ञानी जैल सिंह : आनरेबल मेम्बर साहबान से आपकी मार्फत प्रार्थना करता हूं कि कायदे के मुताबिक कालिंग अटेन्शन के बाद जो मेम्बर बात पूछना चाहते हैं वे पूछें और उनको जवाब दिया जाता है पर उन्हें दुबारा मौका नहीं दिया जाता है। यह मैं कहता हूं कि दुबारा, तिबारा या छः बार मौका दीजिये लेकिन दो बातों का जरूर ख्याल रखें। जब तक मैं बोलता हूं बीच में इन्टरप्शन न हो। दूसरी बात, कोई मेम्बर आपकी इजाजत के बगैर न बोले। अगर कोई गलती करता है चाहे इस तरफ का हो या उस तरफ का हो, आपको मेरी प्रार्थना है हाउस को पूरी तरह से आपको कन्ट्रोल करना चाहिए।

एक बात जो बहुत महत्वपूर्ण मेरे आनरेबल साथी ने कह दी वह उनको कहनी नहीं चाहिए कि प्रधान मंत्री को अपना टूर प्रोग्राम कैंसिल करना चाहिए था। प्रधान मंत्री एक दिन पहले वहां जाती हैं और विदेशों में, जहां का प्रोग्राम बना हुआ है वह बहुत मुद्दत से बना हुआ है और वह तकरीर करने के लिये नहीं गई। उन्होंने बहुत से मुल्कों में जाना है, एक से ज्यादा मुल्कों में जाना है। सब को टाइम दिया गया है और आनरेबल मेम्बर को पता है कि प्रधानमंत्री किसी मुल्क में जाती हैं तो उस मुल्क को कितनी तैयारी करनी पड़ती है और अगर न जाय तो उस देश के लिये कितनी परेशानी होती है। यह तकरीर करने की बात नहीं है। यह देश के आनर का सवाल है, यह करेक्टर का सवाल है, यह देश की प्रामिस पर अमल करने का सवाल है। यह भी कभी हुआ कि कोई वाकया हो जाय तो सिर्फ प्रधानमंत्री ही उसको देखें। उनको कुलीग बैठे हुए हैं, उनकी मिनिस्ट्रीज यहां बैठी हुई हैं, एडमिनिस्ट्रेशन यहां बैठा हुआ है, वहां प्रान्तीय सरकार कायम है। यह हमारी ड्यूटी है कि हम इसको देखें। आप जो कुछ भी कहना चाहते हैं, प्रधान मंत्री जब तक वापस नहीं आती, तब तक हम को कह लीजिए। मैंने तो बार बार कहा संजीदगी रखिये और इसको ऐसी बात में नहीं लेना चाहिए।

एक बात कह कर मैं समाप्त करता हूं। गैर-मुल्कों का हाथ कहने से यह शक जाता है अक्कलतियों पर। मैंने पहले भी कहा था और आज भी कहता हूं कि अक्कलियतों पर, अक्सरियतों पर या हरिजनों पर किसी का सवाल नहीं है। विदेशी हाथ हो तो मेजारिटी भी उसके पीछे हो सकती है, किसी माइनारिटी का भी हाथ पीछे हो सकता है। मगर यह मोटिव नहीं है। यह कह कर आपने कोई खिदमत नहीं की कि मई

[ज्ञानी जैल सिंह]

पाकिस्तान से हथियार आये तो मुसलमानों को इस पर ऐतराज है ऐसी बात आपको नहीं कहनी चाहिए । देश के हित में आपको सोचना चाहिए जिससे कि देश की एकता बढ़ती हो, नेशनल यूनिटी बढ़ती हो और इमोशनली हम एक दूसरे के नजदीक आ सकें । इसके रास्ते में हमको कोई रुकावट नहीं डालनी चाहिए । ऐसी बात हमारे दिमाग में नहीं है और न ही आपको रखनी चाहिए ।

[شری عبدالرحمان شیخ : میرے پورے کوئشچن کا جواب نہیں آیا]

†[**श्री अब्दुल रहमान शेख** : मेरे पूरे क्वेश्चन का जवाब नहीं आया ।]

श्री उपसभापति : जवाब हो गया है । Nobody can cover all your points.

[شری عبدالرحمان شیخ : بہت سے سوال باقی رہ گئے .....]

†[**श्री अब्दुल रहमान शेख** : बहुत से सवाल बाकी रह गये ।]

श्री उपसभापति : इतनी लम्बी स्पीच आप दे गये ...

[شری عبدالرحمان شیخ : میں تقریر نہیں کرونگا -]

†[**श्री अब्दुल रहमान शेख** : मैं तकरीर नहीं करूंगा ।]

श्री उपसभापति : नहीं । दूसरों को भी बोलने दीजिए, दूसरों को भी बोलने का मौका दीजिए ।

†[ ] Devanagri transliteration.

[شری عبدالرحمان شیخ : ہمارا پوری ولیج ہے کہ جو سوال ہم پوچھیں اس کا جواب ہمیں ملے -]

†[**श्री अब्दुल रहमान शेख** : यह हमारा प्रिविलेज है कि जो सवाल हम पूछ उसका जवाब हमें मिले ।]

श्री उपसभापति : ठीक है पर आपने बहुत से सवाल पूछे हैं Unless you put a specific question and if you make a long speech, no Minister will be able to reply to all the points.

.. आप 15 मिनट बोले ।

(**व्यवधान**) ठीक है प्रिविलेज है लेकिन टाइम लिमिट कोई होती है... (**व्यवधान**) ...

[شری عبدالرحمان شیخ : میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ جو ماس میڈیا ہے، جو اخبار اس طرح کی بات پھیلاتے ہیں کہ پاکستان سے ہتھیار آ رہے ہیں مرادآباد میں، جو حالاتوں کو بگاڑتے ہیں اور فسادات کو بڑھانے میں مدد کرتے ہیں ان کے خلاف آپ کیا کاروائی کرنے جا رہے ہیں - (مداخلت)]

I put a specific question.. ..

†[**श्री अब्दुल रहमान शेख** : मैं यह जानना चाहता हूं कि जो मास मीडिया है, जो अखबार इस तरह की बात फैलाते हैं कि पाकिस्तान से हथियार आ रहे हैं मुरादाबाद में जो हालातों को बिगाड़ते हैं और फसादात को बढ़ाने में मदद करते हैं उनके

खिलाफ आप क्या कार्यवाही करने जा रहे है— (व्यवधान) ।]

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This is not the way of putting specific questions....

इतनी बड़ी स्पीच देने से कोई जवाब नहीं हो सकता .. (व्यवधान) ..

[شری عبدالرحمان شیخ : آپ
سوال نہیں پوچھنے دے رہے ہیں -
وہاں خون کی ندیاں بہہ رہی ہیں
آپ میری زبان بند کرنا چاہتے ہیں -]

†[श्री अब्दुल रहमान शेख : आप सवाल नहीं पूछने दे रहे हैं वहां खून की नदियां बह रही हैं आप मेरी जवान बन्द करना चाहते हैं ।]

श्री उपसभापति : खून की नदियां, यहां हम यह नहीं सुनना चाहते हैं ।

[شری عبدالرحمان شیخ : آپ
ہمارا منہہ بند کرنا چاہتے ہیں.....
(مداخلت)

† [श्री अब्दुल रहमान शेख : आप हमारा मुंह बन्द करना चाहते हैं ।]

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Khobragade, this is very bad of you-always sitting while speaking.

[شری عبدالرحمان شیخ : آپ
ہمارا منہہ بند کرنا چاہتے ہیں
اس لئے میں واک آوٹ کرتا ہوں میں
نوکونفیڈنس موشن لاؤنگا...(مداخلت)

†[श्री अब्दुल रहमान शेख : आप हमारा मुंह बंन्द करना चाहते हैं इसलिए मैं वाकआउट करता हूं मैं नो कान्फीडेन्स मोशन लाऊंगा .. (व्यवधान) । आप माइनीरिटी को इस तरह से दबाने के आदी हो गये हैं ।

(At this stage the hon. member left the Chamber).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Ramanand Yadav.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Sir, this is very wrong. He has asked a question about the media only.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This is very bad. All the time you are speaking. Mr. Khobragade will not go on record. Yes, Mr. Ramanand Yadav.

(SHRI B. D. KHOBRAGADE *continued to spekik).*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If the Members make long speeches, no Minister can reply. If the Members want specific answers, they must put specific questions. Yes, Mr. Yadav.

श्री रामानन्द यादव : उपसभापति महोदय, यह बहुत ही दुख की बात है कि बिहारशरीफ में दंगा हुआ । यह सारे सदन के लिए, सारे मुल्क के लिए दुख की बात है कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच में इस तरह के दंगे हुए । इससे पहले भी दंगे इस देश में होते थे लेकिन सुखद बात यह थी कि 1971 से 1976 तक दंगे नहीं हुए । लेकिन 1977 में इलेक्शन हुआ और आपने देखा कि कुछ सेकूलर फोर्सिज जो इस देश में थी रिलीजियस फोर्सिज के साथ यूनाइट कर गई और यूनाईट करने के बाद इस देश में वे जो रिलीजियस फोर्सिज थी ऐसी कम्युनल और पोलिटिकल पार्टियां जो केवल उसी आधार पर इस देश में पनपती थी उनको इस देश में

t[ ] Devanagri transliteration.

[श्री रामानन्द यादव]

प्रतिष्ठा मिली और प्रतिष्ठा किस ने दी ? इस देश में सब से बड़े अपने को सेकुलर कहने वाले लोग, पोलिटिकल पार्टियों के लोग जो समाजवाद, साम्यवाद, कम्युनलिज्म या दूसरा नारा देते थे और प्रचार करते थे उनको देखा गया कि 1977 आते आते सब अपने को विलीन कर गये । इस देश को कम्युनल फोर्सिज चाहे हिन्दु समाज को हों, चाहे मुस्लिम समाज को हों, मुस्लिम लोग हों, आर० एस० एस० हो, हिन्दु महासभा, जमीयते इस्लामी से, हिन्दुओं में और मुसलमानों में जो भी इस तरह की संस्थायें थीं उनके साथ संबंध जोड़ लिया । और एक प्रतिष्ठा दे दी । इस देश में कम्युनलिज्म, जिस की वजह से आज इस देश में 1978 आते आते सब से बड़ा दंगा अलीगढ़ में हुआ । जनता पार्टी के वक्त में हुआ था । दो महीने तक यह दंगा चलता रहा लेकिन मोरारजी देसाई वहां पर नहीं गये । मैं उनको कंडम नहीं करता कि क्यों नहीं गए । टाइम नहीं मिला होगा। शायद एडमिनिस्ट्रेशन ने उनको राय दी होगी कि इस वक्त माकूल समय नहीं है । ऐसी बात भी नहीं है . . . (**व्यवधान**) यह मेरे अपने विचार हैं । उनको जाना चाहिये था लेकिन नहीं गये । यह प्रतिष्ठा जिन लोगों ने दी उन्हें खुद सोचना चाहिये कि उनकी वजह से आज इस देश में दंगे हो रहे हैं । हमारी वजह से नहीं है । हमने तो रोका था । आपने उनको प्रतिष्ठा दी । अब उसका फल भोग रहे हैं । यह जो दंगा होता है, इसका जरा इतिहास देखिये । यह कहां होता है । मन्दिर, मस्जिद, लिकर-शाप, रेवयाड, जमीन और ताड़ीखाना, दंगा इन जगहों पर होता है । यह दंगा भी ठीक वहीं हुआ है । यह दंगा भले पुरुष नहीं करते हैं । इतिहास इस देश में साक्षी है । हमारे मित्र चले गये हैं । हिन्दू और मुसलमान. . .

श्री भा० दे० खोबरागडे । मैं यहां पर हूं । (**व्यवधान**)

श्री रामानन्द यादव : मैं आपको नहीं कहता. . . (**व्यवधान**) .

क्या आप स्वप्न में सुन रहे हैं ? आप संसार में रहिए. . . (**व्यवधान**)

श्री भा० दे० खोबरागडे : आप मुझे संसार में भेजना चाहते हैं, मैं अभी भी संसार में हूं. . . (**व्यवधान**)

श्री रामानन्द यादव : आप तो गजब आदमी हैं भाई, आप इतने पुराने आदमी होकर इस तरह का व्यवहार करते हैं ।

श्री भा० दे० खोबरागडे : आप जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल करते हैं मुझे उसी तरह से व्यवहार करना पड़ता है. . . (**व्यवधान**)

श्री रामानन्द यादव : आपको तो अच्छे शब्दों का व्यवहार करना चाहिए, आप तो पुराने आदमी हैं ।

श्री भा० दे० खोबरागड़े : मैं 1958 से यहां का मेम्बर हूं और यहां का डिप्टी चेयरमैन रह चुका हूं, जहां पर आप बैठे हैं. . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : आप बोलने तो दीजिए. . . (**व्यवधान**)

श्री भा० दे० खोबरागडे : अरे छोड़िए । मैं कल ही गुजरात से होकर आया हूं वहां पर क्या हुआ, वहां पर क्या बीती है, मैं देखकर आया हूं और. . (**व्यवधान**)

श्री रामानन्द यादव : उपसभापति जी, इतिहास साक्षी है कि इस देश में डाकू नहीं हैं... **(व्यवधान)**

श्री उपसभापति : आप कृपा करके मेरे थ्रू पूछिए ...**(व्यवधान)** वहां बहुत ध्यान मत दीजिए । नहीं तो बहुत समय लग जायेगा ।

श्री रामानन्द यादव : इस देश में मिस मेयो आई और वे एक विदेशी महिला थीं जहां भी गयीं उनको केवल इस देश में खराबी ही नजर आती । मुझे तो ऐसा लगता है कि शेख साहब ने उन विदेशियों की लिखी हुई किताबें पढ़कर इस भारतवर्ष के संबंध में अपने विचार बना लिये हैं । कुछ अपने देश का इतिहास, जो हमारे फकीर हो गये हैं, जो हमारे संत हो गये हैं जो महर्षि हो गये हैं, जो हमारे अंदर विद्वान हो गये हैं धर्माचार्य हो गये हैं उनकी बात तो जरा सोचिए, उनके ग्रंथों को देख लीजिए । इस देश में हिन्दू मुसलमान एकता कायम करने वाले दोनों धर्मों में, हर एक धर्मों में अच्छे लोग पैदा हुए हैं जिन्होंने हिन्दू धर्म में पैदा होकर भी मुसलमानों के साथ भाईचारे का प्रचार किया... **(व्यवधान)**

श्री उपसभापति : घटना पर पूछिए, उसको छोड़िए ।

श्री रामानन्द यादव : तो उसकी कमी नहीं है और मुसलमानों में पैदा होकर हिन्दुओं के साथ भाईचारे का संबंध बनाकर इस देश में रहे हैं और उसी का अर्थ यह है कि जब ताजिए निकलते हैं तो हिन्दू... **(व्यवधान)** बनता है और जब हिन्दुओं के यहां से महावीरी झंडा निकलता है तो मुसलमान उसमें जाकर गाटका खेलते हैं । यह हमारी एकता है । हम एक दूसरे के धर्मों और त्योहारों में शामिल हुते हैं । शायद वे भूल गये.. **(व्यवधान)**

श्री राम लखन प्रसाद गुप्त (बिहार) : श्रीमन्, .. **(व्यवधान)**

श्री उपसभापति : आप बीच में क्यों खड़े हो गये ।

श्री रामानन्द यादव : हमारे एक वक्तव्य में.. **(व्यवधान)**

श्री उपसभापति : अब आप विषय पर आईये, बहुत समय मत लगाईये ।

श्री रामानन्द यादव : हमारे पूर्व वक्ता ने यह एलीगेशन लगाया कि बिहार की सरकार ने कुछ नहीं किया, बिहार की सरकार को, जगन्नाथ मिश्र की सरकार को तुरंत डिसमिस कर देना चाहिए, यह इनके अंदर पालिटिकल नीति है । उनका दिल साफ नहीं है । ये दंगे नहीं रोकना चाहते हैं, लोगों के मरने से दुखी नहीं हैं बल्कि उनकी लाश पर अपनी राजनीति पनपाना चाहते हैं ... **(व्यवधान)** इसलिए इस तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं कि श्री जगन्नाथ मिश्र को रिजाईन कर देना चाहिये । मैं आपसे पूछना चाहता हूं...

श्री शिव चन्द्र झा : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है ।

श्री उपसभापति : अब आप तो पूछ चुके हैं झा जी, बोलने दीजिए कृपया करके ।

श्री शिव चन्द्र झा : वहां बहुमत उन्हीं लोगों का है, उन्हीं की सरकार बने विरोधी दल की नहीं.. **(व्यवधान)** उनको हटा करके अपने ही दल के दूसरे मुख्य मंत्री को बनाईये.. ।

श्री उपसभापति : आप कहिए ।

श्री रामानन्द यादव : उपसभापति जी, श्री जगन्नाथ मिश्र ऐसे व्यक्ति हैं कि एक मुसलमान बिहार का उस आदमी को प्यार करता है । मैं तो चैलेंज करता हूं मिस्टर झा जी की आप चलो खड़े हो लो और देख लो कि बिहार का मुसलमान क्या कहता है । एक-एक पिछड़ी जाति के लोग, एक-एक हरिजन और हर जाति में वे प्रिय व्यक्ति हैं । आप उनका रिजिगनेशन मांगते हैं ? आपका असर लोगों पर बुरा पड़ेगा कि आप कैसे व्यक्ति हैं । जब दंगे हो रहे हों उस वक्त मुख्य मंत्री जी रिजाईन कर देंगे तो क्या होगा ला एण्ड आर्डर कोलेप्स कर जायेगा और आप चाहते हैं कि और लोग मारे जाते ' वहां बिहार के मुख्य मंत्री ने सबसे पहले बैठकर चीफ सेक्रेटरी नायर और वहां के आई जी पुलिस दोनों को वहां भेजा, उसने सी. आर. पी. भेजी, बिहार बटालियन भेजी और फोर्सेज भेजी, अपनी मशीनरी को टीयर अप किया, करीबन 1 मैजिस्ट्रेट्स को डिप्यूट किया और आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि उसने जितनी जल्दी बिहार शरीफ के दंगे को रोकने के लिए, **(व्यवधान)** शायद कोई मुख्य मंत्री नहीं कर सकता था । उत्तर प्रदेश में भी दंगे हुये, हमने देखा । लेकिन बिहार का दंगा आज कंट्रोल्ड है और पूरी तरह से कन्ट्रोल्ड है। आप बिहार शरीफ की तराई को जानते हैं और आप जानते हैं कि किस तरह का एरिया है, जहां सड़क नहीं है, लोग पालकी पर जाते हैं । अगर आप बिहार शरीफ में जायेंगे, धान के खेत हैं, कोई सड़ज नहीं है । आज भी झा ' अगरजी उतरियगा हरनौर तो कांधे पर पालकी पर बैठ करके जाना होगा वैसी जगह पर ।

श्री उपसभापति : झा जी पालकी पर नहीं जायेंगे, समाजवादी हैं वे ।

श्री रामानन्द यादव : उस जगह पर पुलिस को भेजना कठिन काम है । 1946 में जो आन्दोलन हुआ था, मैं भी उन लोगों में था जो दंगा रोकने में शामिल थे और आप भी होंगे 1946 में आपने देखा था शाह नवाज खां किस तरह से वहां कैम्प गाड़ करके काम करते थे । मुझे भी याद है, आपको भी याद है । हम लोग गसौरी में—यह वही एरिया है जहां आज भी दंगा हो रहा है । तो बिहार की सरकार ने पूरी मुस्तैदी से दंगे पर काबू करने के लिए प्रयास किया । अब जैसे कि झा जी ने कहा कि दो सौ आदमी मारे गये, बिलकुल गलत बात है । देहात में घटना हुई, आज से दो दिन पहले घटना हुई और फ्लैश आने में एक-दो दिन लग जाते हैं । कल जो घटना हुई, दो दिन पहले जो फ्लैश आता है, उसस संख्या बढ़ती है, लेकिन जिस रूप में फर्स्ट डे को हुआ वह तो नहीं हुआ ।

श्रीमन आप सुन कर ताज्जुब करेंगे कि बिहार शरीफ में मुसलमानों ने राइफल लेकर हिन्दुओं को मुसलमानी मोहल्लों से निकाल करके हिन्दू मोहल्लों में पहुंचाया और आपा यह मालूम होना चाहिये कि बाबा बसन्त जी, मैं गांव याद नहीं करता, अपने यहां सारे गॉव के मुसलमानों को इकट्ठा करके अपने घर में रखा बन्द करके, अपनी जान पर खेल करके उसने लोगों की जान की रक्षा की ।

आपको मालूम है कि रूपसपुर गांव में हिन्दुओं ने मुसलमानों ने सब इकटठे होकर के इस बात की शपथ खाई कि एक भी घटना इस तरह की नहीं होने देंगे । भोला बाबू ने जज्बात के लिए कहा—उस महिला ने मरते हुये अस्पताल में बयान दिया, लेकिन घटना कहीं हुई, घटना का स्थान आपको मालूम है भोला जी ?

देहात में उस हिन्दू के घर में जहां सब मुसलमान इकट्ठे हुए थे ।

दंगाई आये, वे हिन्दू रिजिस्ट करते रहे, लाठियां चलीं, रक्षा करनी चाही, मुसलमानों को निकाल-निकाल कर भागने को कहा और लोग भागे । देहात में पुलिस को डिप्यूट करने में, फोर्स भेजने में दिक्कत होती है । शुरू-शुरू में पुलिस नहीं जा सकी, यह बात ठीक है, एक दिन नहीं जा सकी । लेकिन कण्ट्रोल हुआ । आज ऐसे लोग हैं हरनौर में दूसरी जगह में जो खुद हिन्दू और मुसलमानों की रक्षा कर रहे हैं, अपनी रक्षा कर रहे हैं खुद । यह कहना कि मानवता इस देश से विलीन हो गई है, हमारे शेख साहब, यह अच्छी बात नहीं है ।

श्री अब्दुल रहमान शेख : मैंने यह कहा ही नहीं ।

श्री रामानन्द यादव : मनावता है हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों में है । यह कहना कि एडमिनिस्ट्रेशन रिजाइन कर दे, मुख्य मंत्री को कभी रिजाइन नहीं करना चाहिये ।

पीस कीपिंग फोर्स दो दंगा रोकने के लिए, इस मांग को मैं जायज समझता हूं, लेकिन एक बात को जरूर मैं अर्ज करूंगा कि उसमें आप मुसलमान को तरजीह दे दीजिए, हरिजन को तरजीह दे दीजिए, फिर आदिवासी को तरजीह दे दीजिए, तो अलग फोर्स क्रिएट हो जाएगी —

this will create complication in future which will arise-

क्या जरूरत है ? इण्डाक्ट्रीनेशन होना चाहिये एडमिनिस्ट्रेशन का, और जो पीस कीपिंग फोर्स रखते हैं, उसको सिक्यूलियरिज्म की आप शिक्षा दीजिए, उसी लाइन पर डालिए उसको, उसी तरह से व्यवहार करना सिखाइए ताकि वे जिस तरह डाकुओं के साथ डील करते हैं, क्रिमिनल्स के साथ डील करते हैं, वे दंगाइयों के साथ डील न करें, बल्कि उसकी डील करने में वे मुस्तैदी दिखाएं ।

श्री उपसभापति : अब समाप्त करिए ।

श्री रामानन्द यादव : मेरा ऐसा विचार है कि किसी जाति विशेष से कोई पुलिस फोर्स हो, यह बात व्यर्थ है ।

श्री अब्दुल रहमान शेख : हां, "रेप्रेजेन्टेशन नहीं चाहिये ।" असलियत यहां निकलती है ।

SHRI RAMANAND YADAV: No representation. Educate them. This is the only way.

श्री उपसभापति : समाप्त कीजिए । 15 मिनट हो चुके हैं । (व्यवधान)

श्री रामानन्द यादव : मेरा अपना खयाल है कि हमारे मित्र इस बात को सोचते हैं कि जिस तरह के एलिमेंट इस देश में हैं वे एलिमेंट कायम रहेंगे तो मैं शेख साहब से कहूंगा ऐसे एलिमेंट के साथ चाहे वह किसी भी पोलिटिकल पार्टी के हों आप अपना असोसिएशन कम कर दीजिए ।

श्री भा० दे० खोबरागडे : अरे, आपतो अपना कम कर दो ।

श्री पी० रामूर्ति : पोइन्ट आफ आर्डर, सर । मैं समझता हूं । आप इसको एक डिबेट की तरह समझ रहे हैं । . . .

श्री उपसभापति : मैं नहीं ऐसा समझ रहा हूं । मैं बार-बार उनको रोक रहा हूं । कोई भी रुकने के लिए तैयार नहीं । लेकिन दिक्कत यह है कोई बात मानता नहीं ।

श्री पी० राममूर्ति : एक पूरी स्पीच दे दी वहां की हालत क्या है । यह क्या है? कोई अगर सवाल पूछता है तो उनको सवाल पूछना चाहिये . . .

श्री रामानन्द यादव : आप थे नहीं राममूर्ति जी । यू वेचर आउटसाइड। अभी- अभी आप आते हैं और पौइन्ट आफ आर्डर उठा देते हैं । यहां कितने लम्बे चौड़े भाषण हो गए । राममूर्ति जी आप जरा सोच समझ कर कहें । This is not a point of order. I am sorry a seasoned man like you is behaving like this.

श्री उपसभापति : अब तो आप समाप्त कर लें 15 मिन्ट से ऊपर हो गए ।

श्री रामानन्द यादव : मैं पूछना चाहता हूं क्या सरकार तैयार है कि जितनी कम्यूनल पोलिटिकल पार्टीज हैं, सांप्रदायिक राजनैतिक दल, उन पर सरकार बैन लगाएगी ? चाहे वह हिन्दुओं की हो चाहे वह मुसलमानों की हो और चाहे वह जातिवाद का भी प्रचार करती हो । क्या आप ऐसे पोलिटिकल लोगों के ऊपर बैन लगाइएगा ?

श्री सदाशिव बगाईतकर : आप फैसला करिए । आप को रोका किसने है? . . **(व्यवधान) . . . .

श्रीमती सरोज खापर्डे : . . .तो तुम लोग हो । **

श्री (मौलाना) असराऊल हक राजस्थान : यह बड़ा इंसल्टिंग लफ्ज है जो यूज किया है इस को एक्सपंज करना चाहिये । यह पार्लियामेंटरी नहीं है (व्यवधान)

श्री उपसभापति : जो संसदीय बात कही गई हों उसको निकाल दिया जाएगा ।

**Expunged as ordered by the chair.

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : उनको ऐसे कहने से पहले खुद अपने ऊपर शर्म आनी चाहिये ।

श्री (मौलाना) असराऊल हक : आप ऐसी जबान यहां इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं । . . .(व्यवधान) . .

श्री रामेश्वर सिंह (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, का मतलब है **इस्तेमाल करने वाला . . . (व्यवधान)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order please.

श्री रामेश्वर सिंह : **को भाषा जो करता है उसको . . . कहते हैं ।

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : क्या आप अपने को **कह सकते हैं . . . (व्यवधान)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order please.

श्री रामेश्वर सिंह जी बैठ जाइए । इस शब्द का अर्थ जो सामान्य तौर पर होता है वह यहां नहीं है । मैं समझता हूं, श्री बगाईतकर ने जब वह शब्द प्रयोग किया, वह बिना उसका अर्थ समझे वह दिया है । इस शब्द का प्रयोग असंसदीय है, यह नहीं लिखा जाएगा ।

2 P.M.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: The word** is not imparliamentary. You refer to May's Parliamentary Prac-time. (Interruptions)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That word is not found in May'i Parliamentary Practice.

(व्यवधान) रामेश्वर सिंह समझते हैं कि यह शब्द उचित है, दूसरे मेम्बर

उनके लिए इस्तेमाल करें तो देखिए उन को कैसा लगता है ।

श्री सदाशिव बगाईतकर : * * , इसका मतलब नहीं होता ।

श्री उपसभापति : नहीं होता ।

श्री सदाशिव बगाईतकर : मैं हिन्दी भाषी नहीं हूं ।

श्री उपसभापति : इसीलिए कहता हूं कि यह इसका मतलब नहीं होता । यह शब्द रामेश्वर सिंह को पसन्द है . .

श्री सदाशिव बगाईतकर : * * के लिए मैंने कहा था। (व्यवधान)

श्री उपसभापति : बगाईतकर जी, आप डिक्शनरी कन्सल्ट कर लीजिए । रामेश्वर सिंह जो अपने को ऐसा कहलवाना पसन्द करते हैं तो उनके लिए किया जाय ।

श्री कलराज मिश्र : किसी का नाम लेकर इस तरह की बात आप की तरफ से नहीं होनी चाहिये ।

श्री उपसभापति : आप बैठिए ।

श्री कलराज मिश्र : आपकी तरफ से यह बात नहीं आनी चाहिये । चेयर को अपनी मर्यादा का ध्यान रखना चाहिये।

श्री उपसभापति : वह बहस कर रहे थे कि उचित है इसलिए मैंने कहा ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, उपसभापति जी, आप ऐसे सिंहासन पर बैठे हैं जहां बैठने का सौभाग्य बहुतों को प्राप्त नहीं होता ।

श्री उपसभापति : आप सरमन मत दीजिए, उपदेश मत दीजिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : आपको कमेंट नहीं करना चाहिये । आप अगर यह समझते हैं कि संसदीय नहीं है तो उसको निकलवा दीजिए ।

श्री उपसभापति : रामेश्वर सिंह जी , आप दोहरी बहस नहीं कर सकते । आपने कहा कि यह संसदीय है, मैं समझता हूं कि असंसदीय है । अगर आप समझते हैं असंसदीय नहीं है तो वह आपके लिए प्रयोग किया जा सकता है, मुझे आपत्ति नहीं है ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन . . .

श्री उपसभापति : बैठ जाइए, आपने जो कहा, वह सबने सुना है ।

SHRI K. K. MADHAVAN (Kerala)-. I want to draw your attention...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You do not know Hindi. Please sit down.

S»HRI K. K. MADHAVAN: What is that word? *(.Interruptions).*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That word is not used in a good sense.

श्री रामानन्द यादव अब आप समाप्त करिए ।

श्री रामानन्द यादव : मेरा दूसरा प्रश्न . . .

श्री उपसभापति : मैं फिर नहीं रोक पाऊंगा । अब आप समाप्त करिए ।

श्री रामानन्द यादव : मैंने पहला सवाल पूछा है । दूसरा सवाल यह है कि क्या सरकार . . .

श्री उपसभापति : आप प्रश्न नहीं पूछेंगे तो मैं मंत्री जी से कहूंगा जवाब देने के लिए ।

श्री रामानन्द यादव : क्या सरकार जुडीशियल इनक्वायरी . . .

•♦Expunged as ordered by the chair.

श्री उपसभापति : उसका जवाब हो गया । अब क्या पूछते हैं ?

श्री रामानन्द यादव : मैं सरकार से केटेगरिकल आन्सर चाहता हूं । क्या सरकार जूडीशियल इन्क्वायरी जल्द से जल्द . . .

श्री उपसभापति : वह जवाब दे चुके हैं । आप क्यों वही प्रश्न पूछते हैं ?

श्री रामानन्द यादव : मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि क्या सरकार रायट्स को रोकने के लिए, हिन्दू मुस्लिम रायटस को रोकने के लिए एक लाग टर्म, दूरगामी प्रोग्राम सभी पार्टियों के समर्थन से तैयार कर उसे इम्प्लीमेंट करने की कोशिश करेगी ?

श्री उपसभापति : समाप्त करिए ।

श्री रामानन्द यादव : नहीं । मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि क्या वह दंगों को रोकने के लिए कोई शार्ट-टर्म प्रोग्राम भी बनायेगी । मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि दंगों से जो लोग मारे गये हैं, जो प्रभावित हुए हैं उन के रिहेबिलिटेशन के लिए कौन सा उचित प्रबन्ध सरकार ने किया है । और सरकार मुलाजिमों को . . .

श्री उपसभापति : मंत्री जी । सिर्फ दो प्रश्न हैं उन का जवाब दीजिए । अब पूरी बहस का जवाब मत दीजिए, आब्जरवेशन छोड़ दीजिए ।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI YOGENDRA MAKWANA): Sir. I would only say about the first point he raised with regard to banning the political parties, that it it a suggestion and I have taken note of it.

श्री शिव चन्द्र झा : हिन्दी में जवाब दीजिए ।

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): You speak in English.

MR, DEPUTY CHAIRMAN: Let him reply.

SHRI V. GOPALSAMY: So far I was not able to follow what he was saying.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: So far as the judicial inquiry is concerned my senior colleague has already announced that there will be a judicial inquiry by a High Court Judge. About the long-them, short-term and other programmes, these are all suggestions and I have taken note of them.

شری سید ھاشمی : ڈپٹی چیرمین صاحب مجھے اس سدن میں ایک بار پھر افسوس کا اظہار کرنا پڑ رہا ہے کہ آج آزادی کے ۳۲ ورشوں کے بعد بھی ہم ایک ایسی قومی برائی پر بحث کرنے کے لئے مجبور ہو رہے ہیں ہم اس سدن کو یا پوری قوم متوجہ کرنے کے لئے مجبور ہو رہے ہیں کہ اگر وہی حکومت ذمہ داری کے ساتھ اس بات کی طرف سنجیدگی کے ساتھ غور کرتی تو میں سمجھتا ہوں کہ آج سے بہت پہلے اس برائی کا اس فرقہ پرستی کا خاتمہ ہو چکا ہوتا - لیکن یہ بات ابھی جگہ پر صحیح ہے کہ یہ ہو سکتا ہے کہ اس سدن میں ہم کچھ سیریس طریقہ پر کچھ سنجیدگی کے ساتھ سوچتے ہوں اور سنجیدگی کے ساتھ ہم کیلکلیشن کرکے کسی فیصلہ پر پہنچنے

ہے - تو ہماری پرائم منسٹر نے بہت تلخی سے غصہ سے چلا کر جواب دیا— تو فیلیور - میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ اگر یہ بات ہماری حکومت کو اور اس کے جو ذمہ دار ہوم منسٹر صاحب ہیں ان کو تسلیم نہیں لیکن کیا کیا یہ انتظامیہ کا فیلیور نہیں ؟ حکومت کی ناکامی نہیں - میں سمجھتا ہوں اور میری انفارمیشن اپنی جگہ پر ہے کہ دو سو یا دو سو سے زیادہ لوگ وہاں مارے گئے - لیکن میں کہنا چاہتا ہوں کہ ہمارے ہوم منسٹر صاحب اگر اس فیگر کو نہیں مانتے تو میں اس کو چیلنج کرنا چاہتا ہوں اور میں اسپوانسٹ نہیں کرتا - لیکن میں کہنا چاہتا ہوں کہ ۴۸ کی تعداد بھی کیا کم ہے جس کو کہ حکومت نے تسلیم کیا ہے - کیا یہ تعداد کم ہے اور اتنا ہو چکنے کے بعد بھی ہمارے ملک کی پرائم منسٹر یہ کہیں کہ یہ فیلیور نہیں ہے جب کہ پوری اطلاعات بھی ان کے علم میں ہوں - اور اخبار میں پورے طریقہ سے یہ آیا بھی ہے کہ وہاں پولیس کھڑی تماشہ دیکھتی رہی اور اس نے کہیں انٹروین نہیں کیا - کوئی انٹر فیو نہیں کیا اور کمیونل کلیسیز ہوتے رہے فرقہ دارانہ فسادات ہوتے رہے ہیں - اور اس نے کہیں مداخلت نہیں کی اور یہی وجہ ہے کہ ہمارے ایک بھی ہوں ؟ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ حکومت اس فیصلہ کو امپلیمینٹ نہیں کرنا چاہتی - یہی وجہ ہے کہ جو اتنا بڑا ہنگامہ مرادآباد میں ہوا - جس کا ملک میں ہر طرح سے کنڈمنیشن ہوا اس کا حکومت نے یہ حل ڈھونڈا کہ ایک نیشنل انٹی گریشن کوتسل قائم کر دی - لیکن اس نیشنل انٹی گریشن کونسل قائم کرنے کے اندر بھی وہ سنجیدگی نہیں تھی اور اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ آج مرادآباد کی بات ختم بھی نہیں ہوئی کہ آج ہم بہار شریف کو رو رہے ہیں اور آج مجھے پھر یہ کہنا پڑتا ہے کہ چنگیز ہلاکو خاں کا نام تو تاریخ میں آیا ہوگا اور لوگوں نے سنا ہوگا - لیکن آج اس چنگیز ہلاکو خاں کی روحیں شرما رہی ہیں ان فرقہ پرستوں پی - اے - سی - بی - ایم - پی - کو دیکھ کر جو ہندوستان میں فرقہ پرستی کے نام پر گلا کاٹ رہے ہیں - لیکن اس کے باوجود آج بھی صورت حال وہیں ہے جہاں پہلے تھی - میں پوچھنا چاہتا ہوں منسٹر صاحب سے کہ ہماری پرائم منسٹر وہاں گئیں - دیکھنے کے لئے بہار شریف میں - کسی جرنلسٹ نے کسی اخبار نویس نے یہ پوچھا پرائم منسٹر سے کہ کیا یہ صحیح نہیں ہے کہ یہ ایک منسٹریشن کا فیلیور ہے - مطلب یہ کہ یہاں کا انتظامیہ فیل ہو چکا

[شری سید احمد ہاشمی]

مرنے والوں کی تعداد میں اضافہ ہوتا رہا - محض اتنی سی بات کہہ دینے سے کہ ہم نے وہاں پونیٹو فائل لگا دیا ہے اور ایڈمنسٹریٹیو کنٹرول کو لیا ہے - اجتماعی جرمانہ لگا دیا ہے اسے معاملہ حل نہیں ہو جاتا - جرمانہ کی بات کو میں کہتا ہوں کہ سنہ ۷۸ کے اندر ایمنٹی رزرویشن ایجی ٹیشن نے موقع پر اور اس کے بعد ۱۹۸۰ کے اندر پرس بیگھہ اور بیوڑا کے اندر جب اس طرح کا حادثہ ہوریجنوں کے ساتھ ہوا تو اس وقت بھی بہار حکومت نے اجتماعی جرمانہ کا اعلان کیا تھا اور کہا تھا کہ ہم ان کو اتنے روپیہ دینگے یا یہ سہولتیں دینگے لیکن کچھ نہیں ہوا - اور آج بھی آپ نے دس ہزار روپیہ کا اعلان کیا ہے اس کی کیا گارنٹی ہے کہ ان سب کو ایمپلیمینٹ کر دیا جائے گا ؟ اور پرس بیگھہ اور بیوڑا کی طرح سے یہاں پر بھی امپلیمینٹ نہیں ہوگا ایسا میرا اندازہ ہے - میں سمجھتا ہوں آپ نے جو یہ اعلان کیا ؟ تھوڑی دیر کے لئے یہ پریس میں آ جائے گا اور لوگ سمجھیں گے کہ ان کے لئے کچھ ہو رہا ہے اور ان کے اندر کچھ تسلی بھی پیدا ہو جائیگی - ورنہ حقیقت یہ ہے جیسا میں نے عرض کیا کہ حکومت اس سلسلے میں سیریس نہیں ہے میں ایک چھوٹی سی بات کہتا ہوں پانی کے ٹینک سانپی نے ابھی چھہ سات دن کے بچے کی بات کہی جیسے پتھر پر پھینک دیا گیا - لیکن چند اخباروں کی رپورٹ یہ بھی ہے کہ چھہ اور سات دن کے بچے سے لے کر سال اور دو سال کے ایک نہیں بہت سے بچوں کو ان کی ماؤں کی گود سے چھین کر مارا گیا ہے - اور انہیں قتل کیا گیا ہے جس کی کوئی انتہا نہیں ہے - آج میں بھی کہتا ہوں چیلنج کے ساتھ کہ اگر حکومت کے پاس کوئی ایکوریٹ فیگر متعین تعداد ہے تو وہ بتائے کیونکہ میری اطلاع ہے کہ اس میں دوسرے زائد لوگوں کی جانیں گئی ہیں - میں سمجھتا ہوں جس طریقہ سے پہلے روز یعنی تیس اپریل کو جو رائٹ ہوئے اس میں مرنے والوں کی فیگر چھپائی گئی ہے وہ شرمناک ہے اور ایڈمنسٹریشن کی طرف سے صرف لا کی بات کی گئی ہے مرادآباد میں جب رائٹ ہوئے تھے اس میں بھی یہی ہوا - ایڈمنسٹریشن نے یہ اسٹریٹیجی بنا رکھی ہے کہ صحیح فیگر نہ دی جائے - جتنی کم معلوم ہو سکے اتنی دی جائے - ہم اپنی زبان سے کچھ نہ کہیں اور کم سے کم فیگر بتائیں - پہلے دن سے یہ کہا جاتا رہا کہ سیچویشن انڈر کنٹرول لیکن روزانہ فسادات پھیلتے رہے ؛ بڑھتے رہے اور

میں زہر ملانے کی بات کہی گئی - یہ خبر کچھ روز کے بعد آج پریس میں آئی ہے - چار روز سے وہاں افواہیں گھوم رہی تھیں لیکن کسی قسم کا اناؤنس مینٹ یا کنٹراڈکشن ایڈمنسٹریشن کی طرف سے نہیں کیا گیا کہ یہ کام اقلیتوں یا مائنوریٹی کی طرف سے نہیں کیا گیا اور یہ بات بالکل غلط ہے - اگر اس طرح کی ریومر کو پھیلانے کا موقع دیا جاتا رہا تو میں سمجھتا ہوں اس سے بھی فرقہ وارانہ دوستی کی فضا یا میل ملاپ کی فضا پیدا نہیں ہوگی - جیسا میں نے عرض کیا کہ کرمینل الیمینٹ کو بچانے کے لئے حکومت زیادہ دلچسپی رکھتی ہے - یہی وجہ ہے کہ آج اخبارات کے اندر مقامی سی - پی - آئی - کی رپورٹ چھپی ہے کہ اصل ملزم گھوم رہے ہیں - میں منسٹری مہودے سے کہوں گا وہ اس کو پڑھیں اس میں یہ کہا گیا ہے - کہ آج بھی جو کلپرٹ جو ہیں اور جو لوگ اس کے لئے ذمہ دار ہیں آزادانہ گھوم رہے ہیں - یہ کہا گیا ہے کہ صرف پانچ لوگ پکڑے گئے ہیں اور آر - ایس - ایس - کے ورکرس اور اصل ملزم اب تک نہیں پکڑے گئے ہیں - میں کہتا ہوں کہ کیا ہوم منسٹر صاحب اس بات کا ایشوینس دے سکتے ہیں یقین دلا سکتے ہیں کہ جو واقعی کلپرٹ ہوں خواہ پی - اے - سی - کے لوگ ہوں یا ناکا کرنے والے فرقہ پرست ہوں ان کو موت کی سزا دی جائیگی - وہ سوسائیٹی کے مجرم ہیں ایک قتل پر آپ کہتے ہیں کہ اس کو سزا موت ہو سکتی ہے لیکن میں پوچھتا ہوں کہ ہندوستان میں ۳۲ برسوں میں آج تک کوئی ایک واقعہ ہے جس میں کسی کلپرٹ کو کسی ملزم کو سزا دی گئی ہو - میری اطلاع ہے کہ کوئی سزا نہیں دی گئی جیسا کہ آج ہمارے ہوم منسٹر گیانی ذیل سنگھ نے فرمایا کہ اندازہ ہے کہ بعض آفیسرس بھی اس میں انوالو ہیں اس کے اندر ان کا بھی ہینڈ ہے - لیکن میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا ان آفیسرس کو جن کا اس میں انوالو مینٹ ہے کسی قسم کی سزا ملے گی بارہ کلپرٹ جو اس میں انوالو ہیں ، ذمہ دار ہیں - کیا ان کو موت کی سزا دی جائیگی ، ایسے کلپرٹ جو موت اور قتل کے ذمہ دار ہیں سوسائیٹی کے مجرم ہیں - اگر آپ ان کو موت کی سزا نہیں دے سکتے تو میں یہ کہوں گا کہ آپ اس سلسلے میں سیریس نہیں ہیں خالی قومی آپ کا یہ نعرہ ہے ، دھوکہ ہے - اس سے کوئی فائدہ نہیں ہے - اس کے ساتھ ہی میں کہوں گا مجھے انتہائی تکلیف ہوئی ہے اس بات کی کہ یہ فساد ، کمیونل رائٹ یہ نیشنل پرابلم ہیں ایک قومی مسئلہ ہیں - اس سلسلے کے اندر اپوزیشن کی رائے الگ

بھی پیدا ہوئے لیکن اس بات کو بھی نہیں بھلایا جا سکتا ہے کہ گوتم سے جیسے لوگ بھی اس ملک میں پیدا ہوئے یہ سب تاریخ کی ایک زندہ حقیقت ہے جس سے انکا نہیں کیا جا سکتا ، نظر انداز نہیں کیا جا سکتا - اس ملک میں بڑے لوگ ہی ہیں لیکن ساتھ ساتھ بڑے بڑے شیطان بھی ہیں جن کے خلاف ایکشن لینے کے لئے ہماری حکومت تیار نہیں ہے میری تو اتنی ہی گزارش ہے کہ جو شیطان اس بات کے لئے ذمہدار ہیں ان کی نہ صرف مذمت کی جائے بلکہ ان کے خلاف سخت ایکشن بھی لیا جائیے - مجھے پیس فورس کی بات یاد آتی ہے بہت دنوں سے اس سلسلے کے اندر باتیں چلی ہیں میں نے بھی پرائم منسٹر اور ہوم منسٹر صاحب کو اس بارے میں شکایت بھیجا تھا جس سے ہوم منسٹر اور پرائم منسٹر سہمت ہوئے - میں پھر اس کو سدن میں دوہرانا چاہتا ہوں - مسئلہ صرف پیس فورس اور ایڈی رائٹس فورس کا نہیں ہے ملک کے اندر جتنی بھی فورسیز ہیں چاہے وہ پی - اے - سی - ہو - بی - ایم - پی - ہو یا اسٹیٹ پولیس ہو یا بی - ایس - ایف - یا سی - آر - پی - ہو دیکھ لیجئے بات یہ ہے ہمارے ملک میں کمیونل پرابلم ایک نیشنل پرابلم بن گیا ہے اور اس میں کافی دقتیں پیدا ہو گئیں

[شری سید احمد ہاشمی]

ہو سکتی ہے لیکن حکمران پارٹی کے لوگ اس تاویل کریں - اس کے فریق بن جائیں اس کا دفاع کریں تو یہ انتہائی شرمناک اور قابل مذمت بات ہے اور حکومت اس کے اندر کوئی ایکشن نہ لے یہ اچھی بات نہیں ہے - اگر اپوزیشن اس مسئلہ کو پولیٹیکلائز کرتا ہے تو میں اس سے بھی سہمت نہیں ہوں لیکن ساتھ ساتھ ہمارے دوست جو رولنگ پارٹی میں بیٹھے ہوئے ہیں میں ان سے کہوں گا کہ ان کو بھی اس مسئلہ پر گہرائی اور درد مندی سے سوچنا چاہئے - اس مسئلہ کو وہ بھی پولیٹیکلائز نہ کریں یہ قابل مذمت مسئلہ ہے ہندوستان کی ، ہمارے ملک کی گردن اس طرح کے معاملوں میں شرم سے جھک جاتی ہے جب اس قسم کے واقعات ہوتے ہیں تو وہ کسی کے لئے بھی اچھے نہیں ہوتے ہیں - گیانی جی نے بعض دوستوں کے یہ کہنے پر کہ یہ چوروں اور ڈاکوؤں کا ملک ہے ناراضگی ظاہر کی یہ ٹھیک ہے کہ اس طرح کی باتوں سے ہمارے ملک کی تصویر باہر کے ملکوں میں خراب ہوتی ہے - لیکن اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ اس ملک میں مہا پرش نہیں ہوئے - اس ملک میں بڑے بڑے مہا پرش ہوئے ، فقیر اور صوفی ہوئے اور بڑے بڑے ولی ہوئے - یہیں پر مہاتما گاندھی

جو ٹریننگ بی - ایس - ایف - سی - آر - پی - اور بی - ایم - پی - کو دی جاتی ہیں اس میں ابھی تک کوئی نیشنل آؤٹ لک کی ٹریننگ نہیں ہے ہوم منسٹری کے اندر ایسا کوئی سوال نہیں ہے جو ان لوگوں کو نیشنل آؤٹ لک کی ٹریننگ دے سکے - یہی لوگ جب اپنی ڈیوٹی پر جاتے ہیں میدان میں جاتے ہیں تو ان کا بیہیویر دوسرا ہوتا ہے جس طرح سے ان لوگوں کو ڈیل کرنا چاہئے اس طرح سے یہ ڈیل نہیں کرتے ہیں اور ان میں پکشپات اور جانبداری آ جاتی ہے یہی وجہ ہے کہ پی - اے - سی اور بی - ایم - پی - کافی بدنام ہیں یہی نہیں بہار ملٹری پولیس نے بہار شریف میں خاموشی سے تماش بین کا رول ادا کیا بلکہ میری اطلاع تو یہ بھی ہے کہ بی - ایم - پی - اور پولیس کے لوگ اس فساد میں شامل تھے آپ کہہ سکتے ہیں کہ سب پولیس والے ایسے نہیں ہو سکتے ہیں لیکن پولیس والوں کی ایک بہت بڑی تعداد ایسی ضرور ہے جن کے خلاف آج تک حکومت کچھ بھی نہیں کر سکی بلکہ ان کو ڈیفینڈ کرتی رہی اس نے ان کے خلاف سنجیدگی سے کوئی ایکشن لینے کی بات نہیں سوچی - اس طریقہ سے اگر کلپرٹس کو ہی ڈیفینڈ کیا جائے گا تو یہ مسئلہ کیسے سلجھ سکتا ہے - میں

آپ کا زیادہ وقت نہیں لوں گا - میں ایک مثال دینا چاہتا ہوں پچھلے دنوں مسٹر فاروقی مقیم الدین فاروقی جو حیات اخبار نکالتے ہیں ان کو پروسیکیوٹ کیا گیا - حیات میں انہوں نے اپنی سی - پی - آئی - کے جنرل سیکریٹری شری راجیشور راؤ کی ایک اسپیچ جو کہ کمیونل فورسیز کے اوپر تھی اور جس میں آر - ایس - ایس - کو کریٹیسائز کیا گیا تھا اس تقریر کو انہوں نے حیات میں چھاپ دیا - ان کو اس وجہ سے پروسیکیوٹ کیا گیا کہ آپ فرقہ پرستی کے خلاف کیوں لکھتے ہیں یہ آپ کے دلی ایڈمنسٹریشن کے اندر کا واقعہ ہے - اسی طریقہ سے جن کو آپ نیشنل پریس کہتے ہیں ان کے اندر اگر فرقہ پرستی کی یا بھید بھاؤ کی بات آئے تو ان کو کھلی چھوٹ دی جاتی ہے - دلی کے اندر ہی بہت سے اخبار ہیں جیسے پرتاپ ہے اور جالندھر کا ہند سماچار ہے - ہند سماچار جالندھر سے نکلتا ہے اور پرتاپ دہلی سے نکلتا ہے تو اس طرح کے جو نیشنل ڈیلیز ہیں ان کی آپ اسکروٹنی کریں - آپ کا پریس انفارمیشن بیوریو اتنا بڑا شہر بیٹھا ہوا ہے لیکن پتہ نہیں کہ وہاں کس طرح سے کام ہوتا ہے اور کس طرح سے ہوم منسٹری کے سامنے رپورٹیں آتی ہیں - آج تک ان پیپرس کے خلاف کوئی ایکشن نہیں لیا گیا -

[شری سید احمد ھاشمی]

اگر ایکشن لیا جاتا ھے تو الجمیعۃ کے خلاف لیا جاتا ھے جو فرقہ پرستی کا کنڈ مذیشن کرتی ھے - اس کے خلاف کارروائی ضرور ھوتی ھے - یہاں میں نے ایک مثال دی ھے....(مداخلت)

حیات کی مثال....(مداخلت)

....بیگم صاحبہ آپ کو معلوم نہیں ھے....(مداخلت) میں نے مثال دی ھے پرتاپ کی.. (مداخلت)

श्री सैयद अहमद हाशमी : डिप्टी चैयरमेन साहब मुझे इस सदन में एक बार फिर अफसोस का जहार करना पड़ रहा है कि आज आजदी के 32 वर्षो के बाद भी हम एक ऐसी कौमी बुराई पर बहस करने के लिए मजबूर हो रहे है हम इस सदन को या पूरी कोम को मुतवज्जो करने के लिए मजबूर हो रहे है अगर वाकई हुकूमत जिम्मेदारी के साथ इस बात की तरफ संजीदगी के साथ गौर करती तो मैं समझता हूं कि आज से बहुत पहले इस बुराई का इस फिरक्का परस्ती का खात्मा हो चुका होता । लेकिन यह बात अपनी जगह पर सही है कि यह हो सकता है कि इस सदन में हम कुछ सीरियस तरीके पर कुछ संजीदगी के साथ सोचते हों और संजीदगी के साथ हम कलकुलेशन करके किसी फैसले पर पहुंचते भी हों । लेकिन मैं समझता हुं कि हुकुमत इस फैसले को इम्लीमैंट नहीं करना चाहती । यही वजह है कि जो इतना बड़ा हंगामा मुरादाबाद में हुआ । जिसका मुल्क में हर तरह से कन्डमनेशन हुआ उसका हुकुमत ने यह हल ढूंढा कि एक नेशनल इन्टरग्रेशन कांउसिल कायम कर दो । लेकिन इस नेशनल इंटग्रेशन कांउसिल कायम करने के लिए अंदर भी वह संजीदा नहीं थी और उसका नतीजा यह हुआ कि आज मुरादाबाद की बात खत्म नहीं हुई कि आज हम बिहार-शरीफ को रो रहे है और आज मुझे फिर यह कहना पड़ता है कि चंगेज व हलाकु खान का नाम तो तारीख में आया होगा । और लोगों ने सुना होगा । लेकिन आज उस चंगेज हलाकु खान की रूह शर्मा रहीं हैं । उन फिरक्कापरस्तों, पी०ए०सी० बी०एम०पी० को देखकर जो हिन्दुस्तान में फिरका परस्ती के नाम पर गला काट रहे है लेकिन बावजूद आज भी सूरतेहाल वहीं है जहां पहले थीं । मैं पूछना चाहता हूं मिनिस्टर साहब से कि हमारी प्राइममिनिस्टर वहां गई । देखने के लिए बिहार शरीफ में किसी जरनलिस्ट ने किसी अखबारनवीस ने यह पूछा प्राइममिनिस्टर से कि क्या यह सहीं नही है कि यह एडमिनिस्ट्रेशन का फेलियर है । मतलब है कि यहां का इंतजामिया फेल होचुका है । तो हमारी प्राइम मिनिस्टर ने बहुत टैंशन से गुस्से से चिल्ला कर जबाब दिया नो फेलियर मैं पूछना चाहता हूं अगर यह बात हमारी हुकुमत को और उसके जो जिम्मेदार होम-मिनिस्टर हैं उनको तसलीम नहीं किया यह इंतजामया का फेल्यिर नहीं हुकुमत की नाकामी नहीं ? लेकिन मैं समझता हूं और मेरी इन्फोरमेंशन अपनी जगह पर यह है कि दो सौ या दो सौ से ज्यादा लोग वहां मारे गये । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि हमारे होम-मिनिस्टर साहब अगर फिगर को नहीं मानते । मैं इसको चैलेंज नहीं करना चाहता हूं और मैं इस पर इनसिस्ट नहीं करता । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि 48 की तादाद भी क्या कम है जिसको कि हुकुमत ने तसलीम किया है । क्या यह तादात कम है । और इतना हो चुकने के बाद भी हमारे मुल्क की प्राइम मिनिस्टर यह कहें कि यह फेलियर नही है जबकि पूरी इतलाआत भी उनके इल्म में

t[Devnagari translation].

हों। और अखबार में पूरे तरीके से यह आया भी है वहां पुलिस खड़ी तमाशा देखती रही और उसने कहीं इन्टरवीन नहीं किया कोई इन्टरफियर नहीं किया और कम्युनल कलैशिज होते रहे फिरकेवाराना फसादात होते रहे और उसने कहीं मदाखलत नहीं की और यही वजह है कि हमारे एक साथी ने अभी छः सात दिन के बच्चे की बात कही। जिसे पत्थर पर पटक दिया गया। लेकिन चंद अखबारों की रिपोर्ट यह भी है कि छः और सात दिन के बच्चे से लेकर साल और दो साल के एक नहीं बहुत से बच्चों को उनकी माओं की गोद से छीनकर मारा गया है। और उन्हें कत्ल किया गया है जिसकी कोई इंतहा नहीं है आज मैं भी कहता हूं चैलेंज के साथ कि अगर हुकुमत के पास एक्युरेट फिगर है यकीनन तादाद है तो वह बतायें क्योंकि मेरी इत्तला है कि इसमें दो सौ से ज्यादा लोगों की जानें गई हैं। मैं समझता हूं जिस तरीके से पहले रोज यानि तीस अप्रैल को जो रायट हुए उसमें मरने वालों की फिगर छुपाई गई गई है वह शरमनाक है। एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से सिर्फ 2 तारीख की बात कही गई मुरादाबाद में जब रायट हुए थे उसमें भी यही हुआ। एडमिनिस्ट्रेशन में यह स्ट्रेटजी बना रखी है कि सही फिगर न दी जाये। जितनी कि मालूम हो सके उतनी दी जाये। हम अपनी जुबान से कुछ कहें और कम से कम फिगर बतायें। पहले दिन से यह यह कहा जाता रहा कि सिचुएशन अंडर कंट्रोल लेकिन रोजाना फसादात फैलते रहे बढ़ते रहे और मरने वालों की तादाद में इजाफा होता रहा महज इतनी सेरसी बात कह देने से कि हमने वहां प्यूनिटिव फाइन लगा दिया है और एडमिनिस्ट्रेटिव कन्ट्रोल कर लिया है। एजतमाई जुर्माना लगा दिया है से मामला हल नहीं हो जाता। जुर्माने की की बात को मैं कहता हूं कि सन 78 के अंदर एन्टो रिजर्वेशन एजीटेशन के मौके पर और उसके बाद 1980 के अंदर परसबीघा और पिपरा के अन्दर इस तरह का हादसा हरिजनों के साथ उस वक्त भी बिहार हकुमत ने एदतमाई जुर्माना का एलान किया था और कहा था कि हमलें उनको इतने रूपये देंगे या ये सहूलियत दंगे किन कुछ नहीं आ। और आज भले आपने दस हजार रुपये का एलान किया है इसकी क्या गारंटी है कि इन सब का इम्प्लीमेंट कर दिया जायेगा। और परसबीघा और पिपरा की तरह से यहां पर भी इम्प्लीमेंट नहीं होगा ऐसा मेरा अंदाजा है मैं समझता हूं आपने यह जो एलान किया थोड़ी देर के लिए यह प्रेस में आ जायेगा और लोग समझेंगे कि उनके लिए कुछ हो रहा है और उनके अंदर कुछ तसल्ली भी पैदा हो जायेगी। वरना हकीकत यह है कि जैसा मैंने अर्ज किया कि हुकुमत इस सिलसिले में सीरियस नहीं है मैं एक छोटी सी बात कहता हूं पानी के टैंक में जहर मिलाने की बात कहीं गई। यह खबर कुछ रोज के बाद आज प्रेस में आई है। चार रोज से वहां अफवाहें घूम रही थीं। लेकिन किसी किस्म का एनाउसमैंट या कन्ट्राडिक्सन एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से नहीं किया गया कि ये काम अकलोयतों या माइनोरिटी की तरफ से नहीं किया गया और यह बात बिल्कुल गलत है अगर इस तरह की रिमूमर को फैलाने का मौका दिया जाता रहा तो मैं समझता हूं इससे भी फिर के वाराना दोस्ती की फिजा या मेल मिलाप की फिजा पैदा नहीं होगी। जैसा मैंने अर्ज किया कि कामयूनल एलीमैंट को बचाने के लिए हकुमत ज्यादा दिलचस्पी रखती है। यही वजह है कि आज अखबार के अंदर मकामी सी०पी०आई० की रिपोर्ट है कि असली मुजरिम घूम रहेहैं मैं मंत्री महोदय से कहूंगा कि वह इसको पढ़ें यह कहा गया है। कि आज भी कल-प्रिट जो हैं जो लोग इसके लिए जिम्मेदार है आजादाना घूम रहे हैं। यह कहा

[श्री मैयद अहमद हशमी]

गया है कि सिर्फ पांच पकड़े गये हैं और आर एस एस के वर्कर्स और असल मुजरिम अब तक नहीं पकड़े गये है मैं कहता हूं कि कि क्या होम मिनिस्टर साहब इस बात का एश्योरेंस दे सकते हैं यकीन दिला सकते हैं कि वाकई कलप्रिट होंगें खवाह पीएसी के लोग हों या बी0एम0पी0 के दंगा करने वाले फिरकापरस्त हों उनको मौत की सजा दी जायेगी। वह सोसायटी के मुजरिम है समाज के मुजरिम है एक कत्ल पर आप कहते है कि इसकी सजा मौत हो सकती है लेकिन मैं पूछता हूं कि हिन्दोस्तान में 32 वर्षों में आज तक भी वाकया है जिसमें किसी कलप्रिट को किसी मुल्जिम को सजा दी गई हो। मेरी इतला है कि कोई सजा नहीं दी गई जैसा कि आज हमारे होममिनिस्टर ज्ञानी जैल सिंह ने फरमाया कि अंदाजा है कि बाज आफिसर्स भी इसमें इनवोल्व हैं उसके अंदर उनका भी हैंड है लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि क्या उन आफिसरस को जितना इसमें इनवोल्वमैंट है किसी किस्म की सजा मिलेगी या वह कलप्रिटस जो इसमें इनवाल्व है जिम्मेदार है क्या उनको मौत की सजा दी जायेगी। ऐसे कलप्रिट जो कत्ल और मौत के जिम्मेदार हों सोसायटी के मुजरिम है अगर आप उन को मौत की सजा नहीं दे सकते तो मैं यह कहूंगा कि आप इस सिलसिले में सीरियस नहीं है खालो आपका यह नारा है। धोखा धोखा है इससे कोई फायदा नहीं है। इसके साथ ही मैं कहूंगा कि मुझे यन्तहाई तकलीफ होती है इस बात की ये प्रसादकम्युनल रायट नेशनल प्रोबलम हैं एक कौमी मसला हैं हस सिलसिले के अंदर अपोजिसन की राय अलग हो सकती है लेकिनहुकमरान के लोग उसकी तावील करें इसके फरीक बन जाय उसका दफा करें तो यह इंतहाई शर्मनाक और नकाबिले मजम्मत बात है और हुकुम्मत इसके अंदर कोई एक्शन न लें यह अच्छी बात नहीं है। अगर अपोजिसन इस मसले को पोलिटिकलाइज करता है तो मैं इससे सहमत नहीं हूं लेकिन साथ-साथ हमारे दोस्त जो रूलिंग पार्टी में बैठे हुए मैं उन से कहूंगा कि उनको भी इस मसले पर गहराई से और दर्दमंदी से सोचना चाहिए। इस मसले को वो भी पोलिटिकलाइज न करें यह काबिले मजमत मसला है हिन्दोस्तान की हमारे मुल्क की गर्दन इस तरह के मसलों में शर्म से झुक जाती है जब इस किस्म के वाकियात होते हैं तो वह किसी के लिए भी अच्छे नहीं होते हैं। ज्ञानी जी ने बाज दोस्तों के ये कहने पर कि यह चारों और डाकुओं का मुल्क है नाराजगी जाहिर की यह ठीक है कि इस तरह की बातों से हमारे मल्क की तस्वीर बाहर के मल्कों में खराब होती है। सूकिन इसका मतलब नहीं है कि इस मुल्क में महा पुरुष नहीं हुए। इस मुल्क में बड़े-बड़े महापुरुष हुए फकीर और सूफी हुए और बड़े-बड़े वली हुए यहां पर महात्मा गांधी भी पैदा हुए लेकिन इस बात को नहीं भुलाया जा सकता कि गोडसे जैसे लोग भी इस मुल्क में पैदा हुए यह सब तारीख की एक जिंदा हकीकत है जिसे हल्का नहीं किया जा सकता नजरअंदाज नहीं किया जा सकता इस मुल्क में बड़े नेक लोग भी हुए हैं लेकिन साथ-साथ बड़े-बड़े शैतान भी हैं जिनके खिलाफ एक्शन लेने के लिए हमारी हुकुम्मत तैयार नहीं है मेरी तो इतनी ही गुजारीश है कि जो शैतान इस बात के लिए जिम्मेदार हैं उनकी न सिर्फ मुजमत की जाये बल्कि उनके खिलाफ सख्त एक्शन भी लिया जाए।

मुझे पीस फोर्स की बात याद आती है बहुत दिनों से इस सिलसिले के अंदर बातें चली हैं मैंने भी प्राइम मिनिस्टर और होम मिनिस्टर साहब को इस बारे में सजैशन भेजा था । जिससे होम मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर सहमत हुए । मैं फिर उसको सदन में दोहराना चाहता हूं । मसला सिर्फ पीस फोर्स और एन्टी रायट फोर्स का नहीं है मुल्क के अन्दर जितनी भी फोरसेज हैं चाहे वो पी ए सी हो पी एम पी हो या स्टेट पुलिस हो या बी एस एफ या सी आर पी हो देखने की बात यह है हमारे मुल्क में कम्युनल प्रोब्लम एक नेशनल प्रोब्लम बन गयी है और उसमें काफी दिक्कतें पैदा हो गई जो ट्रेनिंग बी एस एफ सी आर पी और बी एम पी को दी जाती हैं उसमें अभी तक नेशनल आऊट लुक की ट्रेनिंग नहीं है होम मिनिस्ट्री के अंदर ऐसा कोई सैल नहीं है जो इन लोगों को नेशनल आउट लुक की ट्रेनिंग दे सके । यही लोग जब अपनी ड्यूटी पर जाते हैं मैदान में जाते हैं तो उनका बिहेवियर दूसरा होता है । जिस तरह से उन लोगों को डील करना चाहिए उस तरह से यह डील नहीं करते हैं और उनमें पक्षपात और जानिबदारी आ जाती है यही वजह है कि पी ए सी और बी एम पी काफी बदनाम हैं । यही नहीं बिहार मिलिट्री पुलिस ने बिहारशरीफ में खामोसी से तमाशबीन का रोल अदा किया बल्कि मेरी इत्तला तो यह भी है कि बी एम पी और पुलिस के लोग इस फसाद में शामिल थे आप कह सकते हैं कि सब पुलिस वाले ऐसे नहीं हो सकते हैं लेकिन एक पुलिस वालों की एक बहुत बड़ी तादाद ऐसी जरूर है जिनके खिलाफ आज तक हुकूमत कुछ नहीं कर सकी बल्कि उनको डिफैंड करती रही उसने उनके खिलाफ संजीदगी से कोई एक्शन लेने की बात नहीं सोची इस तरीके से अगर कलप्रिटस को ही डिफैंड किया जाएगा तो यह मसला कैसे सुलझ सकता है मैं आप का ज्यादा वक्त नहीं लूंगा । मैं एक मिसाल देना चाहता हूं पिछले दिनों मिस्टर फारूकी मुकीमुद्दीन फारूकी जो 'हयात' अखबार निकालते हैं उनको प्रोसीक्यूट किया गया । 'हयात' में उन्होंने अपने सी पी आई के जनरल सेक्रेट्री श्री राजेश्वर राव की एक स्पीच जो कि कम्युनल फोरसिज के ऊपर थी और जिसमें आर एस एस को क्रिटीसाइज किया गया था उस तकरीर को उन्होंने 'हयात' में छाप दिया । उनको इस वजह से प्रोसीक्यूट किया गया कि आप फिरका परस्ती के खिलाफ क्यों लिखते हैं यह क्या आपके दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन के अंदर का दाकया है । इसी तरीके से जिनको आप नेशनल प्रेस कहते हैं उनके अंदर अगर फिरकापरस्ती की या भेद-भाव की बात आये तो उनको खुली छूट दी जाती है। दिल्ली के अंदर ही बहुत से अखबार हैं जैसे 'प्रताप' है और जालन्धर का 'हिंद समाचार' है 'हिन्द समाचार' जालंधर से निकलता है और 'प्रताप' दिल्ली से निकलता है तो इस तरह के जो नेशनल डेलीज हैं उसकी आप स्क्रटनी करें । आप का प्रेस इनफोरमेशन ब्यूरो इतना बड़ा शेर बैठा हुआ है लेकिन पता नहीं कि वहां किस तरह से काम होता है और किस तरह से होम मिनिस्टरी के सामने रिपोर्ट आती हैं । आज तक इन पेपरस के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया गया । अगर एक्शन लिया जाता है तो अलजमायेत के खिलाफ लिया जाता है और जो फिरका परस्ती का कन्डैमनेशन करता है उसके खिलाफ कार्यवाही जरूर

होती है यहां मैंने एक [मिसाल दी है (व्यवधान)

हयात को मिसाल (व्यवधान) बेगम साहिबा आप को भालूम नहीं है (व्यवधान) मैंने मिसाल दी है प्रताप, की ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order please.

شری سید احمد ہاشمی : اس بات کے اوپر ہماری نیشنل پرابلم میں فرقہ پرستی کے مسئلہ پر ہیں اچھا نہیں لگتا ہے کہ حکمران پارٹی کے لوگ اس انداز کے اندر دفاع کریں - اس کو ڈیفینڈ کریں اس کی تاویل کریں - یہی وجہ ہے کہ آج ایٹہ کے اندر کیا ہو رہا ہے "بہامئی" کے اندر کیا ہوا اس لئے پکشپات کرنے سے کچھ نہیں ہوگا - ایڈمنسٹریشن کو ڈیفینڈ کرنے سے کچھ نہیں ہوگا - آج ایٹہ میں ۲۲ ہریجنوں کو —

†[श्री सैयद अहमद हाशमी : इस बात के ऊपर हमारी नेशनल प्रोबलम में फिरकापरस्ती के मसले पर है अच्छा नहीं लगता है कि हुकमरान पार्टी के लोग इस अंदाज के अन्दर दिफा करें । इसका डिफेंड करें इसकी तामील करें । यही वजह है कि आज एटा के अन्दर क्या हो रहा है। "बहामई" के अन्दर क्या हुआ इसलिए पक्षपात करने से कुछ नहीं होगा । एडमिनिस्ट्रेशन को डिफेंड करने से कुछ नहीं होगा । आज एटा में 22 हरिजनों को]

श्री उपसभापति : वह अलग चीज है । इसको छोड़िए ।

شری سید احمد ہاشمی : میں ختم کر رہا ہوں اپنی بات لیکن میں عرض کروں کہ —

†श्री सैयद अहमद हाशमी : मैं खत्म कर रहा हूं अपनी बात लेकिन मैं अर्ज करूं कि —]

श्री भा० दे० खोबरागड़े : एक ही सेंटेंस में खत्म कर दिया जब हरिजनों का मामला आया ।

شری سید احمد ہاشمی : اگر اس چیز کو اس طرح سے ڈیفینڈ کیا گیا تو میں یہ کہوں گا کہ حکمران پارٹی لاشوں کی سوداگری کے علاوہ دوسرا کام انجام نہیں دے سکتی ہے - اتنا کہکر میں اپنی بات ختم کرتا ہوں -

†[श्री सैयद अहमद हाशमी : अगर इस चीज को इस तरह से डिफेंड किया गया तो मैं यह कहूंगा कि हुकमरान पार्टी लाशों की सौदागरी के अलावा दूसरा काम अंजाम नहीं दे सकती है इतना कह कर मैं अपनी बात खत्म करता हूं] ।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, the hon. Member has said many things in anger.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has made observations.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: They are his olwervations, but he has not made the right observations. The Prime Minister visited the place because she felt that it is very bad and she should go there as her visit will create some impression on the State Government and on the people also. Therefore she visited the place and

t[ ] Devanagari translitration.

met the people. She consoled them aad declared lome relief also.

SHRI ABDUL REHMAN SHEIKH: Nobody has objected to that.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: No, no, the hon. Member has commented on the visit of the Prime Minister. I do not understand how he reacts to the visit of the Prime Minister.

Sir, the hon. Member has raised one point—that those who are responsible for this should be punished with the sentence of death. Now it is not in the hands of the Government. Ultimately it is the judiciary which will decide the faut of the culprits.

شری سید احمد ہاشمی : آج تک
سارے کمیشنوں کا معاملہ یہی ہے
کچھ نہیں ہو سکتا ہے - سارے کمیشن
بنے سب غلط اور جھوٹے ہو گئے -

†[**श्री सैयद अहमद हाशमी** : आज तक सारे कमीशनों का मामला यही है कि कुछ नहीं हो सकता है । सारे कमीशन बने सब गलत और झूठे हो गये ।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I do not understand the logic behind it. I do not understand his mind also. So far as the poisoning of the drinking water is concerned, the water was tested at Patna and the rumour was found to be false. There is no truth in that rumour.

شری سید احمد ہاشمی : میرا
پوائنٹ یہ ہے کہ (مداخلت) جب
ریومر تھی تو اس ریومر کو روکنے کی
کیا کوشش کی گئی -

t[ ] Devanagari translitration.

†[**श्री सैयद अहमद हाशमी** : मेरा पाइंट यह है कि (व्यवधान) जब रयूमर थी तो उस रयूमर को रोकने की क्या कोशिश की गई ।]

SHRI YOGENDRA MAKWANA: So far a* the death toll is concerned, it is already given in my statement tkat 47 persons were killed and *8 were injured. Sir, the figure could change if there are more casualties, but at present the information which we have received from the State Government is only about 47 persons. I think no other question was raised by the hon. Member.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Dinesh Goswami *(Interruptions)* Order please.

شری سید احمد ہاشمی : ہوم
منسٹری کے اندر ٹریننگ کے لئے کوئی
سپیل کری ایٹ کیا جائے گا -

†[**श्री सैयद अहमद हाशमी** : होम मिनिस्ट्री के अंदर ट्रेनिंग के लिए कोई सेल क्रियेट किया जायेगा ।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, the entire training programme is now reoriented and the syllabus is also changed. We are giving more emphasis on human realtions, psychology etc. Whatever the hon. Member has suggested, I have taken note of it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Dinesh Goswami.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Only one question.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let your change come.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Only half a minute.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: In deference. . .

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You know that in Calling-Attention nobody can stand up. There are already seven or eight names pending. I cannot call any other person.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: 1 am only pointing out that this is the second time. . . .

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This will not go on record.

(Shri B. D. Khobragade continued to Speak).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It will not go on record. Shri Dinesh Goswami.

SHRI DINESH GOSWAMI (Assam): Mr. Deputy Chairman, Sir, I am rather anguished that in a debate in which wea re discussing communal disturbances in which 47 persons—according to the official estimation— have lost their lives, the debate ought to have been in a slightly more seri-oug atmosphere and should have been free from party angularities. On the contrary we have seen verbal duels between the ruling party and the Opposition. That cannot really help in any way in the easing of the situation if we debate matters in the atmosphere in which we have discussed them so far. Though, Sir, the ruling party has tried to defend the Administration, there are points which show that the Administration was definitely guilty of lapses. I am not one who will say that the Prime Minister ought to have postponed her visit to the foreign countries, because if the Prime Minister would have postponed her visit that would have given a handle to thos^e forces which want to malign our country that the situation in the country was such that the Prime Minister could not go abroad. But, Sir, it is not only Biharsharif. Today Bihar-sharif is not an isolated incident. The intensity of communal disharmony is growing on in this country. The hon. Minister has said tnat because two persons entered into a drunken brawl, the whole trouble started! It beats my comprehension as to how such a massive communal disturbance may take place simply because two persons entered into a drunken brawl, unless there was tension, misunderstanding and mistrust in that area long before thi» brawl took place. And the Administration shall have to bear the guilt that in spite of the fact that there was tension, there was misunderstanding, there was mistrust, they could not take preventive steps or, did not even inform the Central authorities that the situation was explosive. I would like to know from the hon. Minister whether such tension was there, whether such misunderstanding was there, whether such mistrust was there and, if so, what was the reason as to Why the Government could not anticipate it. The trouble, according to official sources, started on 30th April, 1981 at 4.30 p.m. The curfew was clamped on the 1st of May, 1981 at 5 a.m. Twenty-four hours lapsed. I would like to know what is the reason why there was a delay of 24 hours in the clamping of the curfew—according to your own statement. Sir, as I see it, today we must also discuss some broad questions on communal harmony. I may be wrong, but my own feeling is that it is time to express that in this country there is a gradual polarisation in the society between communities. We are making the minorities aware that they are minorities, and the majority is aware that they belong to majority community, with the result that there has occurred a uieavage between majorities and minorities. In this country if we are to get rid of this type of

communal distui*W9S»e?rthe minorities must not feel as a minority but as part and parcel of the Indian society, and the majority must not consider themselves as majority but also a part and parcel of the Indian society, and that is the basis on which the Congress philosophy was based. Unfortunately, in the present political system there has only been fragmentation of the society. I am not accusing the ruling party, 1 am not accusing the Opposition. I am accusing myself;

'e are all guilty that many of us are •ying today to project ourselves as ;aders of a minority group or a maj-rity group and while trying to pro-jet thus, we are creating a gradual leavage, and whenever a cleavage ikes place between trie majority and le minority, the minority, because of neir number—whether they are Mus-ms or Scheduled Castes and Hari-ans—they suffer. And this was the iew expressed even by Pandit Jawa-arlal Nehru and, therefore, Sir, a ethinking must set in the mind of veryone as to how we can reverse his process. A Calling Attention does ot give us this opportunity. Probably national dialogue for this shall have 0 start. On the question of the police idministration, allegations have been lade from the Opposition, and even ometimes from the ruling party, that *he* police administration does not be-Lave impartially in such types of dis-urbances. The Home Minister has ightly said that constant accusation 'f the police force demoralizes them. ?hat is also true. But how is it that ven during the British rule when they ried to divide us community-wise, uch accusation against the police was lot there? It is very difficult to say hat the Opposition is accusing the iblice merely because of political mo-ives. Is it because we have used the iolice—all the parties together*—for iolitical purposes and have not kept he police above politics? Is it because ntegrity and independence in the aw-keeping forces have often been ubstituted by sycophancy and also iliability with the result that the poke has not been able to behave as ndependently and with as much in-egrfty as we expect them to behave? s it because that there is a lack of onfldence in the police administration tself that even if they take action ometimes, the honest police officers iuffer at the hands of unscrupulous

iolice offiuers or politicians with he result that there is a tendency in ill walks of life to avoid responsibili-y? Whether it is communal disturban-:es or disturbances of other nature, lobody wants to take responsibility. And that is why the administration suffers.

My pointed cjuestion to the hon. Minister would be: Was there any tension in this area? Was there some sort of mistrust or suspicion; if so, since wheD and why? Why is it that the Government could not anticipate that there was tension, because it occurs to me that unless some sort of tension or mistrust was there, merely because of drunken brawl the incident could not have taken place? Is it that the Government could not anticipate because the intelligence machinery failed? Why was there delay in imposition of curfew? And is it not that the administration has failed to take anticipatory prevantive action and also punitive action? These are the four points.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, the hon. Member has rightly said that the police is rather demoralized and also misused by some political parties; may be correct; it is a matter of judgment. But it is a fact that the police nowadays is condemned at various places for being partial. But, in this case, so far the reports which I have received show that there was inactivity of the police for sometime, may be considered as partial. But when the judicial inquiry is now announced, all matters will come out in the course of the judicial inquiry. Sir, I do not want to defend the administration on this point particularly. But, as I said, the inquiry is now announced, it will investigate and find out why all these things happened. As regards the delay in clamping of curfew, after the two incidents took place, the Government imposed the curfew. But that also is a matter of inquiry as to why there was some delay, though it was a delay for a short period. So all these points which the hon. Member has raised are all matters of investigation and inquiry. Things will be found out in the course of the judicial inquiry which is announced.

SHRI DINESH GOSWAMI: I asked you a question: Was there tension,

[Shri Dinesh Goswami]

mistrust and suspicion; if so, since when and why?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: So far as tension, mistrust etc. is concerned, the incident itself suggests that there may be some tension or there may be some mistrust among both the communities. It is very very difficult to say whether it existed there or not or how long it existed there.

SHRI P. RAMAMURTI: Sir, my friend, Mr. Goswami, has correctly hit the point, and I do not want to dilate on that. But the main question is that this incident, this riot, could not have happened because of the incident of the drunken brawl between two persons.

[THE VICE-CHAIRMAN, (SHRI DINESH GOSWAMI) *in the Chair]*.

It is known, Sir, that long efore that, just by the side of the Kabristan a Hindu temple was put up. This is the propaganda that is going on in this country. An atmosphere of Hindu *rashtra.* then Islamic revolution, this kind of atmosphere, is being created in this country, and this is today creating a situation in which the integrity and the unity of the country is at stake. But there comes the responsibility of the administration. When the Hindu temple was tried to be put up there, why is it that the Bihar Government did not think it fit to stop the putting up of the Hindu temple there and prevent the animosity growing between the two communities? That is the first question.

Secondly, with regard to the administrative lapse there, I only want to read some editorial comments in the "HINDU" of Madras, which is the most respected paper in the country and about which nobody can say that it is biased in any way. Mr. Mak-wana, for your information, please listen. This is what the "HINDU" says:

> "(This event) clearly demonstrates one or two things: the present Government is incapable of maintaining order or its writ simply does not run. Dr. Jagannath Misra is the Chief Minister not by virtue o.f his unassailable position in the ruling party, but because Mrs. Gandhi is not averse to letting him continue in that position. And in order to get over dissidence within the party and to keep his henchmen happy, he has been adopting ever since he assumed power all means—fair and foul. That, in fact, seems to be his— or, for that matter, his colleagues'--main business and the many trans, fers of senior officials from one position to another, not dictated by considerations that have a bearing on administrative needs or efficiency, indicate what the top political brass is up to. If the Chief Minister would like the key departments to be manned by his men, it is this that has set the ball of demoralisation in the Services rolling."

This is an unbiased paper, the "HINDU". In 16 months of his coming to power seven mass transfers have taken place, and the recent transfers of 40 officers have taken place These are things which cannot be denied. I want to know under these circumstances what the morale of th« administration is. As a matter of fact our people who had gone there, found that if the police had acted when *i* mosque was being demolished just *1* stone's throw from the police statior instead of keeping quiet, if the polict had acted in. time at that time, manj of these things could have been stop ped. It is also a fact that a villagf nearby was attacked, and both th< Hindus and the Muslims joined to gether and resisted the attackers, bu the police demoralised them. This i: also a fact. Despite the Hindu-Muslin unity that was there, these things hap pened. No greater indictment of th< Government can be there. The *ad* ministration has collapsed.

The Chief Minister is indulging ii just putting his men. If this is hi main interest and he goes on transfer

ring people from time to time and mass transfers have taken place within the course of 16 months, what will the officers do? He says, "What am 1 to do? I do not know what 1 will be tomorrow." This is the position. This is what you are trying to do.

Similarly, somebody criticises the police, they do not take it seriously. Mr. Hashmi mentioned about it. But he does not know the full facts. The facts are that Mr. Rajeshwara Rao, General Secretary of the CPI criticised the role of the PAC in Muradabad. And his statement was published in the "Hayat". And action is taken aga inst the Editor of that paper under section 124A. Section 124A is about creating disaffection against a Govern ment established by law. It is a won derful thing. If I criticise a police offi cer, if I criticise police action, your Government takes action against me, as if the police is the Government. If this is the attitude..... \

SHRI B. V. ABDULLA KOYA (Kerala): Those people who are actually doing relief work are put in jail.

SHRI P. RAMAMURTI: Action is taken against these people. If this is the attitude of the Government, that no criticism of the police should be made, then how do you expect at all to see that the police is going to behave? So these are the specific questions. Here is a Government which does not function. The administration has collapsed. There is no proof necessary for that. The mass transfers that are taking place day after day are the proof. His henchmen alone must be in key positions. This is the work that Mr. Jagannath Mistra has been indulging in all these years. And the proof is the comment of a paper like the *Hindu* which you cannot accuse of bias. *(Interruptions)* Seven mass transfers have taken place. In no other State has such a thing taken place. So, does the Central Government propose to intervene and put an end to this kind of demoralisation in the administrative service so that this problem can be solved? Lastly I also want to know whether the Gov-

was o_n h_e Prime Minister's life— of all the secular forces in this coun try in order to do a tremendous poli tical, ideological propaganda in this country against the terrific communal propaganda that is going on in the name of "Hindu Rashtra".....

SHRI BHUPESH GUPTA: National Integration Council.

SHRI P. RAMARURTI: We know what happens in the National Integration Council. In the National Integration Council last time my resolution was adopted, but no action was taken. I know what will happen there. Now I am asking a serious question. In this country this kind of propoganda is going on in the name of "Hindu Rashtra" and in the name of "Islamic Revolution". We have to rouse the common people of this country to fight against this propaganda. Ultimately I know the Government will not be able to fight it. Unless the common people of this country are roused against this propaganda, this country will be divided. Therefore, is the Government prepared to come forward with concrete measures to enlist the support of all secular forces in this country for a joint propaganda and compaign in the whole country against all these divisive ideologies and laying emphasis on the unity and integrity of the country? 1 do not want to say about the foreign forces. Trou also say somtimes that foreign forces pre there. But you cannot take action against them. You are depending upon those foreign countries. You go to them begging for money. Therefore, you cannot take action against thtm. Therefore, ar# you prepared to enlist the support of all the secular forces for a tremendous joint campalgm, ideo-gically and politically, against this virus of communalism? That is all.

SHRI BHUPESH GUPTA: Here I hope you will make it clear as to why a meeting of the standing committet of the National Integration Council which has only 15 members is not being called.

SHRI YOGENDRA MAKAWANA: Before I reply to the hon. Minister, I

[Shri Dinesh Goswami]

would like to point out that Mr. Dinesh Goswami in his speech said that the curfew was imposed at 5 p.m. But in my statement it is very clear that the indefinite curfew was imposed at 5 a.m.

SHRI P. RAMAMURTI: 1 did not ask about that.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I am clarifying the position regarding the question of the previous speaker. That was on the 1st of May, 1981. Sc there is a gap of a few hours which I am sure will be looked into as to how it happened. Sir, I cannot agree with the hon. Member when he says that the administration has totally collapsed. ^There may be some administra- j tive lapse here and there, but that 1 does not mean that the total adminis-tration has collapsed. And when the inquiry is instituted, it will be found out as to who are the officers who are [responsible for this and who has not acted promptly. Sir, the question or the matter on which the incident took place is also a subject matter of investigation. So far as transfers are concerned, it is a normal administrative matter that transfers take place whenever they are necessary. But it does not mean that transfers always demoralise the officers. On the contrary, sometimes in order to streamline the administration transfers are essential.

The last and the final thing is a good suggestion from the honourable Member, about mobilising secular forces in this country. I would lik° to inform this House that in the National Integration Council a communal harmony committee was also formed. One meeting of this committee already took place. In that committee several suggestions are floated by members, from Opposition as also from this side. All these recommendations wul be considered and necessary action will be taken in the light of those recommendation in order to mobilise the secular forces...

SHRI BHUPESH GUPTA: There are three sub-committees of the National Integration Council: one is a standing committee of fifteen members, consisting of a number of Chief Ministers, leaders of Opposition, and Mr. Zail Singh is the chairman. I would like to know why that committee is not being called to meet...

SHRI B. D. KHOBRAGADE: It was called only last week.

SHRI BHUPESH GUPTA: I do not know; up to now it has not been called. Mr. Zail Singh should call it. We can discuss how we should run a campaign, how public opinion should be mobilised. On that committee all the political parties at the topmost level are represented, plus Chief Ministers and Central Ministers. Mr. Zail Singh is the president of that committee. Why is it not being called? I do not know why. As a member of that committee I have to make an appeal from the floor of the House that the committee should be called to meet.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: There are two committees: One *U* a communal harmony committee and the other is a committee on education. Now, a meeting of the communal harmony committee has already taken place. A meeting of the 3econd committee is scheduled to take place. After the meeting cf the two committees, an agenda will be formed for the Standing Committee, and th$_e$ Standing Committee will be called and all these things wiil be discussed there and necessary action will be taken.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): Now Mr. J. P. Mathur.

SHRI NAGESHWAR PRASAD SHAHI: (Uttar Pradesh): Point of order. All the work of the Home Ministry is done by Mr. Makwana. And yet he is only a Minister of State…

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): No, no, this will not go on record. Now, Mr. J. P. Mathur, you please ask your questions for clarification.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: (उत्तर प्रदेश) : मैं शाही जी की बात से सहमत नहीं हूं, लेकिन मेरी शुभकामनाएं मकवाणा साहब के साथ हैं कि वे केबिनेट मिनिस्टर बन जायें ।

श्रीमती सरोज खापर्डे: आप की शुभकामनाओं की जरूरत नहीं है ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप को नहीं बना रहा हूं ।

श्रीमती सरोज खापर्डे: आप की शुभकामनाएं हमारे लिए बड़ा खतरा साबित हो जायेंगे ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI) :«pr^gr*wmn7

it will put him in difficulty. . .

SHRI BHUPESH GUPTA: We would not associate ourselves with my friend's-observation. They have other considerations as to who should be what. I would not agree.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: My wishes are there for him to become Chief Minister of Gujarat.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): We are not discussing as to who should be what. . .

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही: हरिजनों के साथ यहां पर अन्याय होगा तो बाहर क्या होगा ? धर्मवीर को हटा कर दूसरे ब्राह्मण को बिठा दिया गया ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): We are discussing a serious subjecvt and i don't think individuals should be brought into the discussion. Let us discus* the subject in a serious atmosphere. "ies, Mr. Mathur.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मैं देवियों से प्रार्थना करता हूं कि वे शान्त हो जायें । बड़े दुख की बात है कि आज हम लोग फिर सांप्रदायिक दंगों के विषय में बहस कर रहे हैं मैं मकवाणा साहब की बात से और आप की बात से भी सहमत हूं कि हम इस विषय पर गंभीरता से विचार करें तो अच्छा होगा । लेकिन कहीं न कहीं गम्भीरता टूट कर राजनीति बीच में घुस आती है । मैं उस राजनीति को और बढ़ाना नहीं चाहता, चाहे हमारे विरोध में बैठे या इधर बैठे हुए लोग उस को बढ़ाने के इच्छुक हों ।

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : आप तो आग लगा ही रहे हैं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: **
(Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): The words ised by Mr. Mathur will not go on record. 1/ the Members are not willing to discuss the subject seriously 1 will stop this Calling Attention discussion.

SHRI ABDUL REHMAN SHEIKH: No, no.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh): Members have a right to discuss it.

THE VICE-CHAIRMAN: As the Vice-Chairman, I have a right to regulate the proceedings of the Hou*e. 1 have made an appeal and I will again request Members to kindly come to the subject and avoid personal references to one another. Kindly come to the subject because still there are quite a number of Members who are wanting *to* discuss the subject. You can have a fruitful discussion avoiding controversies, except where they are not avoidable. I will request the Members of the ruling party also. . . .

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मैंने तो गंभीरता से कहा है लेकिन मिश्र जी ने बात को बिगाड़ दिया ।

"♦Expunged as ordered by the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN rSHRI DINESH GOSWAMI); I aiso request the ruling party Members not to intervene. You have made certain allegations and he has a right to reply to them. Otherwise, if the House i_s not interested, what alternative as a Vice-Chairman I have got except to postpone it?

SHRI RAMANAND YADAV: On a point of order.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि मिश्र जी की किसी *बात का मैं जवाब नहीं दूंगा ।

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : आप * है। * बात करते हैं । (**व्यवधान**) राजकिशोर जी कौन हैं । आप * बात करते हैं (**व्यवधान**) इंक्वायरी का हमारे मुख्य मंत्री ने ऐलान किया है । (**व्यवधान**) इतिहास साक्षी है (**व्यवधान**)

THE VICE-CRAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMY): He is on a point of order.

श्री रामानन्द यादव : मेरा प्वांइट आफ आर्डर है । माथुर जी ने एक शब्द का व्यवहार किया , * शब्द का उन्होंने व्यवहार किया । यह असंसदीय है । इसको प्रोसीडिंग्स से निकाल दिया जाना चाहिए ।

THE VICE-CRAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMY): I will look into it and see whether it is unparliamentary. If it is unparliamentary, it will be removed.

SHRI B. D. KHOBRAGADE Whic word is he objecting to?

कौन से शब्द को वह रेफर कर रहे हैं?

I would like to know ai a Mamber of the House to what word he i« objecting as unparliamentary. You please give your ruling.

THE VICE-CRAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMY): He is objecting to a word. It is for the Reporters. If this word is considered unparliamentary, it will be expunged.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मिश्र जी के पास मौलाना बैठे हैं । वह जानते हैं कि वह क्या है वह बता दें ।

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: TheTe is difference between interpretations.

THE VICE-CRAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMY) I said I will go through the proceedings.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : श्रीमन्, बड़ी गंभीर बात है । मैं इस में राजनीति नहीं लाना चाहता । हमारे मित्र लायें हैं लेकिन दुख का विषय है कि हमको बार बार इस सदन में इस पर बहस करनी पड़ रही है । मैं जानता हूं कि साम्प्रदायिक दंगे हमारी बहस करने से खत्म नहीं होंगे क्योंकि कहीं न कहीं जहर दिमागों में बैठा हुआ है । मेरे साथी राममूर्ति ने भी कहा और उधर से भी कई लोगों ने कहा ,बात सही है कि झगड़ा सिर्फ एक शराब की दुकान पर झगड़ा होने से पैदा नहीं होता जब तक की कोई न कोई पृष्ठभूमि न हो । पृष्ठ-भूमि कोई न कोई रही होगी मुझे इसकी पूरी जानकारी नहीं है । जब झगड़ा होता है तो उसके तीन हिस्से होते हैं । एक झगड़े से पहल, दूसरा झगड़े के दौरान और तीसरा झगड़े के बाद। जब हम लोग बहस करते हैं तो सरकार जब जवाब देती है। झगड़े के दौरान क्या हुआ क्या हो रहा है उसका जिक्र विरोधी दल के लोग करते हैं और कहते हैं कि प्रशासन विफल हो

* Expunged as ordered by the chair.

गया । सरकार कहती है कि निष्फल नहीं हुआ हम ने पी० ए० सी० भेज दी है । सब जानते हैं कि जब आग लगती है तो उसको बुझाने के लिये सब दौड़ते हैं, बात सही है । लेकिन आग क्यों लगी और लगने के बाद जब बुझायी जाएगी तो दुबारा फिर न लगे इसके लिए प्रयत्न किया जाए, ये दो तीन पहलू हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिये । बिहार शरीफ में एक दो बार गया हूं इसलिये उसका थोड़ा सा नक्शा समझता हूं । यह बात सही है, जैसा राममूर्ति जी ने कहा कि बिहार शरीफ में टेंशन है और यह टेंशन कई दिनों से चली आई है । इसके कारण कई हैं । कब्रिस्तान की बात कही गई और दूसरी बात यह है कि हमारे देश में कई क्षेत्र क्रिमिनल हैं, अन्य प्रदेशों में भी बहुत से एरिया क्रिमिनल हैं । बिहार शरीफ एक क्रिमिनल एरिया है । इट इज ए फैक्ट । इससे भी साबित होता है जैसा कि अभी गृह मंत्री ने बताया कि एक घर से/ पांच क्विन्टल एक्सप्लोसिव मेटेरियल मिला । पांच क्विटल एक्सप्लोसिव मेटोरियल एक मकान से कब और कैसे मिला यह बात मालूम करने की है । यह कोई मामूली बात नहीं है । 4 किलो पांच किलो मिलता तो यह समझा जाता कि शायद कोई आदमी ले आया होगा । लेकिन किसी एक मकान में 5 क्विटल एक्सप्लोसिव मेटोरियल जमा हुआ तो विचारनीय है कि क्यों हुआ, कैसे हुआ । सब जानते हैं कि उस इलाके के अंदर नाजायज हथियार बनाये जाते हैं, और बेचे जाते हैं । नाजायज हथियारों को बचने का धंधा कैसे चलता है गृह मंत्री जी इसमें आप की पुलिस के लोगों का मेलजोल भी है या नहीं सब जानते हैं कि जहां जहां क्रिमिनल एरियाज हैं, वहां जितने गैर कानूनी हथियार आते हैं, बनाये जाते हैं या बेचे जाते हैं उसमें पुलिस के लोगों का हाथ होता है । उसमें उसकी पत्ती होती है, वह पैसा खाते हैं । आवश्यकता इस बात की है कि इस इलाके के जो क्रिमिनल हैं हम उनकी रोक थाम दंगे होने से पहले कैसे की जाये । पहली बात मैं यह कहूंगा, जो गृह मंत्री जी ने कहा कि पांच क्विटल एक्सप्लोसिव मेटिरियल पकड़ा गया तो कब, कैसे, क्यों और कौन लाया और इसमें पुलिस का हाथ है या नहीं । इस बात का पता करें । दूसरी बात यह कहूंगा कि आदतन मुजरिमों का पिछला इतिहास देखा जाए । जो वहां से रेगुलर क्रिमिनल हैं उनकी हिस्ट्री देखी जाए । व हिन्दु हैं, मुसलमान हैं, जनसंघ के हैं, आर० एस० एस० के लोग हैं या सी० आई०, कांग्रेस (आई) या किसी राजनीतिक दल से संबंध रखते हैं, इस सब को देखा जाए । या पर नजर रखी जाए । बाद में क्या होगा ? (समय की घंटी) । बाद पूरी बात कहने दीजिए । मैं इस विषय से बाहर नहीं जाऊंगा और राजनीति भी लाऊंगा ।

THE VICE-CRAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI); But I cannot give you an indefinite period of time.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: You have allowed 20 minutes to a Member.

बीच बीच में सब बोल रहे हैं । बीच में झगड़ा भी हो गया था । दंगे के बाद में क्या होगा और बाद में क्या किया जाना चाहिए इन सब बातों पर विचार किया जाना चाहिए । अगली बार झगड़ा फिर हो इससे पहले कार्रवाई की जानी चाहिये । गृह मंत्री जी से मेरा आग्रह होगा कि वह बिहार सरकार से कह कि हफ्ता, 10 दिन, 15 दिन के बाद जब बिल्कुल शांति

[Shri Jagdish Prasad Mathur]

हो जाए तो वहां एक एक घर की तलाशी ली जानी चाहिए जो नजायज हथियार हैं उनको बरामद किया जाना चाहिये । जो पुलिस के आदमी इन नजायज हथियारों में वे व्यापार शामिल हों, राजनीतिक दृष्टि से, सामप्रदायिक दृष्टि से, सौदागिरी के दृष्टि से जो भी उसमें मेल मिलाप रखते हैं उनको निलंबित किया जाना चाहिये और उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिये । यह अगर प्रयत्न किए जायेंगे तो बाद में पछताने का सवाल नहीं आएगा । साम्प्रदायिकता की बात की गई है । मैं आपको उस क्षेत्र का नक्शा बता देना चाहता हूं। वह कांस्टीटूयेंसी सी० पी० आई० की है । मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी की भी है । यादव बाहुल्य है। यह झगड़ा एक मुसलमान और यादव में हुआ . . . (व्यवधान)

श्री महेन्द्र मोहन मिश्र : जनसंघ का एम० पी० 1977 में उस क्षेत्र से था।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : ठीक है । कांग्रेस का भी था । अब तो आपकी दोस्ती कम हो गई सी० पी० आई० वालों से मिश्रा जी . . .

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश गोस्वामी): आप मुझे एड्रेस कीजिए । (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं कांस्टीटुएंसी बता रहा हूं । वहां के एरिया की बात कर रहा हूं । सी० पी० आई० की कांस्टीटुएंसी है और वहां पर सी० पी० एम० की तरफ से पिछले वर्षों में बीसियों पच्चासों कत्ल हो चुके हैं और मुकदमें चल रहे हैं यादव बाहुल्य में हैं और वे सब सी० पी० आई० और सी० पी० एम० के साथ है . . . (व्यवधान)

श्री रामानन्द यादव : उपसभाध्यक्ष जी, उनको मालूम नहीं कि किस जाति के लोगों का बाहुल्य वहां पर है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मालूम है।

श्री रामानन्द यादव : आपको नहीं मालूम। आप गलत हैं, गलत हैं, 100 प्रतिशत गलत है । (व्यवधान) वे कहते हैं यादव बाहुल्य क्षेत्र है लेकिन ऐसा नहीं है, यह जान लीजिए ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप यह कहते है, मेरी बात . . . (व्यवधान)

श्री रामानन्द यादव : मैं आप जैसा नहीं हूं कि अमुक कम्युनिटी के लोग अधिक हैं । मैं इतना कहता हूं कि जिस जाति का नाम लिया है उसका बाहुल्य वहां पर नहीं है । आप किसी को भेज कर निष्पक्ष जांच करा सकते हैं, देख सकते हैं . . . (व्यवधान) . . .

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: (उपसभाध्यक्ष महोदय, आप उनको रोकते नहीं ।

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश गोस्वामी) : मैं कैसे रोकूं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं कांस्टीटुएंसी का विश्लेषण कर रहा हूं । इस क्षेत्र से विजय कुमार यादव नाम के एम० पी० हैं तो सवाल यह है कि जिस क्षेत्र में इतना बड़ा प्रभाव सी०पी०आई०, सी०पी०आई (एम०) के लोगों का है और कुछ कांग्रेस (आई) का भी असर है आखिर वहां पर दंगे क्यों होते है? मैं शेख अब्दुल रहमान की इस बात से सहमत नहीं हूं कि जब विदेशी हाथ की बात की जाती है तो मैं उस बात से बलूक सहमत नहीं हूं । जब विदेशी हाथ की बात आती है तो यह कहा जाता है कि शायद पाकिस्तान झगड़ा करा रहा है । मैं जानता हूं कि आज पाकिस्तान को झगड़ा कराने में कोई दिलचस्पी नहीं है । अगर विदेशी हाथ

दिखाई देता है तो वह उन तत्वों का हाथ दिखाई देता है जो कि केरल और बंगाल में झगड़ा कराते हैं, जो मार-मारी और कत्ल में विश्वास करते हैं मैं अर्ज करना चाहता हूं कि जब वहां जांच करायें तो इस बात की भी जांच करायें कि क्या उसमें केवल कम्युनल कलर है या उसके नीचे कहीं पर सी० पी० एम०, सी० पी० आई० की राजनीति भी छिपी है। . . . (व्यवधान) . . . . जब भोला प्रसाद जी कुछ बातें कह सकते हैं तो क्या मैं नहीं कह सकता . . . (व्यवधान) . . . मैं कह सकता हूं कि जांच यह करनी चाहिये क्योंकि यह क्षेत्र सी०पी० आई०, सी०पी०आई० (एम०) का है । वहां पर पचासों मामले हैं जिनमें सी०पी०आई०, सी०पी०आई० (एम०) के लोगों पर कत्ल के मुकदमें चल रहे हैं । इस कारण मेरे दिमाग में यह नक्शा बनता है।

(Interruptions) But these are not Pakistan, or other Muslims. There are certain elements which want to create disturbances in India. *(Interruptions)*

यह लोग देश के अन्दर आज केरल जैसी स्थिति पैदा करना चाहते हैं । तो क्या गृह मंत्री महोदय, इस बात की भी जांच करायेंगे ? अन्त में मैं केवल एक बात कह कर समाप्त करूंगा . . (व्यवधान) . . . .जहां तक प्रशासन को ठप होने का सवाल है, ठप तो नहीं हुआ । जहांतक प्रधान मंत्री के जाने का सवाल है वे गई बहुत अच्छा किया । वे अपने दौरे को रद्द करतीं तो गलत करतीं। कैंसिल नहीं किया, बिलकुल ठीक किया । ट्रिब्यून में एक समाचार छपा है कि प्रधान मंत्री वहां गयीं तो भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्रों में उस स्टन्ट बताया गया । छापने वाला कौन है । ट्रिब्यून का स्पेशल कोरेसपोंडेंट है जो शायद साम्यवादी रहे हैं ।

यह है झूठा प्रचार करने का तरीका । ऐसे राजनैतिक तत्व हैं जो कि झगड़ा कराने पर उतारू हो सकते हैं । प्रशासन पूरी तरह विफल नहीं हुआ लेकिन गलतियां हुई हैं । दफा 144 कब लगायी गयी, दंगे के कितने देर के बाद ? आप ने उत्तर में कहा कि सुबह 6 बजे कार्फ्यू आर्डर लगा दिया . . . (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश गोस्वामी) : पांच बजे के बाद में ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : लेकिन एक और गलती हुई, मुझे यह बतायें कि दंगे का समाचार पटना हैडक्वार्टर को कब दिया गया ? बहुत, कितने घंटों के पश्चात् वहां पर सूचना मिली ? यह जानकारी मिलने के बाद मुख्य मंत्री नहीं जा सकते थे तो कोई दूसरा मंत्री जाता । कौन गया ? क्यों नहीं गया ? जब प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी गयीं तब उनके साथ मुख्य मंत्री गये । इट इज नाट सफीसियेंट । मैं उनमें से नहीं हूं जो कहूंगा कि उनको बर्खास्त कर दीजिए । मैं जानता हूं बर्खास्त करने वाले नहीं हैं । इतनी शराफत अभी हमारे देश में और खास कर कांग्रेस 'आई' के मुख्य मंत्री में नहीं है कि खुद . . . (व्यवधान) . . इस्तीफा दे दें । देना चाहें या दे दें, लेकिन मैं मांग नहीं करना चाहता हूं . . (व्यवधान) . . .डिसमिस भी नहीं करें, मैं मांग नहीं कर रहा हूं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): Now please conclude. ?r^ SfiTFu =Ftf5T^ I

श्री कलराज मिश्र : काहे तकलीफ हो रही है । बोलने तो दीजिए ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : देखने की आवश्यकता यह है कि क्या शासन में कहीं पर गड़बड़ी है । यही पुलिस है जिसने कि आंखें फोडी, यही पुलिस है जिनके जमाने में दंगे होते हैं, बलात्कार होते हैं, यही शासन है कि जो मुख्य मंत्री को बताता ही नहीं तो आखिर कहां पर गड़बड़ी है, इसकी जांच कीजिए ।

श्री भा० दे० खोबरागड़े : श्रीमन्, मैं एक सन्टेंस कहूंगा ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): Let me finish with the list, Mr. Khobragade. The Deputy Chairman has left with me certain list. Let me complete that first.

SHRI G. C. BHATTACHARYA (Uttar Pradesh): From the time the Calling Attention was taken up, the Deputy Chairman asked me to wait. Now that he has gone, you are saying that he has given you the list. When the Deputy Chairman has already permitted me, he has already said that my turn will come, may I know whether I will get the chance? I will request you to kindly give me a chance because I was allowed by the Deputy Chairman also.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): I said that the Deputy Chairman has left with me a list of names. Let me take up this list.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Allow ut after the list.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Instead of putting any question the hon. MembeT has made certain suggestions. In the beginning he said that 5 tonnes of explosives were found from one house. This is not a 1 fact. It is five quintals of explosives.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR; It is a fact.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: It is a fact that it is five quintals and not five tonnes. So far as fiv» tonnes are concerned, it is not a fact, but so far as five quintals are concerned, it is a fact. *(Interruptions).* He has posed many questions, whether the involvement of CPI and CPI(M) was there, whether the police was involved. He also wanted me to get examined the criminal history of the persons who are residing in that area and many other things. Now, Sir, these are all matters for investigations. I have said that inquiry is already announced by us. In the inquiry all these things will come out and necessary action will be taken. I can assure the hon. Members of this august House that nobody will be spared *it* he is found guilty, howsoever great *h&* may be, whatever relations he may be having with anybody. He will be punished if he is found guilty. Many of the suggestions which he has made I have taken note 0' the same.

श्रीमती अजीजा इमाम (बिहार) : उप-सभाध्यक्ष महोदय, मैं बड़ी आजिजी और बहुत विनम्रता से एक बात कहना चाहूंगी कि आज हम इस सदन में, ऐवान में जिस मसले को लेकर बहस मुबाहिसा कर रहे हैं, वह बड़ा ही गम्भीर मसला है और यह सारी कौम के लिए सारे देश के लिए एक बहुत बड़ा मसला बन चुका है । लेकिन हम लोगों ने जिस तरह से बहस मुबाहिसा किया, एक दूसरे पर इल्जाम लगाए, एक दूसरे को बुरा भला कहे, यह कुछ अच्छा नहीं लगता । थोड़ी सी संजीदगी की कमी रही । यह मसला सारी कौम का मसला है, सारे देश का मसला है और किसी पार्टी, किसी विरोधी, किसी दल का मसला नहीं है ।

यह फिसादात—एक दौर चला, है एक जमाने से होते आ रहे हैं, हो रहे हैं, आदमी, आदमी का खून पी रहा है, भाई, भाई को मार रहा है, बहुत बुरा हाल है । शर्म से हमारा सर झुक जाता है और दिल दुःख से भरा हुआ है । लेकिन मुझे ताज्जुब यह है कि हमारे बिहार, हमारा पटना और उसके

इतराफ अभी तक इस जद से बचे हुये थे । मझे बड़ा फक्र था। जमशेदपुर में जो कुछ हुआ, रांची में जो कुछ हुआ वह अपनी जगह पर बहुत बुरा हुआ । लेकिन पटना और पटना के अइतराफ के जो इलाके हैं, वे अभी तब बचे हुये थे ।

आखिर क्या वजह है कि बिहारशरीफ भी इस जद में आ गया है । लड़ाई तो दो शराबियों में, कोई हिन्दू और एक मुसलमान —जैसे लोग कहते हैं, हालांकि शराबियों और बदमाशों का कोई धर्म नहीं होता, उनका कोई मजहब नहीं होता । उनका अलग ही एक धर्म होता है । दो शराबी, एक दुकान पर खड़े होकर आपस में लड़ते भिड़ते हैं और वह मामला इतना बढ़ जाता है कि उसमें सैकड़ों, हजारों मासूमों का खून बह जाए।

मुझे ऐसा लगता है कि इससे ज्यादा कोई गहरी बात थी, जिसकी खोज, तह में हमारे होम मिनिस्टर को लगना चाहिये । यह भी मुझे सुनने में आया कि एक कब्र थी और वहां पर किसी ने मूर्ति रख दी थी । हो सकता है कि वह इसके लिए कुछ फिसाद लोग करना चाहते होंगे और फिसाद पैदा करने से पहले किसी ने मूर्ति रख दी होगी, क्योंकि सिर्फ शराब और ताड़ी पीने से इतना बड़ा दंगा तो नहीं हो सकता है ।

इसके लिए मैं आपसे अनुरोध करूंगी कि आप थोड़ा सा पता लगायें । अलीगढ़ में फिसादात हुये, मुरादाबाद में फिसाद हुए आखिर क्या कारण थे ? अभी तक तो पता नहीं चल सका है कि वजूहात क्या थीं ?

दूसरी बात मैं कहना चाह रही थी कि अभी तक तो नालंदा हमारा एक डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन वहां है पूरा डिस्ट्रिक्ट बन चुका है, वहां पर अफसरान जरूर होंगे, क्या इन लोगों को पहले से कोई इत्तिलाह, सूचना नहीं थी ? हमारा विजिलेंस क्या कर रहा था ? थोड़ा सा सतर्क हो जाना चाहये था जब कि ऐसा टेंशन वहां मौजूद थी, जैसा कि सुनने में आया है। तो पहले से कोई कदम उठाते तो यह इतना बढ़ने नहीं पाता ।

दूसरे एक बड़ी खतरनाक बात जो सुनने में आई है वह यह है कि गांव में यह फिसाद फैल रहे हैं, गांव में आपको पता है कि लोग बड़े मासूम होते हैं, उनमें आपस में कोई भेद-भाव नहीं होता है, हिन्दू-मुसलमान मिलजुल कर रहते हैं । वहां पर अगर इस तरह के फिसादात होते हैं, जैसे अभी आपने कहा—किसी साहब ने कहा कि वहां सड़क नहीं है और पालकी पर —शायद यादव जी कह रहे थे कि पालकी में बैठ कर लोग जाते हैं, पुलिस नहीं पहुंच पाती है वहां आग कैसे इसको सम्हालेंगे ? अगर गांव में यह आग भड़क गई, तो किस तरह सम्हालेंगे ? यह भी हुआ है कि इस इलाके—जैसे अभी माथुर साहब ने कहा कि वहां क्रिमिनल्स बहुत रहते हैं, तरह तरह के हथियार, हरबे हैं, उनकी भी खोज चलाना उनका फर्ज है, पता लगना चाहिए ।

मैं शुक्रगुजार हूं, इन्दिरा जी, प्रधान मंत्री की कि वे वहां गईं—एक दिन पहले गयीं—फिसादात बढ़ गये तब गईं, हालांकि दूसरे दिन बाहर जाने वाली थीं, फिर भी वे गईं । उनके जाने से जैसा मैंने सुना, मुझे पटना से एक टेलीफोन आया था, जैसा कि लोगों ने मुझे बताया :—उनके जाने से एडमिनिस्ट्रेशन में भी थोड़ी सी सख्ती आई और लोगों पर भी उसका अच्छा प्रभाव पड़ा है । लेकिन इसको चलाना तो हमारी बिहार सरकार का काम है । तो जैसा कि आपने कहा था कि कोई ज्यूडिशियल इंक्वायरी के लिए आपने मान लिया है कि वह होने वाली है, मेरी राय थी कि किसी हाई कोर्ट के जज को बिठा ल, जो सिटिंग

[श्रीमती अजीजा इमाम]

जज हो और इस इंक्वायरी को जल्दी से जल्दी कराने की कोशिश करें क्योंकि जहां देर होती है, वहां स्मगलिंग्ज भी होने लगती है ।

एक माननीय सदस्य : और कोई फायदा नहीं होता ।

श्रीमती अजीजा इमाम : नहीं, उसके कुछ तो नतायज निकलेंगे और यह तो हमारी सरकार को करना होगा ।

दूसरी बात यह है कि मरने वाले, जख्मी, गिरफ्तार, गुमशुदा लोगों के नाम हमको मिलने चाहियें, कौन लोग थे, कितने थे ? कोई कहता है कि 42 मरे हैं, कोई कहता है कि 47 मरे हैं, कोई कहता है कि दो सौ मरे हैं, इसकी भी कोई सही तादाद हम लोगों को नहीं मिली है । मरने वालों की लाशों का पोस्टमार्टम हो और उनके जो रिश्तेदार हैं, उनको मिलनी चाहिये ।

चौथे, यह है कि स्पेशल कोर्ट्स आप बिठा लें, जैसा कि आपने तो कहा ही है कि ज्यूडिशियल इंक्वायरी करवायेंगे । बहरहाल, वह जो कलैक्टिव फाइंस हैं, वह भी आप वसूल करेंगे, मगर किन लोगों से वसूल करेंगे ? उसमें भी थोड़ा सा अगर कुछ ज्यादा ध्यान न दें, तो हो सकता है कि गलत लोगों ने फाइन ले लिया जाए और जिन लोगों ने क्राइम किया हो उन लोगों को छोड़ दिया जाए . . (**व्यवधान**)

एक गुजारिश मेरी और थी कि लोकल पुलिस तो अपनी जगह है । लेकिन आप वहां से बी० एस० एफ० और सी० आर० पी० एफ० को जरूर भेजें । अभी तक जो हंगामे हमारे यहां हुये थे जमशेदपुर में, वहीं के लोगों का कहना था कि बी० एस० एफ० और सी० आर० पी० के लोग गए तो उन्होंने काफी बचाव किया लोगों की जान माल का . .

SHRI B. D. KHOBRAGADE: And you are perfectly right.

श्रीमती अजीजा इमाम : जहां तक लोकल पुलिस का ताल्लुक है, ठीक है मैं बुरा नहीं कहती हूं, लेकिन उनको डिमोरेलाइज करने से हल नहीं होगा, फिर भी हो सकता है उनके व्हेस्टेड इंटरेस्ट हों और अभी, जैसा राममूर्ति जी ने कहा ट्रांसफर इधर से उधर हुये हैं । हो सकता है कि उससे लोग बिगड़ हुये हैं । तो बेहतर होगा सेन्टर से आप अपनी फोर्सेज को भेजें ।

सीनियर आफीसर्स के बारे में हमारे होम मिनिस्टर ज्ञानी जैलसिंह कह गए कि सीनियर अफसर भी इन्वाल्वड हैं, मगर उनके नाम नहीं बताए । इससे अच्छा असर नहीं पड़ेगा, डिमोरेलाइजेशन हो जाएगा अफसरों के बीच में । उनके भी नाम बता देने चाहिये ।

रह गई, इस फिरकेवाराना जहनियत को खत्म करने की बात सारे भाइयों ने कही इस काम में हम भी कोशिश करें समझाने बुझाने की और ऐसी पीस फोर्स बनायें जो ऐसे वक्त में मदद पहुंचाने का काम सकें ।

मेरी ये ही चन्द गुजारिशें हैं । अगर बिहार सरकार थोड़ा सा सतर्क हो जाए तो हो सकता है फसादात रुक जायें और गांवों तक नहीं पहुंचें । धन्यवाद ।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, I agree with the hon. lady Member that it is a matter of concern for the entire nation and no party politics should be brought in and it should be discussed without party politics. She is also right in saying that Patna was saved from communal tension

when there was communal tension in Aligarh, Moradabad and elsewhere. Sir, the hon. lady Member has raised three or four questions. The first question is about the names of the victims, those who were killed. Sir, that will be available with the State Government. When the inquiry will be instituted, it will definitely come out in that inquiry.

SHRI KALYAN ROY (West Bengal); Before that nobody will know how many were killed?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I have already said that 47 were killed and 68 were injured. But she wants the names of the victims. But it is not possible at present. I cannot give it because it is not with me. Otherwise I would have provided it. But so far as the dead bodies are concerned, definitely they should be given to the near relatives of the victims, and the State Government is doing it. So far as collective fine is concerned, she has raised the question whether it will be collected from the persons who are really involved in it or from the people who are really not involved. I can only assure the hon. Members that we will bring it to the notice of the State Government and we will tell them that it should be collected from the people who are really in-volved in it and not from the victims.

SHRI KALYAN ROY: How will you find out?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Because, in a small village there may be some families who are real victims °f a communal riot. So, they should not be asked to pay this fine. So far as BSF and CRP are concerned, in my statement I have already said that the CRP and BSF were sent to help the State Government. So far as officers' involvement is concerned, that is also a matter of investigation and it is already assured that a High Court Judge will be appointed to head the Inquiry Commission. All things will come out in the course of the inquiry and necessary action will be taken against those officers who will be found responsible.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI); Mr. Shaha-buddin.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Sir,....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH GOSWAMI): Mr. Deputy Chairman has left a list with me. Let me exhaust it.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: After that only.

SHRI SYED SHAHABUDDIN (Bihar); Mr. Vice-Chairman, Sir, once again we are here shedding a few tears, while people are being killed. I think a time will come when we shall have no more tears to shed. I do not know whether a time will also come when we shall not have any more words to pronounce, any roore adjectives to use, any more expressions, parliamentary or otherwise, to flourish across the party lines. Mr. Vice-Chairman, our hearts are heavy with sorrow and our minds are benumbed. As a nation we have become immune to suffering, we have become insensitive to pain and brutality and that is why whenever I speak of communal violence I speak in the larger context of the wave of social violence that seems to be gushing across the country and engulfing us all in its mighty sweep, all our traditions, all our culture, all our values. Mr. Vice-Chairman, I do not think it is news to you that Biharsharif which is today being described as a city of criminals and therefore perhaps deserving of all the violence that it has seen is the land of saints, is associated with the life of Buddha and it is close to Raj-gir Nalanda and yet such brutalities are taking place there. My purpose here is to ask some questions. But I

[Shri Syed Shahabuddin]

h»ve been wondering whether the big question before us *gfi*> Mr- Vice-Chairman, is not today our very existence as a united and integrated nation, as a functioning State which can at least guarantee the security of its citizens. Mr. Vice-Chairman, I do not agree that the origin of these disturbances lies in the brawl in the toddy shop or that it lies in the attack, as I have heard, on a funeral procession which was going towards the *qabristan* being used as a *khali. han* or that it lies over the dispute arising out of placing of an idol in what is regarded by an other community as a graveyard. I think it basically lies in the fact that Bihar today is a land of darkness. Bihar has a non-functioning Government, an administration which has lost its grip and a law and order machinery that has completely broken down. In the last one year we have heard of—I do not remember all the names—Bhagal-pur; we have heard of Samastipur and we have heard of Gua we have heard of many other places—a lisbany of shame. And the origin of the trouble also lies in what my hon. Colleagues here across the party line, I am happy to say, have described as a deep-rooted social and economic malaise, which has taken Bihar in its grip which has taken the most perverted and pernicious shapes which has made Biharsharif itself now a power-keg, a tinder box. Biharsarif has long been known as a troubled area. My own personal friends have been Commissioners and Deputy Commissioners of Biharsharif. They have always told me that Biharsharif is always is on a razor's edge, anything can happen any-time. Surely this is one of the sensitive places where maximum possible precaution ought to have been taken. Therefore I would like to know from the hon. Minister why this has *not* been done, why the trouble could not be anticipated. Mr. Vice-Chairman, in the entire State of Bihar—I know it; I come from that State—we are all passing through a iocial upheaval and a period of transition. In **thia** transitional period many a thing will happen and there will be new powers which will emerge and there will be powers which will go down. A new social balance has to be achieved. This will happen. And I think in this transition many an unpleasant thing may happen; I am prepared to accept that. But some gentleman here spoke of group consciousness the minority groups being conscious of their identity. I want to tell him that in the long span of history a group has become concious of itself not only because it has something in common, some values in common, a culture in common, a language in common, a religion In common, but also it becomes conscious of its existence as a separate group because of common suffering. And so long as that suffering goes on, that consciousness will remain; nobody can blot it out,

SHRI B. D. KHOBRAGADE: It must remain.

SHRI SYED SHAHABUDDIN: Mr. Vice-Chairman, the facts are well known. I will not recite them. Biharsharif itself today is not a disturbed area.

That trouble was controlled the first day. The disturbance is in the villages around. That to my mind is a grim reminder of the upheaval which broke the unity of the country, which led to the partition of the country. The 1946 riots in Bihar engulfed so many villages, thousands of villages, and led to the massacre of thousands of people. It was the Bihar disturbance which was the final straw on the camel's back, after which nobody cowld prevent the partition 0* the country, of our beloved country.

Mr. Vice-Chairman, the question, therefore, to the hon. Minister is: **What** precaution is he taking today so that this will not spread beyond the 20 odd villages to which it **has**

already spread. This is a very important question. He should not slur it over. The House has a right to know what he intends to do.

Mr. Vice Chairman they talk about 40—50 bodies. Just now I had a call from Patna. I was told that there were hundreds of bodies. There are bodies just lying and decomposing in their places, in their villages. Mrs. Gandhi was there. She was shown a truckful of decomposed and decomposing bodies. There may be many more. Let the Minister simply not take shelter beyond the fact that he has announced a judicial enquiry and that the facts will be eventually known to the country. But that is only after months and months and years. I think this is too lighthearted a view of the matter. The Government ought to know where the situation stands.

Thirdly, there was a mention here about the role of the police. Two incidents, I have read about, in the newspapers, in the leading, responsible newspapers of our country. One says that FIRs were refused to be registered by the local police. The other says that in a small town near Biharsharif, Harnaut, four persons were being evacuated by the police. They were being taken. They were waylaid and killed. The police looked on.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Shame.

SHRI SYED SHAHABUDDIN: The police ought to have laid down its life in protecting the people who were in its custody. Why has that not happened? I would like to know?

Mr. Vice-Chairman, I know that the local administration cannot be simply waived aside. But please, for God's sake, Mr. Minister, let me request you, "Do not send your BMP there," I do not know—please answer me—if it is there. If it is there, please pro-raise to take it away before the dusk falls today. Remember its record at Jamshedpur. Please, for God's sake, do not convert Biharsharif into another Jamshedpur. 318 RS—13.

Mr. Vice-Chairman, the police has tried to scuttle our freedom of expression, our freedom of opinion. There is a news item. It says that the Press photographers were not permitted to take photographs. Why? Are we living in a free and democratic country or not? Are we living under the rule of law, under a Constitutional government or not? Do we not have the right to know about it or not? Do we not havo the right to put people to shame? Do we not have the right to awaken the conscience of the people? Why has it not been done? Would you punish the police which scuttled the right of the photographers and the Pressmen? If there is anything needed in the country, it is not hiding ourselves behind the curtains. It is knowing ourselves. It is facing truth *{Time bell rings)* Mr. Vice-Chairman, you will have to give me a few more minutes.

Mr. Vice-Chairman, I felicitate the Prime Minister. I thankful to her that although she was supposed to go on tour abroad the next day, she decided to go to Bihar.

[THE VICE-CHAIRMAM, (DR. RAFIQ ZAKARIA) in the Chair.]

And I really admire that a lady of her age, when she had so much to do before she took off for a foreign journey, took time off for this. I think she had realised the gravity of the situation. I think like a wise person she has also learnt from the experience of Moradabad. I admire it, I appreciate it. I want you to convey to her my thanks and the thanks of the suffering people of Bihar. But, Mr. Minister, it is not correct to say that her visit to Geneva was very important. Her State visit to Kuwait starts from the 9th or perhaps from the 10th. Her first three days are to be spent in Switzerland to make do what I would call a routine address. It is nothing very very new. Every year they invite somebody or the other from all parts of the world to make the inaugural address to the WHO. It is not a very special *or* extraordinary session of the TVHO

where if she had decided not to go, She would not have been missed. Mr. Vice-Chairman, I would have loved it if she had stayed **for** three days there because I have heard, I understand, that not only **w«rt** the riot* going on while she was there, but that after she left, the disturbances have increased. If this information is correct, I have a right to demand of the Prime Minister of the country that she should have stayed there. Her continued presence there would have had a salutary effect upon the rioters and the ill-meaning people and the poor administration. But, Mr. Vice-Chairman, I am happy to know also that the Bihar Government has shown courage in suspending some magistrates and some police officials. It is a good beginning. This has not yet been done, for the information of the Members of the House, as far as Moradabad is concerned.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Nowhere else.

SHRI SYED SHAHABUDDIN: 1 say, it is a good beginning. I cong-atulate you for it. I am also happy to know that you are ready to intervene with the army should it become necessary. I am told that you have already sent helicopters there. That is also a good step. I congratulate you on that. I know that in Jamshedpur finally it was the army which had to come and contrsl the situation.

Mr, Vice-Chairman, I am also happy that the State Government is evacuat-ting people from the affected villages and bringing them into relief camps. But, io these relief camps have sufficient ration? We were told that the hospitals did not have enough medicines to treat the injured persons. Therefore, will you please make sure that the relief camps have sufficient and adequate material and that the hospitals have sufficient medicines?

You have said that you have decided to impose punitive fines. An hon. Member said that this is not the first time that the Bihar Government has made this promise. The Bihar Government made this promise when the Para»bigha "kand" and the Pipra "kand" took place also. But these fines are yet to be imposed. I personally feel that punitive fine is one of the most effective means of controlling disturbances. I may tell you about an incident in Bombay where in a particular locality no riot has taken place for the last 50 years, where a punitive fine was imposed, while many other parts of the same State have been engulfed by communal riots. Therefore please see to it that these punitive fines are, in fact, collected. For this, do not wait until the judicial enquiry has given its report. *(Time bell rings)* Mr. Vice-Chairman, just give me two minutes more.

There are anti-social elements. There are lots of it'egal arms around that part of the country. I know it and I have heard about it for a long time. Please do search, do make screening and put all the anti-social elements behind bars. But please see to it that you are impartial in doing this. Please don't add insult to injury, please don't add injustice to suffering by seeing to it that most of the arrested are also Muslims and most of the houses searched are also Muslims' houses &nd most of the people detained are also Muslims. Please don't do it. This is exactly what happened in Moradabad.

Mr. Vice-Chairman, I personally feel that the Government should not wait for the judicial enquiry report. They should be in possession of the facts, the names, the ages, the localities, the manner of death of the people who have lost their lives. Why can't you release their list? There are people who are missing. Why can't you release their list? There are people who are injured and hospitalised. Why can't you issue their list? There are people who are under arrest. Is it not decent in a democratic system that every evening you announce the names of the people arrested, just to set alJ doubt at rest that you are being impartial? For this, you do not require the judicial enquiry's report.

You have already decided to appoint a commission. Please don't wait as you did in the case of Moradal where you appointed it ten months

later, after every bit of evidence had been erased. Please announce it this week. Let the commission start enquiring now, before the officers and the police have an opportunity of effacing and erasing the evidence. Please do that.

I would also suggest that the great est blot on the name of India today is that in thirty years not one person has been hanged for these communal assaults and murders. It is no good our saying what the world will think. The world will say what the world knows and what the world talks rbout; it is a shame on the system of our judiciary, it i_s a shame on the system of our administration. Please, therefore, ask the Bihar Government to use the powers it has already got and establish a special court and produce before it the people who have already been arrested, put before this court all the evidence that you have got ar»d let the special court examine it thoroughly.

And *my* last question is this. I have a feeling that the crux of the problem is the grave yard. And the grave yard is now becoming a rational issue all over the country. There are many grave yards which are being encroached upon, which are being violated, which are being desecrated, which are being used for some other purposes. Right here in Delhi i*. is so. I will not go into the details of it. Please do one very simple thing. 1 request you, as in Calcutta and in Bombay, please see that the gn>ve yards are enclosed so that this trouble about grave yards, somebody violating and planting an idol in it or something like that, just never occurs.

And please be a little more generous. I would request the Government to announce adequate compensation. Of course, compensations do not brine the dead back to life, but at least .they can help the families in recovering their morale. Please announce something which is as good as in a railway accident, something like Rs. 50,000 or whatever it is, for ea<:b individual.

Now, I have a very humble suggestion which I have already conveyed to the Prime Minister and which I am placing before this House. Let the Chief Minister of Bihar sit in Bihar-sharif until Biharsharif is normal. The Chief Minister of Bihar did not visit Biharsharif until the Prime Minister dragged him along. He instead of going to Biharsharif, came to Delhi, because as a *chamcha* he must bid goodbye to Mrs. Indira Gandhi at the airport. I am not surprised he was dragged back to Bihar. I would request the Central Government to direct him that he shall sit in Biharsharif until Biharsharif i_s normal, that he shall not stir out of Biharsharif. Biharsharif is not very far from the State capital. H« can easily reach it and he can run the administration of Bihar from Biharsharif itself. Let him sit there. And if he does not obey this directive, then I would request the Central Government to dismiss his Government. It is a non-functioning Government; it is a Government which cannot work; it is a Government which cannot do its least possible duty. We shall go into the long-term thinking later. A lot has been said on it. The National Integration Council will meet and decide on it. I am not going into that now. But these are the immediate steps I would urge, through you, tha the Government should take. I would urge the honourable Minister to give an assurance. Will the Government will the honourable Minister, give an assurance that these steps that I have outlined, will be carried out? Will he give an assurance that our existence itself as a minority community and $_0$ur existence as a united nation, will not re-main a question mark?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I can understand th_e anger of the honourable Member. But I can assure him that all of US, including the Opposition and the people of the country, are one in this question. All of us are aware of the situation which is created in Bihar and are worried about it. AH necwsary action which shou'd be token

[Shri Yogendra Makwana]

immediately on tbe part of the Central Government, is taken. He has raised some questions. The first question he has raised is why it was not anticipated and why action was not taken before the riots took place. Everybody knows that when there was trouble in Mor-adabad, Aligarh and elsewhere, Patna and the adjoining areas remained calm. We never thought that there would be trouble in Biharsharif and the adjoining area. It erupted from a small quarrel and then it spread to the villages. But I am happy to say. . . J

SHRI SYED SHAHABUDDIN: I am sorry to interrupt. If you will kindly check from the records of the Home Ministry, you will find that Biharsharif has teen at least a dozen small communal incidenti in the last decade. Therefore, it is one of the most sensitive areas in the State of Bihar. Anybody from Bihar will tell you that.

SHRI YOGENDRA- MAKWANA: I do not dispute it. I simply «ay that when trouble started in Moradabad, Aligarh and elsewhere, Bihar remained calm.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Previously also there was trouble.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: We j never thought that there will be trouble of this sort, namely, communal trouble. It started from a small quaT-rel and it spread to the villages. The Government has now take* all precautions so that it does not spread to the neighbouring areas. I am happy to say that it is in control and since the last two days, since the 4th, there has been one incident. No more incidents took place in this area. So far as the BPM is concerned, I do not know. . .

SHRIMATI AZIZA IMAM: Not BPM, but BMP—Bihar Military Police.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Yes, BMP. I have to enquire about it...

SHRI B. D. KHOBRAGADE: If not BMP, who is operating there now?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The Bihar Police, Border Security Force and the CRP which we have provided to the State Government. Tha incident of the press photographer, I would like iquire into it. . . .

SHRI SYED SHAHABUDDIN: Will you .please advise the State Government to withdraw the BMP?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I have already sa.d that I do not know what i_s the position about the Bihar Military Police in this area. We will advise the State Government if they are there. So far as the incident of the press photographer is concerns!, it is a matter for investigation. We will ao it. So far as relief camps are concerned, I am informed that 15 day3' ration is provided in all the affected areas. . .

SHRI SYED AHMED HASHMI: The system of distribution is not good.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I am informed that there is sufficient ration in this area for the people and as regards medicine I will enquire and see that it should be available in sufficient quantity so fnat it may meet with the demand.

So far as punitive fine is concerned, I have already explained that it will be properly implemented. So far as arrest is concerned, the hon. Member's point was that it should be impartial. I can assure the hon. Members that it will be impartial. Nobody involved in this communal riot will be spread. So fa_r as the names, age^ locally, etc. are concerned, the information at pre. sent is not available with me.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): He made a pointed reference to Moradabad and said that the victims and those arrested were from the same community. What additional precaution have you taken to see that this does not happen'.'

SHRI YOGENDRA MAKWANA: For that we will instruct the State Government to se_e that those who are

really involved are arrested. So far as establishment of special court is concerned, when the hon. Home Minister has sad that an inquiry headed by a High Court Judge will be instituted, the sped tl court question does not arise.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): When will it be announced?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: He has already announced it in the House, Now we have to inform the State Government that they should find a suitable Judge.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): In Moradabad it took ten months. That is the point he made.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: His point was that special courts should be appointed.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): He also said that in the case of Moradabad incidents, it took time.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: We will instruct the State Government to do it as early as possible and expeditiously. So far as compensation is concerned, an amount of Rs. 10,000/-is at present being given by way of...

شری سید احمد ہاشمی: یہ کمپاسیشن نہیں ہے دس ہزار کا - (مداخلت)

†[श्री सैयद अहमद हाशमी : यह कम्पैंशेशन नहीं है दस हजार का। (व्यवधान)]

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): It is ex-gatia payment.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: You are right. It is ex-gratia payment.

t[ ] Devanagari translitration.: आपने 10 हजार रुपए किसको दिए हैं।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: We are giving it to every family where somebody has been killed.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: What about Gujarat? You have paid only five thousand rupees to the families of those wh$_0$ have been killed.

श्री भा० दे० खोबरागड़े : गुजरात में जो लोग मारे गये हैं उनको दस हजार क्यों नहीं दे दिया है ... (व्यवधान) वहां पर जो मारे गये हैं, उनको दस हजार दे दें, कम से कम, यह अनाऊंस कर दीजिए आज। .. (व्यवधान) ..

ज्ञानी जैल सिंह : मैं इस बात को क्लियर करने वाला था कि जो मैंने अनाऊंस-मैंट की, मैंने कहा था कि ज्यूडिशल इंक्वायरी के मैं पर्सनली हक में हूं ताकि लोगों को तसल्ली हो। मगर ऐसे वाक्यात के प्रति स्टेट गवर्नमेंट से और आप लोगों से भी सलाह-मश्विरा करने के लिए हम तैयार हैं। ज्यूडिशल इंक्वायरी के बहाने यह बातें कि मुजरिम भाग न जाएं, नुक्सान न हो जाए, इसको समझ लेना चाहिए। यह मैंने कहा था। लेकिन एक तो पहले यह मश्विरा सरकार को दूंगा कि ज्यूडिशल इंक्वायरी होनी चाहिए, वहां की हालात जो आन-दी-स्पाट अफसरान हैं, उनको देखना है और दूसरी बात कि अगर वह करना है तो मैं सरकार से कहूंगा कि विदिन ए वीक, हाई कोर्ट जज लें या रिटायर्ड जज लें और काम शुरू कर दें। ऐसा न हो कि मुरादाबाद की तरह काम डिले हो जाए क्योंकि पहले उन्होंने डिस्ट्रिक्ट और सैशंस जज की इन्क्वायरी का फैसला किया था और वहां भी और यहां इन दोनों हाउसेज में महसूस किया जाता था कि डिस्ट्रिक्ट एण्ड सैशंस जज कोई ठीक नहीं किया। कोई हाई कोर्ट का जज होना चाहिए। तो मैंने उनको कह दिया कि हाई कोर्ट का जज ले लीजिए और स्टेट गवर्नमेंट ने लिखा। उनके यहां सात महीने यह बात पड़ी रही।

[ज्ञानी जैल सिंह]

हाई कोर्ट ने जज नहीं दिया और अब जब झगड़ा किया, तो मैंने कहा कि जब वकिंग जज नहीं मिलता तो रिटायर्ड जज ले लीजिए, तो काम तो शुरू करना चाहिए और हमारा यह भी तजुर्बा है ज्यूडिशल इन्क्वायरी का कि एक जगह पर नौ महीनों में आठ गवाह लिये सिर्फ एक जज ने । तो ऐसा जज हो तो फिर नुकसान हो सकता है । तो इसको आप मेरी अनाऊंसमेंट डैफिनेट न समझिये, राय मेरी है । मैं बिहार सरकार को राय दूंगा और उनसे पूछ करके बाद में फिर फैसला करेंगे ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरिया) : दूसरी बात जो शाहाबुद्दीन साहब ने कही, वह यह कि कब्रों के मामले में चूंकि यह बहुत से झगड़े कब्रों की वजह से हो रहे हैं और उस सिलसिले में अगर सरकार कोई अपनी पालिसी जाहिर करे, तो यह जो फिसादात की शुरुआत होती है, उसमें बहुत कुछ आसानी हो जाएगी ।

ज्ञानी जैल सिंह : उनका सुझाव मुझे अच्छा लगा है ।

شری سید احمد هاشمی : قبرستان

کی وجہ سے نہیں قبروں میں انٹر فیرینس کرنے کی وجہ سے - قبروں کا اینکروچمینٹ کرنے کی وجہ سے -

†[**श्री असद मदनी :** कब्रिस्तान की वजह से नहीं, कब्रों में इण्टरफियरेंस करने की वजह से, कब्रों का एन्क्रोचमेंट करने की वजह से ।]

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरिया) : ठीक है, वे सब समझ गये हैं कि मतलब क्या था ।

11 1 Devanagari trahslitration.

ज्ञानी जैल सिंह : मुझे यह सुझाव बड़ा अच्छा लगा है । जहां-जहां कब्रों का स्थान है, वहां हम सीलिंग लगाएं और किसी के जजबात को इंजर न होने दें, यह हम स्टेट की सरकारों को अपना मश्विरा देंगे और जहां डाइरेक्ट हमारा ताल्लुक है, वहां भी करेंगे और इसके अलावा भी मैं यह समझता हूं कि सरकार को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी मजहब का पवित्र स्थान किसी भी जगह पर हो, जिससे कुछ सैंटिमैंट उभर सकते हैं, उसके लिए पूरा प्रौटैक्शन देना चाहिए ।

شری اسعد مدنی : نائب صدر

صاحب بہار کے فساد کے سلسلے میں کچھ چیزیں معلوم کرنا چاہتے ہیں اور بہت تکلیف کا اظہار ضروری سمجھتا ہوں - یہ فساد جو بہار شریف میں جہاں پچھلے کئی ورشوں میں برابر فساد ہو چکا ہے اور قریب تیرھ سال یا اس سے بھی زیادہ سے وہاں قبرستان کی زمین پر شدید تناؤ تھا اور وہاں کچھ لوگ جو آباد ہیں وہ اس پر زبردستی قبضہ کرنا چاہتے ہیں - کبھی اس نے درختوں میں جھنڈے لگا دیتے ہیں - کبھی انہوں نے مورتی رکھی ہے - کبھی اپنی فصل کاٹ کرکے وہاں کھلیان لگانے کی کوشش کرتے ہیں - اس سے وہاں شدید قسم کا ہنگامہ اور تناؤ کی صورت چلی آئی ہے - یہی اس وقت بھی کیا ہے - یہی اس وقت بھی کہا گیا ہے اور اس کے نتیجہ میں وہاں یہ ہنگامہ شروع

نوادہ ضلع میں پڑا ہے اس طریقہ کافی لوگ متاثر رہیں اور وہاں مرنے والوں کی کافی تعداد ہے اور نقصانات ہوئے ہیں اس کے علاوہ وہاں افسران نے جو ان کو ایکشن لینا چاہئے تھا، جو انتظامات کرنے چاہئیں تھے وہ نہیں کئے نالندہ ضلع کے کلکٹر صاحب پہلے دن سے کنٹرول کر رہے ہیں، کہتے ہیں سچویشن انڈر کنٹرول ہے اور برابر دیہات میں بھی آگ پھیلتی جا رہی ہے - لاشوں کی تعداد بھی بڑھتی جا رہی ہے، نقصانات بھی برابر بڑھتے گئے پھر بھی وہ ہمیشہ کہتے رہے کہ سچویشن انڈر کنٹرول ہے - انتظامات بھی نہیں کرتے اور اعلان کرتے ہیں کہ انڈر کنٹرول ہے - سچویشن اور پھر جو کچھ نقصان ہو رہا ہے اس کی کوئی ذمہ داری ماننی چاہئے کہ کچھ نہ کچھ انتظامات ہونے چاہئیں، اس کے بارے میں کچھ صلاح دینی چاہئے میری سمجھ میں نہیں آتا پبلک کے لوگ چاہے کسی وجہ سے بھی مارے جائیں اور حکومت اپنے افسران کو ایسی ذمہ داری کی صورت میں بھی کوئی سزا نہ دے، ان کو سسپینڈ نہ کرے ان کے طرز عمل کی انکوائری کئے بغیر کوئی سسپینڈ ہو جائے یہ صورت حال بہت افسوس ناک ہے - مجھے افسوس ہے اس چیز کا جب کہ ہمارے صوبہ ہو - پی - میں اس کا الٹا ہوا، ہوا لیکن جہاں پچاس یا اس سے زیادہ لوگ مارے گئے ہیں - ابتک وہاں ۴۷ کو تسلیم کر رہے ہیں ویسے پرائیویٹ اطلاع اس کی بہت زیادہ ہے - ٹائمز آف انڈیا کا کہنا ہے کہ اس کے دو دن کے بعد بیس گاؤں سے زیادہ اس لپیٹ میں آ گئے - انڈین ایکسپریس نے یہ لکھا ہے کہ پولیس کھڑی رہی اور لوگ مارے گئے کوئی پروٹیکشن پولیس نے نہیں کیا پولیس کے قبضہ سے لوگ چھین کر قتل کر دیئے گئے جب کی ٹرک میں لوگ لے جائے جا رہے تھے - اسی طرح سے مسلمانوں نے کہیں بھی اپنے کو ڈیفنڈ نہیں کر پایا - صرف مارے گئے اور زخمی ہوئے انڈین ایکسپریس کا لکھنا ہے کہ سو فیصدی مسلمان ہیں اور دوسرا نہ کوئی زخمی ہے اور نہ کوئی مرا ہے - یہ صورت حال وہاں ہوئی ہے اور تیس اپریل کو بہار شریف میں جھگڑا ہوتا ہے دوسری تاریخ کو دیہاتوں میں پھیلتا ہے - پہلے سے وہاں ٹینشن کا علاقہ ہے قبرستان کے مسئلہ میں بار بار وہاں ٹکراؤ ہوتا رہتا ہے اس سب کے باوجود انتظامات وہاں پورے علاقہ میں دیہاتوں میں پہلے سے نہیں کئے گئے ایک ہی گاؤں میں ۱۳ آدمی ذبح کر دیئے گئے - اسی طرح سے دس گاؤں میں اب صرف نالندہ میں نہیں بلکہ

دوں گا - پھر جب نکالنے دیا تو محلے
دن کے اندر لئے - کوئی انتظام ان
آبادیوں کے اندر نہیں کیا اس قی -
ایم - کو مہینوں تک بدلا نہیں گیا
سسپینڈ نہیں کیا وہ مہینوں مرادآباد
میں چھاتیوں پر مونگ دلتا رہا
اگر آپ افسران سے ٹھیک کام کروانا
چاہتے ہیں تو جہاں وہ ڈیوٹی ٹھیک
دیں وہاں انہیں انعام دینا چاہئے
الہ آباد کے سب انسپکٹر کی طرح
دوسری جگہ تبادلہ نہیں ہونا چاہئے -
اور جہاں وہ غلط کام کریں ان کو پہلے
سسپینڈ کیجئے اگر وہ کنٹرول نہیں
کر سکتے اس کی آپ تحقیق کیجئے
اگر ان کی شرکت ہے تو سزا دیجئے
اور اگر شرکت نہیں ہے اور اگر انہوں
نے کوشش کیا اور کنٹرول نہیں کر
سکے ، ٹھیک ہے اگر آپ کو اطمینان
ہو جائے تو ان کو بحال کر دیجئے
لیکن لوگ ہزاروں مر جائیں آبادیاں
تباہ ہو جائیں جائیدادیں لٹ جائیں
برباد ہو جائیں اور افسران کا کسی
طریقہ سے بال بھی بانکا نہ ہو وہ
اپنی جگہ بیٹھے رہیں یہ پالیسی
کبھی بھی ملک میں امن نہیں
لا سکتی - سرکاری افسروں پر امن
قائم کرنے کی ذمہ داری ہے ، وہ نہیں
کر سکتے تو ان کو گھبرانا چاہئے ،
ان کو تکلیف پہنچنی چاہئے ، ان
کو محسوس ہو کہ اگر ہم نے قتل
ہونے دیا ، اگر ہم نے اس کی اطلاع

[شری اسعد مدنی]

الہ آباد میں ایک سب انسپکٹر
پولیس نے ایک ایسے مجرم کو جس
نے رات میں ایک مسجد میں سوور
کی ٹانگ لٹکا دی تھی اور اس کی
وجہ سے اشتعال پھیل رہا تھا اس
کی انکوائری کی اور نکالا اس میں
پی - اے - سی - کے لوگوں کو بھی
پکڑوایا جس نے وہ ٹانگا تھا اس نے
اقرار کیا کہ مجھے مار کر پی - اے -
سی - کے آدمیوں نے نکلوایا لیکن
اس پی - اے - سی - نے آدمی کو
نہیں پکڑا گیا جس نے یہ کیا اس
کو یہ کیا کہ دن کے دن اس سب
انسپکٹر کو الہ آباد سے دوسری جگہ
بدل دیا جو افسران فساد کو بڑھاتے
ہیں ان کو سزا دینے کے بجائے
سسپینڈ کرنے کے بجائے جو ڈیوٹی
عائد کرتے ہیں ان کو سسپینڈ کیا
گیا اور ان کو اس کی سزا دی گئی
ہے کہ تم نے فساد بڑھنے کیوں نہیں
دیا اور اس طرح سے مجرموں کو
نہیں پکڑا - تو یہ سرکاری فساد ختم
کیسے کرو گے - ہمارے مراد آباد کا
ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ خود آر - ایس -
ایس - سے ملتا ہے پرتاپ گڑھ میں
اس نے کہا آر - ایس - ایس - سے کہ
تم خوامخواہ دوڑ رہے ہو یہ کام تو
ہم کر رہے ہیں کوئی ضرورت نہیں
تمہاری - اس ڈی - ایم - نے اور تھی
کے جاوس کو کہا کہ نہیں نکلنے

اوپر نہیں پہنچائی تو کیا ہو سکتا ہے - سینٹرل گورنمنٹ کو مراد آباد میں مس گائڈ کیا گیا - اس کے باوجود کوئی ایکشن نہیں لیا گیا - جہاں یہ صورت حال ہو وہاں ان افسروں سے امن قائم ہو گا ؟ یہ کبھی نہیں ہو سکتا - میں اس لئے بہت حق میں نہیں ہوں جوڈیشیل انکوائری کے - غریب مسلمان قوم جوڈیشیل انکوائری کا خرچہ برداشت نہیں کر سکتی - لاکھوں روپیہ چاہئیے - پوری سرکاری مشینری چلے گی ایک طرف اس کا مقابلہ یہ غریب قوم کہاں سے کرے گی کہاں سے گواہوں کو مہیا کرے گی ؟ کیسے بتائے گی کہ کون مجرم تھا اور کس نے دیکھا ہے - جو بے گناہ ہیں ان کو مجرم بنا کر پولیس جیل میں ڈال دے گی - جوڈیشیل انکوائری نہیں ہونی تو اہمیت نہیں مانی جاتی اس پر اگر آپ نے ریٹائرڈ آدمی بٹھا دیا تو اس کا تو بھلا ہی بھلا - چار چار سال تک وہ چلائے گا اس کو کوٹھی ملے گی اس کو کار ملے گی ٹی - اے - ڈی - اے - ملے گا اس کا تو سونا ہو گیا - اس لئے یہ توقع کرنا کہ یہ کامیاب ہو گا یہ مناسب نہیں ہے بہر حال گورنمنٹ اگر پکڑنا چاہے تو کس کی ڈیوٹی میں خون ہوا بمباری ہوئی جس کی ڈیوٹی میں بازار لگے پانچ منٹ کے اندر اس کو پکڑا جا سکتا ہے یہ فیصلہ کی بات ہے آپ فیصلہ کریں مجرموں کو پکڑنے کا - آپ فیصلہ کریں سرکاری ملازموں کے جرم کرنے پر ان کو پنشن کرنے کا آپ سسپینڈ تو کر ہی سکتے ہیں چاہے وہ تین سال تک باہر بحال کر چھوٹ جائے لیکن آئندہ وہ نہیں کرے گا - جوڈیشیل انکوائری مسلمانوں کے بس کی نہیں ہے اس سے کچھ ثابت ہونا بہت مشکل ہے اگر آپ کی سی - آئی - ڈی - ایکشن نہیں لیتی تو آپ کو اس پر ایکشن لینا چاہئیے تمہاری ڈیوٹی تھی جہاں اتنا بڑا کانڈ ہو گیا ہتھیار استعمال ہوئے بم استعمال ہوئے آگ لگی تم کہاں تھے تم نے کیوں نہیں پکڑا آپ ان کو سسپینڈ کیجئے -

†[श्री असद मदनी : नायब सदर साहब बिहार के फसाद के सिलसिले में कुछ चीजें मालूम करना चाहते हैं और बहुत तकलीफ का इजहार जरूरी समझता हूं। ये फसाद जो बिहार शरीफ में जहां पिछले कई वर्षों में बराबर फसाद हो चुका है और करीब डेढ़ साल या उससे भी ज्यादा से वहां कब्रिस्तान की जमीन पर शदीद तनाव था और वहां कुछ लोग जो आबाद हैं वो उस पर जबरदस्ती कब्जा करना चाहते हैं। कभी उसके दरख्तों में झंडे लगा देते हैं कभी उन्होंने मूर्ती रखी है। कभी अपनी फसल काटकर के वहां खलिहान लगाने की कोशिश करते हैं उससे वहां शदीद किस्म का हंगामा और तनाव की सूरत चली आती है यही इस वक्त भी किया है। यही इस वक्त भी किया है और उसके नतीजे में वह

t[ ] Devanagari translitration.

[श्री असद मदनी]

से हंगामा शुरू हुआ लेकिन जहां पचास या उससे ज्यादा लोग मारे गये हैं अब तक वहां 47 को तसलीम कर रहे हैं वैसे प्राइवेट इतल्ला उसको बहुत ज्यादा है। टाइम्स आफ इंडिया का कहना है कि उसके दो दिन बाद बीस गांवों से ज्यादा इस लपेट में आ गये। इंडियन एक्सप्रेस ने यह लिखा है कि पुलिस खड़ी रही और लोग मारे गये कोई प्रोटेक्शन पुलिस ने नहीं किया पुलिस के कब्जे से लोग छीन कर कत्ल कर दिये गये जबकि ट्रक में लोग ले जाये जा रहे थे। इसी तरह से मुसलमानों ने कहीं भी अपने को डिफेंड नहीं कराया। सिर्फ मारे गये और जख्मी हुए इंडियन एक्सप्रेस का लिखना है कि सौ फीसदी मुसलमान हैं और दूसरा न कोई जख्मी है और न कोई मरा है यह सूरते हाल वहां हुई है और 30 अप्रैल को बिहार शरीफ में झगड़ा होता है दूसरी तारीख को देहातों में फैलता है पहले से वहां टैंशन का इलाका है कब्रिस्तान के मसले ने बार बार वहां टकराव होता रहा है इस सबके बावजूद इंतजामात वहां पूरे इलाके में देहातों में पहले से नहीं किये गये एक ही गांव में 13 आदमी जिबा कर दिये गये। इसी तरह से दस गांवों में अब सिर्फ नालंदा में ही नहीं बल्कि नवादा जिले में असर पड़ा है इस तरीके से काफी लोग मुतासिर हैं और वहां मरने वालों की काफी तादाद है और नुकसानात हुए हैं इसके अलावा वहां अफसरान ने जो उनको ऐक्शन लेना चाहिये था जो इंतजामात करने चाहिये थे वह नहीं किये नालंदा जिले के कलक्टर पहले दिन से कन्ट्रोल कर रहे हैं। कहते हैं सिचुएशन अंडर कन्ट्रोल है और बराबर देहात में भी आग फैलती जा रही है। लोगों की तादाद भी बढ़ती जा रही है। नुकसानात भी बराबर बढ़ते गए फिर भी व हमेशा कहते रहे कि सिचुएशन अंडर कंट्रोल है। इंतजामात भी नहीं करते और एलान करते हैं कि अंडर कन्ट्रोल है। सिचुएशन और फिर जो कुछ नुकसान हो रहा है उसकी कोई जिम्मेदारी भी तो चाहिये कि कुछ न कुछ इंतजामात होने चाहिये। इसके बारे में कुछ सलाह देनी चाहिए मेरी समझ में नहीं आता पब्लिक के लोग चाहे किसी वजह से भी मारे जायें और हुकूमत अपने अफसरान को ऐसी जिम्मेदारी की सूरत में भी कोई सजा न दे उनको ससपैंड न करे उनके अजेंशमल को इकवारी किए बगैर कोई ससपैंड हो जाये यह सूरतेहाल बहुत अफसोसनाक है। मुझे अफसोस है इस चीज का कि जब हमारे सूबे यू० पी० में इसका उल्टा हुआ। इलाहाबाद में एक सब इंसपेक्टर पुलिस ने एक ऐसे मुजरिम को जिसने रात में एक मस्जिद में सूअर को टांग लटका दी थी और उसकी वजह से इश्तआल फैल रहा था उसकी इन्क्वायरी की और निकाला उसमें पी ए सी के लोगों को भी पकड़वाया जिसने वह टांगा था उसने इकरार किया कि मुझे मारकर पी ए सी के आदमियों ने निकलवाया लेकिन इस पी ए सी के आदमी को नहीं पकड़ा गया जिसने यह किया उसको यह किया कि दिन के दिन उस सब इंसपेक्टर को इलाहाबाद से दूसरी जगह बदल दिया जो अफसरान फसाद को बढ़ाते हैं उनको सजा देने के बजाय ससपैंड करने के बजाय जो ड्यूटी अदा करते हैं उनको ससपैंड किया गया और उनको इसकी सजा दी गई कि तुमने फसाद बढ़ाने क्यों नहीं दिया और इस तरह से मुजरिमों को नहीं पकड़ा तो यह सरकारी फसाद खत्म कैसे करेंगे। हमारे मुरादाबाद का डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट खुद आर एस एस से मिलता है प्रतापगढ़ में उसने कहा आर एस एस से कि तुम खामखाह दौड़ रहे हो ये काम तो हम कर रहे हैं कोई जरूरत नहीं तुम्हारी। उस डी एम ने उस लाश के जालूस को कहा कि नहीं निकलने दूंगा। फिर जब निकालने दिया तो मोहल्ले

दिन के अंदर लुटे । कोई इंतजाम इन आबादियों के अंदर नहीं किया इसी डी० एम० को महीनों तक बदला नहीं गया । सस्पैंड नहीं किया गया और वो महीनों मुरादाबाद में छातियों पर मूग दलता रहा अगर आप अफसरान से ठीक काम करवाना चाहते हैं तो जहां वो ड्यूटी ठीक दें वहां उन्हें इनाम देना चाहिये इलाहाबाद के सब इंसपेक्टर की तरह दूसरी जगह तबादला नहीं होना चाहिये । और जहां वो गलत काम करे उनको पहले ससपैंड कीजिये अगर वो कंट्रोल नहीं कर सकते उनकी आप तहकीकात कीजिये और उनकी शिरकत है तो सजा दीजिये और अगर शिरकत नहीं है तो और अगर उन्होंने कोशिश किया और कंट्रोल नहीं कर सके तो ठीक है अगर आपको इतमिनान हो जाये तो आप उनको बहाल कर दीजिये लोग हजारों मर जायें । आबादियां तबाह हो जायें जायदादें लूट जायें बरबाद हो जाये और अफसरान का किसी तरीके से बाल भी बांका नहीं हो वो अपनी जगह बैठे रहें ये पौलिसी कभी भी मुल्क में अम्न नहीं ला सकती । सरकारी अफसरों पर अमन कायम करने की जिम्मेदारी है वो नहीं कर सकते तो उनको घटाना चाहिये । उनको तकलीफ पहुचनी चाहिये उनको महसूस हो कि अगर हमने कत्ल होन दिया अगर हमने इसकी इतलाह ऊपर नहीं पहुंचाई तो क्या हो सकता है । सैन्ट्रल गवर्नमेंट को मुरादाबाद मिसगाइड किया गया इसके बावजूद कोई एक्शन नहीं लिया गया । जहां ये सूरतेहाल हो वहां उन अफसरों से अमन कायम होगा ये कभी नहीं हो सकता । मैं इसलिये बहुत हक में नहीं जूडिशियल इन्क्वारी के । गरीब मुसलमान कौम जूडिशियल इन्क्वारी का खर्चा बर्दास्त नहीं कर सकती । लाखों रुपया चाहिये । पूरी सरकारी मशीनरी चलेगी एक तरफ उसका मुकाबला ये गरीब कौम कहां से करेगी कहां से गवाहों को मुहैय्या करेगी कैसे बतायेगी कि कौन मुजरिम था और किसने देखा है । जो बेगुनाह हैं उनको मुजरिम बना कर पुलिस जेल में डाल देगी । जूडिशियल इन्क्वारी नहीं होती तो अहमियत नहीं मानो उस पर अगर आपने रिटायर्ड आदमी बिठा दिया तो इसका तो भला ही भला । चार साल तक वो चलायेगा उसको कोठी मिलेगी उसको कार मिलेगी टी ए डी ए मिलेगा उसका तो सोना हो गया । इसलिये ये तवक्को करना कि यह कामयाब होगा यह मुनासिब नहीं है बहरहाल गवर्नमेंट अगर पकडना चाहे तो किसकी ड्यूटी में खून हुआ बमबारी हुई जिसकी ड्यूटी में बाजार लुटे पांच मिनट के अंदर उसको पकड़ा जा सकता है ये फैसले की बात है आप फैसला करे मुजरिमों को पकडने का । आप फैसला करे सरकारी मुलाजिमों के जुर्म करने पर उनको पनिश करने का आप ससपैंड तो कर ही सकते हैं चाहे वह तीन साल तक पापड़ बेल कर छूट जाये लेकिन आइंदा वह नहीं करेगा । जूडिशियल इन्क्वायरी मुसलमानों के बस की नहीं है उससे कुछ साबित होना बहुत मुश्किल है अगर आपको सी आई डी एक्शन नहीं लेती तो आपको उस पर एक्शन लेना चाहिये तुम्हारी ड्यूटी थी जहां इतना बड़ा कांड हो गया हथियार इस्तेमाल हुए बम इस्तेमाल हुये आग लगी तो कहां थे तुमने क्यों नहीं पकडा आप उनको ससपैंड कीजिये ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) : मकवाणा साहब इनक्वायरी कर सकते हैं ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : चीफ मिनिस्टर को . . .

شری اسعد مدنی : مجھے اپنی

بات کہنے دیجئے ۔

†[**श्री असद मदनी**: मुझे अपनी बात कहने दीजिये ।]

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मैं आप की ही बात कह रहा हूं। ऐसे चीफ मिनिस्टर को बर्खास्त कर देना चाहिए।

شری اسعد مدنی : میں کھڑا ہوں۔ اپنی گورنمنٹ کی پالیسی کو کرٹیسائز کر رہا ہوں میں جو سمجھتا ہوں اسے کہنے دیجئے - آپ اپنی بات کو میرے منہ میں ڈالنے کی کوشش مت کیجئے میں عرض یہ کر رہا تھا کہ اشتعال جرمانہ نہایت ضروری چیز ہے - یہ ہوتا ہے جرم ہونے کے بعد جس نے جرم کیا اس کو ضروری سزا دینی چاہئے - گورنمنٹ کا فرض ہے کہ جرم کو ختم کرنے کے لئے مجرموں کو سزا دلائے اگر گورنمنٹ مجرموں کو سزا نہیں دلاتی تو گورنمنٹ اپنا فرض ادا نہیں کرتی - اس سے جرم بڑھے گا گھٹے گا نہیں گورنمنٹ اس بات کے لئے ذمہ دار ہے - ڈکیتیوں کو روکنے کے لئے ڈاکوؤں کو مارا جاتا ہے اور اس میں کچھ شریف آدمی بھی مارے جاتے ہیں تب وہ برداشت کیا جاتا ہے - اگر آپ کمیونل دنگوں کو ختم کرنا چاہتے ہیں تو آپ کو افسروں کو سزا دینی ہوگی اگر آپ یہ نہیں کرتے تو یہ بند نہیں ہو سکتے اس لئے یہ ضروری ہے فضا بنانے کے لئے - اور رائے عامہ کو بہتر کرنے کے لئے - جو لوگ اپنے فرض کو ادا نہیں کرتے ان کے خلاف کچھ نہیں کرینگے تو لوگ تو مریں گے ، گھر لٹینگے جلیں گے ، بربادیاں ہونگی ، عورتیں بیوہ ہونگی ، بچے یتیم ہونگے لیکن کم سے کم جن لوگوں نے رائٹس کو روکا نہیں فسادیوں کے ساتھ کچھ نہیں کیا ان سے کچھ مال ہی جرمانے میں لے لیجئے - تاکہ آئندہ لوگ کھڑے ہوں اور فسادات نہ ہونے پائے ہیں اور فسادوں کے مقابلہ میں پبلک کھڑی ہونے پر مجبور ہو جائے - اس کے لئے پیونٹو ٹیکس بہت ضروری ہے اور جو لوگ اس کی مخالفت کرتے ہیں حقیقت میں (وقت پورا ہونے کی گھنٹی) میں دو ایک باتیں کہکر اپنی بات ختم کروں گا - اس لئے اس کو کرنا چاہئے - ہاں ہر طریقہ سے جو مظلوم ہیں ان کو اس سے بچنا دینا چاہئے - لیکن خطرہ یہ ہے کہ اس پیونٹیو ٹیکس کی بات پر بھی پورا کی طرح سے عمل نہیں ہوگا - اگر ایسا ہوا تو یہ نہایت بدقسمتی کی بات ہوگی اور لوگوں کا اس پر سے اعتبار اٹھ جائے گا - اس لئے دیہات کے ان علاقوں میں جہاں قتل عام ہوئے ہیں اس کو لاگو کرنا چاہئے - تاکہ یہ فسادات آئندہ نہ ہو سکیں وہ قبرستان نہایت خوبصورت ہے لیکن ریفارمس کی وجہ سے اور جو پنچایتی راج ہوا ہے سب جگہ اور جس طرح کے مختلف قوانین لاگو ہوئے ہیں اور جو اختیار

میں ایک بات اور عرض کرنا چاہتا ہوں چیف منسٹر صاحب کے بارے میں کہا گیا ہے ٹھیک ہے یہ میرے نزدیک ایک پولیٹیکل مسئلہ بن جاتا ہے جو ہمارے جگن ناتھ مشرا صاحب ہیں یا دنگے ان کے یہاں بدقسمتی سے ہوئے میں کل وہاں جا رہا ہوں دیکھوں گا - لیکن میری رائے ہے کہ انہوں نے معاملات کو ٹھیک کرنے میں بڑی محنت سے کام کیا ہے - یہ جو صورت حال ہے اس میں ان کی کسی طرح سے غفلت نہیں ہے اور وہ آئندہ بھی اس کو ٹھیک کرنے کے لئے پوری محنت سے کوشش کریںگے - یہ مجھے پوری امید ہے اور میں اندرا جی کو مبارکباد دینا چاہتا ہوں کہ انہوں نے ایسے موقعہ پر جب کہ ان کا باہر جانے کا پروگرام بنا ہوا تھا لوگوں سے ملاقات کے لئے چند منٹ اُن کے پاس نہیں تھے تو انہوں نے وقت نکال کر وہاں کے لئے سفر کیا اور وہاں جا کر ہدایات دیں اور پوری مشینری کو لگا دیا اور اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ اندرا جی کے جانے کے دو سے ہوم منسٹر صاحب اس بات کو کہتے ہیں کہ کوئی حادثہ وہاں نہیں ہوا بہر حال اس وقت پوری مستعدی اور توجہ کی ضرورت ہے اور ہماری پالیسی میں جو کمزوریاں ہیں ان کو ہمیں ٹھیک کرنا چاہئے اور میں ان کے تحت حاصل ہوئے ہیں ان کے مانحت جس طرح سے چاہتے ہیں لوگ زمینوں پر قبضہ کر لیتے ہیں اور اس طرح سے قبرستانوں کو ختم کیا جا رہا ہے - اس کی وجہ سے ٹینشن بڑھ رہی ہے - گورنمنٹ کو اس پالیسی کے سبھی پہلوؤں کو دیکھ کر ملک کو بچانے کے لئے ضروری ہدایات دینی چاہئیں اور ان پر پورے طریقہ سے عمل کرانا چاہئے - قبرستان میں ہندو مندر نہیں بنا بلکہ مورتی رکھی گئی ہے قبرستان کے اندر لے جاکر اس پر قبضہ کرنے کے لئے - اس صورت حال کو گورنمنٹ کو ٹھیک کرنا چاہئے - اسی طرح سے اسپیشل کورٹ کی بات ہے ان کو ہونا چاہئے تاکہ فیصلہ جلد از جلد ہوں اور اسی طریقہ سے معاوضہ دینے کی بات ہے - معاوضہ زیادہ دینا چاہئے تاکہ محسوس ہو - ویسے آپ کچھ بھی دے سکتے ہیں - لیکن جس کی زندگی ختم ہو گئی جس کا خاندان برباد ہو گیا آپ کو اس کے لئے کیا معاوضہ دینا چاہئے - ریل ایکسیڈینٹ میں مرنے والوں کو جس طرح سے معاوضہ دیا جاتا ہے اس کے مقابلہ یا جو بے قصور مارے جاتے ہیں ان کو زیادہ معاوضہ ملنا چاہئے ان کے لئے پانچ یا سات ہزار کچھ بھی نہیں ہے - اور اس میں ہندو مسلمان کا کوئی سوال نہیں ہے سب کو یہ ملنا چاہئے -

کوشش کریں گی اور اگر کسی وقت وہ وعدہ پورا نہیں ہوتا تو ہم جانتے ہیں کہ ہم کو کیا کرنا ہے اور اپنی پارٹی کے خلاف بھی ہم تحریک چلانے کے لئے تیار ہیں - لیکن میں کہنا چاہتا ہوں کہ مایا تیاگی جیسی ایک عورت کے لئے اور ایک دو اور واقعوں کے لئے چرن سنگھ جی نے اتنا بڑا آندولن چلایا آخر بہار کے لوگوں نے کیا قصور کیا ہے آج آپ اپوزیشن میں ہیں ہم بھی کبھی اپوزیشن میں تھے - آج آپ جو چاہیں ہمارے اوپر تہمت لگا دیں - آج تو آپ کو چاہئے کہ بہار کے واقعوں کو لے کر آپ وہاں کے جیل خانوں کو بھر دیں - آپ نکلئے میدان میں اور آندولن چلایئے اور جیل چلئے - مایا تیاگی کے لئے آپ کو اتنی ہمدردی تھی لیکن چھ دن کا بچہ جو مارا گیا ہے اس کے لئے آپ کے پاس کوئی ہمدردی نہیں ہے - میں سمجھتا ہوں کہ ہر اس طرح کے واقعہ کے لئے تحریک چلائی جا سکتی ہے اور چلائی جانی چاہئے اور میں کہنا چاہتا ہوں کہ باہر کی جو بات تھی اس کا تذکرہ یہاں نہیں کرنا چاہئے -

†[श्री असद मदनी : मैं खड़ा हूं अपनी गवर्नमेंट की पालिसी को क्रिटिसाइज कर रहा हूं मैं जो समझता हूं उसे कहने दीजिए आप अपनी बात को मेरे मुंह में डालने की कोशिश मत कीजिए ।

†[ ] Devanagari translitration.

[شری اسعد مدنی]

امید کرتا ہوں کہ یہ ٹھیک کی جائیلگی -

یہاں ملک و ملت کی تحریک کا نام لیا گیا تفصیل کا موقعہ نہیں ہے لیکن میں بتانا چاہتا ہوں کہ ہمارے مہاراجی بھائی علی گڑھ میں دنگوں کے کتنے دنوں کے بعد وہاں گئے تھے اور جا کر انسپیکشن بنگلوں میں ٹھہر گئے تھے اور کسی جگہ جاکر انہوں نے دیکھا نہیں - کہیں جانے کی زحمت انہوں نے گوارہ نہیں کی اور جو لوگ ان سے ملنے گئے جنتا پارٹی کے بھی ، اس میں انہوں نے ہندوؤں سے الگ ملاقات کی اور مسلمانوں سے الگ ملاقات کی اور اس طرح سے جنتا پارٹی کے ورکرس نے بھی ایک ذہنیت پیدا کی تو ان کے ذہن میں کیسی کمیونل بات ہے اور کس طرح سے وہ ہندو اور مسلمان کی بات سوچتے ہیں یہ اس سے ظاہر ہے جب کہیں کوئی بات ہوتی تھی تو ایک لفظ بھی سننے کے لئے تیار نہیں ہوتے تھے رائٹ وغیرہ کے بارے میں - تو یہ بہت سی تفصیل کی باتیں ہیں - جن کو مجبور ہو کر یہاں کہنا پڑ رہا ہے - لیکن مجھے خوشی ہے کہ ہماری پرائم منسٹر ہمارے معاملات کے بارے میں ہمدردی سے غور کرتی ہیں اور وعدہ کرتی ہیں کہ ان کو پورا کرنے کی

मैं अर्ज ये कर रहा था कि इश्तआल जुर्माना निहायत जरूरी चीज है । यह होता है जुर्म होने के बाद जिसने जुर्म किया उसको जरूरी सजा देनी चाहिए । गवर्नमेंट का फर्ज है कि जुर्म को खत्म करने के लिए मुजरिमों को सजा दिलाये कि अगर गवर्नमेंट मुजरिमों को सजा नहीं दिलाती तो गवर्नमेंट अपना फर्ज अदा नहीं करती । इस से जुर्म बढ़ेगा घटेगा नहीं । गवर्नमेंट इस बात के लिए जिम्मेदार है । डकैतियों को रोकने के लिए डाकुओं को मारा जाता है और उसमें कुछ शरीफ आदमी भी मारे जाते हैं तब वह बर्दाश्त किया जाता है । अगर आप कम्युनल दंगों को खत्म करना चाहते हैं तो आपको अफसरों को सजा देनी होगी अगर आप ये नहीं करते तो ये बंद नहीं हो सकते । इसलिए यह जरूरी है कि फिजा बनाने के लिए और राय आमा को बेहतर करने के लिए । जो लोग अपने फर्ज को अदा नहीं करते उनके खिलाफ कुछ नहीं करेंगे तो लोग तो मरेंगे । घर लुटेंगे, जलेंगे, बरबादियां होंगी । औरतें बेवा होंगी बच्चे यतीम होंगे लेकिन कम से कम जिन लोगों ने रायटस को रोका नहीं फसादियों के साथ कुछ नहीं किया उनसे कुछ माल ही जुर्माने में ले लीजिये । ताकि आइंदा लोग खड़े हों और फसादात न होने पाये हैं और फसादों के मुकाबले में पब्लिक खड़ी होने पर मजबूर हो जाये । इसके लिए पूनिटिव टैक्स बहुत जरूरी है और जो लोग इसकी मुखालफत करते है हकीकत में (**वक्त पूरा होने का घंटी**) मैं दो एक बातें कह कर अपनी बात खत्म करूंगा । इसलिये इसको करना चाहिये । हां हर तरीके से जो मजलूम है उनको इससे बचा देना चाहिए । लेकिन खतरा यह है कि इस पूनिटिव टैक्स की बात पर भी पिपरा की तरह से अमल नहीं होगा । अगर ऐसा हुआ तो निहायत बद-किस्मती की बात होगी और लोगों का इस पर से एतबार उठ जायेगा । इसलिये देहात के उन इलाकों में जहां कत्लेआम हुए है इसको लागू करना चाहिए । ताकि ये फसादात आइंदा न हो सकें । जो कब्रिस्तान निहायत खूबसूरत है लैंड रिफार्मस की वजह से और जो पंचायती राज हुआ है सब जगह और जिस तरह के मुखतलिफ कोआपेन लागू हुए है और जो अख्तियार उनके तहत हासिल हुए है उनके मातहत जिस तरह से चाहते है लोग जमीनों पर कब्जा कर लेते है और इसी तरह से कब्रिस्तानों का खत्म किया जा रहा है इसकी वजह से टेन्शन बढ़ रहा है गवर्नमेंट को इस पालिसी के सभी पहलुओं को देखकर मुल्क को बचाने के लिए जरूर हिदायात देनी चाहियें और उन पर पूरे तरीके से अमल कराना चाहिए। कब्रिस्तान में हिन्दू मंदिर नहीं बना बल्कि मूर्ति रख दी गई है । कब्रिस्तान के अंदर ले जाकर उस पर कब्जा करने के लिए। इस सूरते हाल को गवर्नमेंट को ठीक करना चाहिए। इसी तरह से स्पेशल कोर्ट की बात है उनको होना चाहिए ताकि फैसला जल्द अज जल्द हो और इसी तरीके से मुआवजा देने की बात है । मुआवजा ज्यादा दिया जाना चाहिए ताकि महसूस हो कैसे आप कुछ भी दे सकते है । लेकिन जिसकी जिंदगी खत्म हो गई जिसका खानदान बरबाद हो गया आपको उसके लिए क्या मुआवजा देना चाहिए । रेल एक्सिडेन्ट में मरने वालों को जिस तरह से मुआवजा दिया जाता है या जो बेकसूर मारे जाते है उनको ज्यादा मुआवजा मिलना चाहिए उनके लिए पांच या सात हजार कुछ भी नहीं है । और उस में हिंदू मुसलमान का कोई सवाल नहीं है सबको यह मिलना चाहिए ।

[श्री असद मदनी]

मैं एक बात और अर्ज करना चाहता हूं होम मिनिस्टर साहब के बारे में कहा गया है ठीक है ये मेरे नजदीक थे पोलिटिकल मसला बन जाता है जो हमारे जगन्नाथ मिश्र साहब है या दंगें उनके यहां बद-किस्मती से हुए मैं कल वहां जा रहा हूं देखूंगा लेकिन मेरी राय है कि उन्होंने मामलात को ठीक करने में बड़ी मेहनत से काम किया है। यह जो सूरते हाल है उसमें उनकी किसी तरह से गफलत नहीं है और वो आइंदा भी इसको ठीक करने के लिए पूरी मेहनत से कोशिश करेंगे। ये मुझे पूरी उम्मीद है और मैं इंदिरा जी को मुबारकबाद देना चाहता हूं कि उन्होंने ऐसे मौके को जबकि उनका बाहर जाने का प्रोग्राम बना हुआ था लोगों से मुलाकात के लिए चंद मिनट उनके पास नहीं थे और उन्होंने वक्त निकाल कर वहां के लिए सफर किया और वहां जाकर हिदायात दीं और पूरी मशीनरी को लगा दिया। और उसका नतीजा यह हुआ कि इंदिरा जी के जाने के दिन से होम मिनिस्टर साहब इस बात को कहते हैं कि कोई हादसा वहां नहीं हुआ बहरहाल इस वक्त पूरी मुस्तैदी और तवज्जोह की जरूरत है और हमारी पालिसी में जो कमजोरियां हैं उनको हमें ठीक करना चाहिए और मैं उमीद करता हूं कि ये ठीक की जायेंगी।

जहां मुल्क की मिल्लत को तहरीक का नाम लिया गया तफसील का मौका नहीं लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि हमारे मोरारजी भाई अलीगढ़ में दंगों के कितने दिनों के बाद वहां गये थे और जाकर इन्सपैक्शन बंगलों में ठहर गये थे और किसी जगह जाकर उन्होंने देखा नहीं। कहीं जाने की जहमत उन्होंने गवारा नहीं की और जो उनसे मिलने गये जनता पार्टी के ही उसमें उन्होंने हिन्दुओं से अलग मुलाकात की और मुसलमानों से अलग मुलाकात की और इस तरह से जनता पार्टी के वर्कर्स ने भी एक जहनीयत पैदा की तो उनके जहन में कैसी कम्युनल बात है और किसी तरह से वो हिन्दु और मुसलमान की बात सोचते हैं ये उसमें जाहिर है जब कहीं कोई बात होती थी तो एक लफ्ज भी सुनने के लिये तैयार नहीं होते थे रायट वगैरा के बारे में। तो ये बहुत सी तफसील की बातें हैं। जिनको मजबूर होकर यहां कहना पड़ रहा है लेकिन मुझे खुशी है कि हमारी प्राइम मिनिस्टर हमारे मामलात के बारे में हमदर्दी से गौर करती हैं और वादा करती हैं और उनको पूरा करने की कोशिश करेंगी और अगर किसी वक्त वो वादा पूरा नहीं होगा तो हम जानते हैं कि हमको क्या करना है और अपनी पार्टी के खिलाफ भी हम तहरीक चलाने के लिये तैयार हैं लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि माया त्यागी जैसी एक औरत के लिये और एक दो और वाकों के लिये चरण सिंह जी ने इतना बड़ा आन्दोलन चलाया आखिर बिहार के लोगों ने क्या कसूर किया है आज आप अपोजीशन में हैं हम भी कभी अपोजिशन में थे। आज आप जो चाहे हमारे ऊपर तहोमत लगा दें। आज तो आपको चाहिए कि बिहार के वाकों को लेकर आप वहां के जेल खानों को भर दें आप निकलिये मैदान में और आन्दोलन चलाइये और जेल चलिये। माया त्यागी के लिए आपको इतनी हमदर्दी थी लेकिन 6 दिन का बच्चा जो मारा गया है उसके लिये आपके पास कोई हमदर्दी नहीं है। मैं समझता हूं कि हर इस तरह के वाकीय के लिये तहरीक चलाई जा सकती है और चलाई जानी चाहिए और मैं कहना चाहता हूं कि बाहर की जो बात थी उसका तजकरा यहां नहीं करना चाहिए।]

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : खाली मुसलमानों का ही मसला नहीं है, सारे मुल्क के लिए कहना चाहिए। . . (**व्यवधान**)।

شری اسعد مدنی : اس بات کو چھوڑ دیا جائے آپ کی آپ کے لیڈر کیا کر رہے ہیں - سب کے لئے کیوں نہیں کرتے آپ تو اپوزیشن میں ہیں کچھ کیجئے - "مداخلت"

†[**श्री असद मदनी** : इस बात को छोड़ दिया जाये आपके लीडर क्या कर रहे हैं। सब के लिये क्यों नहीं करते तो आप अपोजिशन में हैं कुछ कीजिए ।]

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : आप धोखा नहीं दे सकते मुसलमानों को . (**व्यवधान**)

شری اسعد مدنی : میں امید کرتا ہوں کہ ان معاملات پر آپ غور کریںگے -

†[**श्री असद मदनी** : मैं उम्मीद करता हूं कि इन मामलात पर आप गौर करेंगे]।

श्री सदाशिव बागाईतकर : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है । मैं पूछना चाहता हूं कि यह कालिंग अटेंशन चल रहा है या जनरल डिबेट हो रही है । हम को तो आप आधा मिनट में कहते हैं बैठ जाओ और सवाल पूछने के लिए कहते हैं और अभी जनाब ने सारी तकरीर कर डाली उन्होंने कौन से सवालात पूछे यह बात बता दीजिए । उनको मियायत चलासी है वह चलायें। (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQI ZAKARIA): I have heard the point of oV^er. . .

मुझे आश्चर्य होता है कि बागाईतकर साहब ऐसा प्वाइंट आफ आर्डर रेज करते हैं । हर कालिंग अटेंशन के ऊपर यही होती है । शहाबुद्दीन साहब ने आपकी तरफ से जो तकरीर की उसका मौलाना असद मदनी की तकरीर से मुकाबला किया जाए तो कोई फर्क नहीं होगा । इसलिए प्वाइंट आफ आर्डर में वक्त जाया करने के बजाय, क्योंकि वक्त ज्यादा हो रहा है और आपकी तरफ से जो कुछ कहना था कह चुके हैं उनको भी हक है अपने प्वाइंट आफ व्यू रखने का, मदनी साहब को सवाल पूछने दिये जाएं मैं चाहता हूं आप अपनी बात को जल्दी खत्म करें ।

شری اسعد مدنی : میں صرف اتنی بات کہتا ہوں اس معاملہ میں جو ... "مداخلت"

†(**श्री असद मदनी** : मैं सिर्फ इतनी बात कहता हूं इस मामले में (**व्यवधान**) ।

श्री राम लखन प्रसाद गुप्त : माथुर साहब को पांच-सात मिनट ही दिये आपने । (**व्यवधान**) ।

श्री अब्दुल रहमान शेख : कांग्रेस वाले आधा-आधा घण्टे तक सवाल पूछते हैं । (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरिया) : शहाबुद्दीन साहब को 25 मिनट दिये । आप गलत कह रहे हैं । आपको इस किस्म की बात नहीं करनी चाहिए (**व्यवधान**) ।

श्री अब्दुल रहमान शेख : माथुर साहब को आपने कितने मिनट दिये । (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकारिया) : मुझे मालूम नहीं ।

(**व्यवधान**)

+ f f Devaivaaari translitration.

श्री सुशील चन्द महंता (हरियाणा) : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर यह है कि कालिंग अटेंशन मोशन में सरकार की तवज्जो एक गम्भीर मसले की तरफ . . .

उपसभाध्यक्ष (डा० रफोक जकरिया) : वही बात आप कह रहे हैं जो बगाईतकर साहब ने कही ।

There is no point of order. I am sorry. Please take your seat. (Interruptions) Please don't record.

(श्री सुशील चन्द महता बोलते रहे) ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफोक जकरिया) : आप अपनी तकरीर खत्म करिए ।

شری اسعد مدنی : ‹‹ مداخلت ››

جس طرح سے سزا دینے کے لئے اسپیشل کورٹ کا معاملہ ہے اور جوڈیشیل انکوائری کا مسئلہ ہے اس معاملہ میں گورنمنٹ کو غور کرنا چاہئے - جو لوگ مجرم ہیں چاہے وہ افسر لوگ ہوں یا پبلک کے لوگ ہوں ان کے خلاف آپ ایکشن کیوں نہیں لیتے - آپ کو ایکشن لینا چاہئے اس پر آپ غور کریں - ‹‹ مداخلت ››

†(**श्री असद मदनी** : "मदाखलत " जिस तरह से सजा देने के लिए सपैशल कोर्ट का मामला है और जूडिशियल इन्क्वायरी का मामला है उस मामले में गवर्नमेंट को गौर करना चाहिए । जो लोग मुजरिम हैं चाहे वे अफसर लोग हों या पब्लिक के लोग हों उनके खिलाफ आप एक्शन क्यों नहीं लेते आपको एक्शन लेना चाहिए इस पर आप गौर करें । (**अन्तबाधा**)]

उपसभाध्यक्ष (डा० रफोक जकरिया) : शाही साहब मेरी समझ में यह डेमोक्रेसी नहीं आती । शहाबुद्दीन साहब ने उस तरफ से कहा कि जगन्नाथ मिश्र की गवर्नमेंट को डिसमिस किया जाए । उनको स्तीफा दे देना चाहिए । अगर मौलाना असद मदनी यह कहते हैं कि नहीं जहां तक चीफ मिनिस्टर का ताल्लुक है उन्होंने बहुत से अच्छे काम किये हैं . . . .

उपसभाध्यक्ष (डा० रफोक जकरिया): मुझे उम्मीद है कि इस सिलसिले में उन्होंने गफ्लत नहीं की होगी । यह एक प्वाइंट आफ व्यू रखा गया और दूसरा यह प्वाइंट आफ व्यू रखा जाता है . . . (**व्यवधान**)

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : दिक्कत यह है कि एक मुंह से दो बातें कैसे कहते हैं । अब कहते हैं गवर्नमेंट की गैर-जिम्मेदारी है, गवर्नमेंट काम नहीं कर रही है, फेल कर रही है फिर तारीफ भी करते हैं । दोनों बातें कैसे करते हैं । इसके मायने यह है कि आप मुसलमानों के हमदर्द नहीं हैं । (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Every Members has got a right to be illogical if he wants to. Freedom of expression includes your right to be illogical. Now Mr. Minister.

شری اسعد مدنی : ذرا ایک منٹ کی اجازت مجھ کو دیجئے -

†[**श्री असद मदनी** : जरा एक मिनट की इजाजत मुझ को दीजिए ।]

उपसभाध्यक्ष (डा० रफोक जकरिया): आप उनका जवाब न दीजिए ।

t[ ] Devanagri Translitration.

†[श्री असद मदनी : मैं अर्ज करूंगा कि मशीनरी में इस तरह का झूल है । पौलिसी ठीक नहीं चल रही है लेकिन मैंने कहा कि इसका मतलब यह ले लिया जाये कि पिछले तमाम कामों में जगन्नाथ मिश्रा पूरी तरह खुल कर कोशिश कर रहे हैं अगर कोई कसूर उनका नजर आयेगा तो जरूर हम खुल कर क्रिटि-साइज करेंगे लेकिन कब्ल इसके कोशिश के बावजूद अगर गड़बड़ हो जाये । (व्यवधान)]

شری اسعد مدنی : میں عرض کروں گا کہ مشینری میں اس طرح کا جھول ہے - پالیسی ٹھیک نہیں چل رہی ہے لیکن میں نے کہا کہ اس کا مطلب یہ لے لیا جئے کہ پچھلے تمام کاموں میں جگن ناتھ مشرا صاحب پوری طرح کھل کر کوشش کر رہے ہیں - اگر کوئی قصور ان کا نظر آئے گا تو ضرور ہم کھل کر کریٹیسائز کریں گے لیکن قبل اس کے کوشش کے باوجود اگر گڑبڑ ہو جائے - « مداخلت »

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Order, please; order, please. Mr. Minister *(Interruptions)* Mr. Shahabuddin, 1 am not going to allow this.

SHRI SYED SHAHABUDDIN: Mr. Vice-Chairman, I want to say one thing. About Jagannath Mishra, what I said was conditional and if he feels ___

SHRI YOGENDRA MAKWANA : The Home Minister has already said that it is a matter under consideration. We will decide it after due consideration. Whether judicial inquiry is to be instituted or a special court is to be set up, will be decided later on.

t[ ] Devanagri Translitration.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Sir, I want one minute.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: Mr. Vice-Chairman, just allow me .>n.e minute. When the calling Attention started, Mr. Deputy Chairman asked me to sit, I did not even go for lunch and I kept sitting. When Mr. Goswami took the Chair, he cut out names and left the Chair. Sir, is it fair? When a word was given by the Chair, he should have aflded by that. Is it fair?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I am sorry, I have no indication. But please try to understand...

SHRI G. C. BHATTACHARYA; You may not have the indication. You can enquire from the Deputy Chairman whether he asked me to wait or not.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I cannot leave the Chair and find out.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: Why should you not listen to me? You are not the Deputy Chairman, but you should listen to me.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Will you please sit down? As it is, you are suffering from high blood pressure.

SHRI G. C. BHATTACHARYA; My blood pressure is under control. We are strong enough to fight your blood pressure. Don't go by these cheap things; this will not do.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Mr. Bhattacharya, you must please understand that every party has been given one speaker. You come in the group of Independents, from which side already Mr. Dinesh Goswami has spoken.

SHRI G. C BHATTACHARYA: Sir, I should have been told at that time, after Mr. Goswami had spoken. Why was I asked to wait?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I have no indication.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: You have no indication, but I am giving you the facts. And is this a subject to be confined to water-tight rules? If you are convinced that this is a sub ject .....

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA). All right, if you say that the Deputy Chairman has given you the assurance. . . .

SHRI G. C. BHATTACHARYA: Yes, you can verify.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I accept your statement and you may speak for "five minutes.

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SITA RAM KESRI): Sir,. . . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I have said that if Mr. Deputy Chairman has told him like that, let him speak. He is making a statement as an hon. Member of the House. There is no reason...

SHRI G. C. BHATTACHARYA: \ kept waiting. He had said, 'You wait for your turn".

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Now please keep quiet. As an hon. Member of the House, I have no reason to disbelieve what he is saying and, therefore, 1 have said that he may speak.

श्री सीताराम केसरी : उपसभाध्यक्ष महोदय, आज चेयरमैन के सम्मुख यह तय हुआ था कि दो बजे तक कालिंग अटेंशन चलेगा । इस लिये मैंने कहा था कि स्पेशल मेंशन नहीं लिये जायें, दो बजे तक चलेगा । बजाय दो घंटे के आपने साढ़े चार घंटे चलाया और देखिये . . . (**व्यवधान**) और सभी दल के लोगों ने . . .

श्री जी० सी० भट्टाचार्य : अगर दो दिन तक चल सकता है तो दो दिन तक चलेगा, रात भर चलेगा . . . (**व्यवधान**) माइनारिटी के लोगों को आप बोलने नहीं देंगे . . . (**व्यवधान**) यह दो दिन तक चलेगा . . . (**व्यवधान**)

श्री सैयद सिब्ते रजी (उत्तर प्रदेश) : दो दिन तक हाउस में यही चलेगा ? . . . (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकारिया) : आप बैठिये ।

SHRI GULAM MOHI-UD-Dir SHAWL (Jammu and Kashmir) We were not told that it was for onlj two hours. If something was decided we do not know anything about it.

SHRI G. C. BHATTACHARYA Everybody will contribute to it. Tht matter is serious.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): We have to be serious also. There are rules, there are procedures. There is the Business Advisory Committee which decides on this. If we are going to defy all that is being done, how are we going to run this House? We have also to consider this seriously. Every time thi« it happening. The Business Advisory Committee, on which all the parties rue' represented, unanimously decides. Even that, if you are not going to adhere to(I am sorry, it is becoming impossible to run. And after all the eye» of the whole country are on us. They expect that we should at leait conduct our proceedings according to certain norms, certain procedures and certain things. Therefore, 1 am sorry. I will allow Mr. Bhattacharya because he tells me" that the Deputy chairman has given him time.

SHRI B. D. KHOBRAGADE. What about me, Sir? You signalled me.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): fn your case, Mr. Khobra-gade, the Deputy Chairman has made a note that you may be given time fer two or three minutes. I shall do that.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Only me minute, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I shall do that. If every ndependent Member is going to claim he same amount of time that the paries do, I think it will be impossible to Junction.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: What is the *ubject? Mass killing is ;oing on. *(.Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Mr. Bhattacharya, please lit down. In that case it is for the Business Advisory Committee to take into consideration the gravity of the situation. It is for the Business Advisory Committee to decide how much time should be allotted. After all, our representatives, our leaders, are there on that Committee. After taking into consideration that a particular time has been given for us, by defying that are we giving a good account of ourselves as far as fKe functioning of this House is concerned"? You will also have to seriously consider lhat. Every time this is happening.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAV7L: We do not dispute that. Had we been toid that only two hours had been allotted for this discussion, they would have curtailed the time of the MemBers. But they were allowed to speak.' And my name was there, and I was shown by the Deputy Chair-man at number six. He has gone and there is a piece of paper. He has written three names on it. My strong objection is that as for the pent-up feelings it is a serious matter. It is not with regard to Biharshar,if only, but,the whole country is involved in it. In such a serious situation we have the right to speak and we should be given time.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: It is a question of the minorities. *(In-terruptions).*

श्री सीता राम केसरी : उपसभाध्यक्ष महोदय, लैट मी स्पीक ।

देखिये, मैं आपसे बताता हूं सभी दलों के लोग यहां उपस्थित थे और सभी दलों के नेताओं ने यह फैसला ले लिया और हाउस में दो घंटे के बजाय साढे चार घंटे . . . (व्यवधान) सुनिये, आप रंज मत होइये, मैं आपके खिलाफ नहीं बोल रहा हूं । मैं सभी माननीय सदस्यों को चाहता हूं कि उनकी बात रहे । उसके कहते हुए जब एक बार फैसला हो जाता है तो मैं आप से यह कहूंगा कि फिर अगर आप समय देंगे तो चार बजकर 19,20 हो रहा है फिर एक दो मिन्ट में खत्म नहीं नहीं करेंगे , 6 बज जायेगा और फिर हमारा हमारा ला एण्ड जस्टिस वाला है तो कहिये कल खत्म कर दीजिये तो हमें कोई एतराज नहीं है । फाइनेंस बिल की बहस बन्द कर दी जाये ताकि ये जवाब दे दें ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIC ZAKARIA): Let me first speak. Theie can be one way out. There is the Finance Bill after this. Then we must agree that we shall finish the Finance Bill by 6 O'clock.

SOME HON. MEMBERS: No, no.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) :You can't have it both ways. *(Interruptions)* You can't have it both ways. You cannot say that this is serious and, therefore, you will not allow... (Interruptions)

mXRl NAGESHWAR PRASAD SHAHI: Let me say... *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): First, Mr. Bhupesh Gupta and then Mr. Sffiahi.

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, my submission is this. I was sitting behind. Mr. Sitaram Kesri got up and reminded you of the Business Advisory Committee and all that. He is entitled to do so. I am not disputing it. But somehow or other, Mr. Sitaram Kesri, the

(Shri Bhupesh Gupta)

Parliamentary' Affairs Minister, be comes active when it comes to the Op position. Plow I was listening to the speech of my hon. Iriend here. He was entitled to speak. He spoke at length. I have no quarrel with him. Piease un derstand. I have nothing against him because he spoke.....

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) :Let me interrupt you. Just a minute. Even when Maulana • Asad Madani was speaking, he sent me reminders twice saying, please curtail the time because we have got the Finance Bill. So I want to make it clear that your impression in regard to him as far as this matter is concerned is not correct.

SHRI BHUPESH GUPTA: Now that you have a secret line of communication it is all right.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARlA):Not a line of communication. I am telling you. . . .

SHRI BHUPESH GUPTA; It is all right. I accept.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Don't suspect everybody excepting yourself.

SHRI BHUPESH GUPTA: You have said it and I have accepted it. Am 1 disputing it? I am not. Naw on this matter naturally there will be feeling. There are opinions...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) :I am suggest'ng, let us finish the Finance Bill by 6 O'Clock.

SHRI BHUPESH GUPTA: You said very rightly that you will aliow some friends to speak. *(Interruptions).*

SHRI SITARAM KESRI: I am not in favour of blocking this discussion. But my request is this: please finish the Finance Bill. *J jet* the Minister reply. I will withdraw my speakers.

SHRI BHUPESH GUPTA: AU I am saying ia,.. *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN *(DR.* RAFIQ ZAKARIA): You must compromise. You can't have it both ways.

SHRI BHUPESH GUPTA: It is ail right. *(Interruptions)*

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : देखिये, उपसभाध्यक्ष जी, कालिंग अटेन्शन के बारे में बिजनेस एडवाइजरी कमेटी फैसला नहीं करती है । कालिंग अटेन्शन का जनरल नियम यह है कि लंच आवर पहले समाप्त होना चाहिए ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकारिया) : यह फैसला था । आप भी मैम्बर हैं, मैं भी हाजिर था ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मेरी बात सुन लें जरा । देखिए कालिंग अटेन्शन का आम नियम है कि एक पार्टी से एक आदमी बोलता है । इंडिपेन्डेन्ट से एक या दो आदमी बोलते हैं ।

उपसभाध्यक्ष : **(डा० रफीक जकरिया)** एक ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : आपने अपना क्षमा कीजियेगा---विदाउट एनी एसपर्शन आपने श्री रामानन्द यादव जो जब बोल चुके थे, उसके बाद भी आपने मदनी साहब को आलाउ किया ।

श्री सीता राम केसरी : शहीबुद्दीन साहब को उस तरफ से ...**(व्यवधान)**

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मैं कह रहा हूं, भाई, इसी तरह से आपने जनता पार्टी के दो सदस्यों को अलाउ किया । तो यह क्षमा कीजियेगा ।

श्री शिव चन्द्र झा : क्यों नियम तोड़ा गया ?

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : आप नियम क्यों तोड़ते हैं । आप नियम तोड़ते

हैं, इसीलिये डिसआर्डर होता है । आप अगर नियम न तोडें , एक-एक पार्टी से सख्ती से एक आदमी बोले और एक आदमी भी अधिक से अधिक पांच मिनट लें, कालिंग अन्टैशन में आधे घंटे का भाषण ...(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकारिया): आप बैठिये । नियम किसी को भी नहीं तोडना चाहिए ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : आप मेरी बात सुन लें । कालिंग अटैन्शन में पांच मिनट से अधिक बोलने का कोई सवाल नहीं है । आप कालिंग अटेन्शन में आधे घंटे का भाषण करायेंगे , उसके बाद सदन को दोषी ठहरायेंगे कि साहब आप क्या चाहते हो, क्या नहीं चाहते । यह अगर आप कन्ट्रोल न करें, तो हम लोगों का क्या दोष है ? इस के लिये हम लोग दोषी नहीं हैं ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकारिया) : अच्छा शाही साहब नियम इधर से या उधर से टूटा हो, आप मेहरबानी करके अपने को नियम के अनुसार इस बहस को या तो अगर कुछ लोगों को चाहते हैं कि मैं इजाजत दे दूं तो तो फिर यह भी फैसला करना होगा कि जो फाइनेंस बिल है, उसको आज खत्म कर देंगे ।

श्री शिव चन्द्र झा : कल होगा ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकारिया): नहीं, यह निर्णय बिजनेस एडवाइजरी कमैटी का है । अगर आप चाहते हैं, देर से बैठें जायेंगे उसके लिये, यह हो सकता है। अगर नहीं चाहते हैं, तो छह बजे तक कर दिया जाये ।

Now I will allow only ten minutes within which this should be completed. I will allow only three minutes to you, three minutes to you and another three minutes to you...

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: My name is there. The point is you pick and choose.....

AN HON. MEMBER: I have also given my name. . . »

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I am sorry, I cannot allow everybody to speak; it is impossible.

Now, the Secretary-General says that you have given the name first and I will call upon you. All right; that is the end of the matter now. Mr. Bhattacharya, please, three minutes for you. And I am going to interrupt you very strongly if you exceed....

SHRI G. C. BHATTACHARYA: You do it if it is in your interests. ..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Never mind, I am sitting in the Chair now. ..

SHRI G. C. BHATTACHARYA: I am straightway putting my questions. So you need not be afraid...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): No, I am not upset if you take time, but I have to regulate the time of the House.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: The statement says that there is a contingent of BSF and CRPF. But what appears in the newspapers and what is known is that the BSF and CRPF contingent which has been sent there is not sufficient to cope with the Biharsharif situation. There is total insecurity in the villages where riots have spread. Now I want to know from the Home Minister whether he will send more BSF and CRPF if necessary and without any waste of time, and hand over the en tire area to the army, because what is happening---------

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): That is all right. He has understood your point. Next question now.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: I would also like to know whether the Home Ministry was taken into confidence sufficiently in time, that is, I want to know when the Home Ministry was informed about the riots and why the Home Ministry took so much time for sending a contingent of BSF and GRPF there and why the Home Ministry in its own judgment did not hand over the entire area to the army beforehand.

Thirdly, when the Prime Minister visited the place, I would like to know why the curfew was relaxed for more than an hour. During that relaxation many lives were lost. I would like to know why it was necessary to relax the curfew. It was not necessary that when the Prime Minister visited the place the curfew should be lifted even for one hour. I would like to know why it was done. Because of that relaxation many lives were lost there.

Fourthly, are you encouraging the secular forces by prosecuting persons like Mr. Farooqi, Editor of Haya, who published only a statement of Mr. Rajeshwara Rao saying that PAC was responsible in Moradabad killings and riots? Even the Home Minister said that PAC was responsible there. In that case, therefore, would they withdraw the case against Mr. Farooqi?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The honourable Member has raised four questions. One is about CRPF and BSF, whether the Central Government will send more forces or not. I can tell the honourable Member that it is on the demand and request of the State Government—if they want more forces and they request us—that we will supply these forces. So far as delay is concerned, as has been mentioned in my previous reply it is only on the request of the State Government that we are sending the forces. When the request was made by the State Government, immediately the. forces were sent to the State Government, .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): He wanted to know'whether there was a time-lag.

SHRI. YOGENDRA MAKWANA: No, there was no time-lag. As soon as they demanded, we sent them.

SHRI G. C. BHATTACHARYA: When did the deimand come? Our information is even after the demand, there was delay.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sometimes these forces are deployed elsewhere also. They are not stationed at a particular place. We have to withdraw them from the place where they. are. deploye;d and then We.have to send them. That naturally takes some time.

Then, why curfew was relaxed? Curfew has to be relaxed because people have their own requirements. So far 'as Farooqi is concerned, I have to enquire into it

श्री भा० दे० खोबरागडे : उपसभापति महोदय, बिहार शरीफ में जो हिंसा, अत्याचार और बलात्कार हो रहा है उस के खिलाफ में अपनी आवाज बुलन्द करना चाहता हूं। जस तरह से वहां पर साम्प्रदायिक घटनाएं हो रही हैं और हिन्दू और मुसलमान भाइयों में जिस तरह से झगड़े हो रहे हैं उस के बारे में हर व्यक्ति को सोचना चाहिए । मैं ने दो भाषण यहां पर सुने।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकारिया): देखिये खोबरागड़े जी, जो सुना है वह सब ने सुना है, आप अपना सवाल पूछिये ।

श्री भा० दे० खोबरागडे : एक शहाबुद्दीन का भाषण सुना और एक असद मदनी साहब का सुना। मैं उस के बारे में यहीं पूछना चाहूंगा कि आज जो इस देश में हो रहा है उस के बारे में कोई इस देश के लोग सोच रहे हैं या नहीं सोच

रहे हैं । मैं यह पूछना चाहता हूं कि यह जो हो रहा है क्यों हो रहा है? बिहार शरीफ में जो हुआ उसके बारे में बहुत सी घटनाएं बहुत से तथ्य इस सदन के सामने आ गए हैं, मैं उस के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता। लेकिन सवाल मैं एक ही पूछना चाहता हूं कि यह क्यों हो रहा है । असद मदनी और हमारे शहबुद्दीन साहब ने कहा कि यह कोई ताड़ी का वजह से नहींहुआ एक बात से हुआ है। कहां से? ग्रेव यार्ड से।

It has been said that the dispute started because of the grave yard. Maybe, I do not know. Mr. Makwana can say this in his reply I want to know from the Home Minister and the Government whether to damage should be done to the country because a dispute between two communities has arisen due to the grave yard?

ग्रेव यार्ड पर झगड़ा हुआ, लेकिन मेरा सवाल है कि क्या हम देश को बचाना चाहते हैं That is the more important question. आज झगड़े चल रहे हैं हिन्दू–मुस्लिम, हिन्दू–सिख , हिन्दू–क्रिश्चियन और जहां से मकवाणा साहब आते हैं अहमदाबाद से वहां हिन्दू और दलितों में झगड़ा चल रहा है। आप देश को खत्म करना चाहते हैं? मैं कहता हूं मैं और मेरे बहुत से दोस्त खत्म होते हैं मुझे एतराज नहीं है मकवाणा साहब, ज्ञानी जैल सिंह खत्म होते हैं कोई एतराज नहीं, मुझे फिक्र है कि इस देश को आप बचाना चाहते हैं या नहीं । हिन्दुओं को मरने दो, सिखों को मरने दो, मुसलमानों को मरने दो, बोद्धों को मरने दो हमें इस देश को बचाना है . . (व्यवधान) इस लिए मैं कहता हूं कि आप क्या करना चाहते हैं?

मैं असद मदनी से सहमत हूं हमें इन्क्वायरी कमीशन नहीं चाहिए। हम ने इनक्वायरी कमीशन देखे हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA >: You have taken five minutes.

श्री भा० दे० खोबरागडे : उस का कोई नतीजा नहीं निकलता है। इंक्वायरी कमीशन महीनों चलते हैं और उन पर हजारों रुपया खर्च होता है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) :Tou have made your point.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Only half-a-minute, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN *(DR.* RAFIQ ZAKARIA): You have made your point. You do not want any inquiry commission.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: I want only to come to this point.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Never mind.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: I will complete it in one minute, Sir.

उस से कोई नतीजा नहीं निकलता है । हम ने भी इंक्वायरी कमीशन देखे हैं । वहां सरकारी खर्च से पुलिस के अफसर आ जाते हैं और कोई नतीजा नहीं निकलता है। बाद में लोग यहीं कहेंगे कि अल्पसंख्याकों पर अत्याचरा होते हैं और इस बात को सब लोग जानते हैं। मैं कल मकवाणा साहब से . . . . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Mr. Khobragaue, I am sorry.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Only one sentence.

THE VICE-CHAIRMAN *(DR.* RAFIQ ZAKARIA): That is all right. You do not want any inquiry commission.

SHRI B. D. KHOBRAGADE. I only want, to ask whether he would send the CBI officers to investigate into the offences and punish the guilty.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Yes, that is all right. Yes, Mr. Shawl.

DR. (SHRIMATI) RAJINDER KAUR (Punjab): STr, my name was there and I should have been calied. I am standing for the first time.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Sir, what about the reply to my questions?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I am sorry. Yes, Mr. Minister.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, the honourable Member has not put any question. H_e has simply made some suggestions.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: Are you going to send any CBI officers to inquire into the offences and punish the guilty?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, there are different suggesstions from different Members. Some say that an inquiry commission should be appointed and some say that a special court should be there and the honourable Member, Mr. KhoBragade, says that a CBI inquiry should be there. Now, Sir,, all these are suggestions an I I have noted down all these suggestions.

श्री राम लखन प्रसाद गुप्त : सिर्फ दो मिनट हम भी बाद में लेंगे। मैं बिहार से ही आ रहा हूं। बिहार शरीफ का इस्पेक्शन कर के हो मैं वहां से आया हूं। मुझे भी थोड़ा सा समय मिलना चाहिए ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I am sorry. Yes, Mr. Shawl.

SHRI: GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: I hope, Sir, that the time just now taken by the other Members will not be counted against me.

Sir, with a lacerated heart and deep sorrow we have to condemn the present holocaust in Biharsharif.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Please ask your question.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: Sir, words are quite inadequate when we see that even after 33 years of independence we have still such riots and murders and loot and arson.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Please ask your question.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: Because, Sir. . . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Because you have got only three minutes.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: It is because of the fact that an indoctrinated[1], civil service and an indoctrinated police service are there and those persons who held shield anti-social elements and who are con-demnable by all sections of society have been inducted into these forces with the result that Muslims are especially unsafe. I wotfl'd like *o submit one thing here and it is this that when the Government means ousiness but if it says one thing and means it, if it is a working Government, then, Sir, it can control the whole situation in hours. The honourable Minister says that they never thought that there would be rioting. As far as their thinking is concerned, it means the ClD people who are there have, not functioned well. I would like to ask him what action he has takeu against those officials who are responsible for this and who are entrusted with this important duty of controlling such matters beforehand so that some preventive action, can be taken.

The second thing is this: When I say that if the Government is strong it can control. 1 can give the illustrious example wh.ch none in the House can deny, of Jammu and Kashmir. In 1978, there was a dispute, about a mosque.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA). Please put your question.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: This is the most important thing.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I am sorry, I have to interrupt you Please ask your questions, tions. If you go to 19(8 and all that, I don't know when it will end.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: I am only submitting that in spite of the fact that there was not a single communal riot, Madam Prime Minister was wrongly briefed and when she went to Katua, she wrongly stated that as far as the minorities there were concerned, they were feeling insecure. On the other hand, we have taken more than sufficient action against those persons, those elements, who had thought that they would be erecting a mosque on the land which was disputed. We did not allow it.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Your three minutes are over. Shrimati Rajinder Kaur *(Interruptions)*

SHRI V. GOPALSAMY: I have also .... *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): How can the House be conducted in this way? Everybody wants to speak. (Interruptions)

SHRI V. GOPALSAMY; My name was there. I am not a person who. . . *(Interruptions)*

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: Now, my. . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): I am sorry. *(Interruptions)* You have exceeded three minutes. You should have, therefore, been precise, you should have asked the question, you should not have elibora*

ted and gone into the his'.oiy and all kinds of things.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: Unfortunately, at the fsg end, we are given a chance.

THE VICE-CHAIRMAN (DR RAFIQ ZAKARIA): I am very sorry. Time i:i allotted according to the party stren-second thing is about compensation. It is not the dacita on whose heads there is a prize of Rs. 10.000 ir Rs. 20,000. I

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: I am only asking the question. As far as the judicial inquiry is concerned, I am not bothered about it, but as far as punitive action is concerned. . . *(x'ime Bell rings)* The second thing is about compensation. It is not the dacoitg on whose heads there is a prize of Rs. 10,000 or Rs. 20,000. I submit, even Rs. 50,000 is inadquate.

THE VICE-CHAIRMAN (DR RAFIQ ZAKARIA): All right. Thank you, thank you.

SHRI GULAM MOHI-UD-DIN SHAWL: As far as the officers ace concerned, they should be immediately transferred, *{interruptions).*

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The hon. Member has put only one question, and that is regarding officers.

THE VICE-CHAIRMAN (DR RAFIQ ZAKARIA): You also shouia be brief. Mr. Minister. (Interruptions)

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I have already said that against those officers who will be found guilty, necessary action will be taken.

DR. (SHRIMATI) RAJINDER ZAKARIA): Yes, Shrimati Rajinder Kaur. Three minuses.

DR. (SHRIMATI) RAJINDER KAUR; Mr. Vice-Chairman, Sir, where there is fuel, there is fire. Communal hatered is there in our country which flares up at times here and at times there. I have not seen a single session when this . communal riot is not discussed.

[Dr. (Shrimati) Rajender Kaur]

But the problem remains the same. The best course is to curtail and control the fuel so that it will not flare up. The Government's attempt to tackle the problem and to compensate the victims of the riot is commendable. But the Government should also see that the victims of the riots should be fully compensated. Will the Minister assure us that he will look into the matter and see that they are fully compensated?, My second point is that during the Aligarh riots, the Minorities Commission gave a recommendation that in the police personnel, all the minority communities should be given due representation. l would like to know from the Minister whether in the riot-affected area there was any police personnel belonging to the minority community or not. (Time *Bell rings).* Anct what action does th$_e$ Government intend to take in future to ensure that due representation is given to minorities in the Police? My third point is, arrests are made but I am yet to see a single person being convicted because of riots. But the Government is aware of the mis-meants and the mischief mongers. Will the Minister see that the National Security Act is used for such distress so that they may not create trouble anywhere? *(Time Bell rings)* Sir, I am not in the habit of taking much time. The Minorities Commission was sent to Aligarh and it. inspired confidence among the minorities there, in the same way, will the hon. Minister see to it that whenever there are such riots, the Minorities Commission is sent there so that they will be able to inspire confidence in the minds of the members of the minority communities?, He should also see that members of the minority communities represented on the Minorities Commission are chosen with the consent of the minorities.

My last point is, I have heard of some National Integration Council. But I am sorry to say that no representative body of the Sikhs has been given representation there Mid no Hindu organisation has been given representation there, I would request the hon. Minister that—religion, sometimes, is the cause of the trouble— every religious organisation should be given due representation in the National Integration Council.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, the hon. lady Member has made suggestions except one question and this is in regard to the question of ie-presentation in the Mino\it)ss Commission. I can assure the hon. Members of this House that the Government is keen to give representation to the minority communities and wherever there is recru.tment, we pass on instructions to the recruiting authorities in regard to this.

So far as the question of arrests under the National Security Act is concerned, we have already instructed all the State Governments that wherever there is communal tension and it is seen that somebody is promoting; it, they should be arrested under the National Security Act. When the National Security Bill was brought before the House, hon. Members have been told that it was meant for this purpose only.

SHRI SUJAN SINGH (Haryana): Sir, on a point of order. Is it in! accord-dance with the policy of Ihe Congress to give representation on communal lines? It seems, the hon. Minister is agreeing to the suggestion.

THE VICE-CHAIR:MAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): This is no point of order. (Interruptions)

MOTION FOR ELECTION TO THE INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH SOCIETY

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE AND RURAL RECONSTRUCTION (MISS KAMLA KUMARI): Sir, I beg to move:

"That in pursuance of rule 4(vii) of the Rules of the Indian Council of Agricultural Research Society,